केंद्रीय गृहमंत्री अमित शाह ने कहा-भारत से हर घुसपैठिये को बाहर निकाला जाएगा - 14

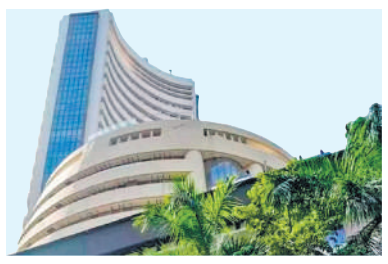

शेयर बाजार में जारी तेजी थमी, सेंसेक्स 400 अंक लुढ़का - 14

जलवायु चुनौतियों से निपटने के लिए बने न्यायसंगत वैश्विक परिवर्ती तंत्र - 15

मंधाना ने संगीतकार पलाश मुच्छल के साथ सगाई की पुष्टि की - 16

6th वार्षिकोत्सव विशेषांक
मेरा शहर-मेरी प्रेरणा

अमृत विचार

बरेली

एक सम्पूर्ण दैनिक अखबार

www.amritvichar.com

2 राज्य | 6 संस्करण
लखनऊ बरेली कानपुर
मुरादाबाद अयोध्या हल्द्वानी

मार्गशीर्ष शुक्ल पक्ष द्वितीया 05:11 उपरांत तृतीया विक्रम संवत 2082

शनिवार, 22 नवंबर 2025, वर्ष 6, अंक 363, पृष्ठ 16 ■ मूल्य 6 रुपये

जी-20 सम्मेलन में शामिल होंगे मोदी द. अफ्रीका पहुंचे

जोहानिसबर्ग। प्रधानमंत्री मोदी दक्षिण अफ्रीका की अध्यक्षता में हो रहे जी-20 नेताओं के शिखर सम्मेलन में हिस्सा लेने के लिए शुक्रवार को जोहानिसबर्ग पहुंचे। गौतेंग स्थित वाटरलूफ वायुसैनिक अड्डे (एएफबी) पर उनका पारंपरिक स्वागत किया गया। इस मौके पर कलाकारों ने सांस्कृतिक गीत और नृत्य पेश किया। जी20 शिखर सम्मेलन में वह 'वसुधैव कुटुंबकम' तथा 'एक पृथ्वी, एक परिवार और एक भविष्य' की भावना के अनुरूप भारत का दृष्टिकोण प्रस्तुत करेंगे। शिखर सम्मेलन से इतर मोदी के जोहानिसबर्ग में मौजूद कुछ नेताओं के साथ द्विपक्षीय बैठकें करने की भी संभावना है।

एसआईआर को चुनौती वाली याचिकाओं पर आयोग को नोटिस

नई दिल्ली, एजेंसी

शीर्ष कोर्ट ने केरल, यूपी और दूसरे राज्यों में मतदाता सूचियों के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) के निर्वाचन आयोग के फैसले को चुनौती देने वाली याचिकाओं पर सुनवाई के लिए शुक्रवार को सहमति जताई। न्यायमूर्ति सूर्यकांत, न्यायमूर्ति एसवीएन भट्टी और न्यायमूर्ति जॉयमाल्या बागची की पीठ ने अलग-अलग राज्यों में भिन्न-भिन्न आधार पर एसआईआर की कवायद को चुनौती देने वाली विभिन्न राजनीतिक नेताओं की सभी नई याचिकाओं पर निर्वाचन आयोग को नोटिस जारी किया।

केरल में एसआईआर को चुनौती देने वाले एक याचिकाकर्ता की ओर से वरिष्ठ

- केरल व दूसरे राज्यों की ओर से दाखिल याचिकाओं पर शीर्ष कोर्ट करेगी सुनवाई

अधिवक्ता कपिल सिब्बल ने कहा कि राज्य में स्थानीय निकाय चुनाव भी होने हैं और इसलिए, इस मामले में तत्काल विचार की आवश्यकता है। पीठ ने निर्देश दिया कि केरल में एसआईआर को चुनौती देने वाली याचिकाओं को 26 नवंबर को सुनवाई के लिए सूचीबद्ध किया जाए और दूसरे राज्यों में इस कवायद को चुनौती देने वाली बाकी याचिकाओं पर दिसंबर के पहले या दूसरे हफ्ते में सुनवाई होगी। न्यायमूर्ति सूर्यकांत ने कहा कि यह अच्छी बात है कि अब निजी व्यक्तियों के बजाय राजनीतिक दल इस प्रक्रिया को चुनौती देने के लिए आगे आ रहे हैं। शीर्ष अदालत पहले से ही पूरे भारत में एसआईआर कराने के निर्वाचन आयोग के फैसले की वैधता को चुनौती देने वाली याचिकाओं पर सुनवाई कर रही है।

एसआईआर ड्यूटी से तंग बीएलओ ने की आत्महत्या

कोडीनार (गुजरात)। गुजरात के गिर सोमनाथ जिले में शुक्रवार को मतदाता सूची के एसआईआर के कार्य में लगे एक स्कूल शिक्षक, जो बीएलओ के रूप में तैनात थे, ने आत्महत्या कर ली। परिजनों का दावा है कि उन्होंने एक 'सुसाइड नोट' छोड़ा है, जिसमें मानसिक तनाव और कार्य के दबाव को आत्महत्या की वजह बताया गया। एक अधिकारी ने बताया कि शिक्षक अरविंद वढेर ने सुबह करीब साढ़े छह बजे कोडीनार तालुका के देवली गांव स्थित अपने घर में फांसी लगा ली। सुसाइड नोट में वढेर ने इस कदम के लिए एसआईआर की ड्यूटी को जिम्मेदार ठहराया। वधेर ने नोट में लिखा, अब मेरे लिए एसआईआर का यह काम करना असंभव है। मैं पिछले कुछ दिनों से थका हुआ और मानसिक रूप से तनावग्रस्त महसूस कर रहा हूं। कृपया हमारे बेटे का ख्याल रखें।

ब्रीफ न्यूज

48 घंटे में 800 साइबर अपराधी गिरफ्तार

नई दिल्ली। दिल्ली पुलिस ने साई-हॉक नामक 48 घंटे के अभियान में 4,400 से अधिक संदिग्धों से पूछताछ की और विभिन्न साइबर अपराध मॉड्यूल से जुड़े 800 से अधिक आरोपियों को गिरफ्तार किया या उन्हें कानूनी नियंत्रण के तहत रखा है। केंद्रीय गृह मंत्रालय के भारतीय साइबर अपराध समन्वय केंद्र (आई4सी) के साथ निकट समन्वय में चलाए गए अभियान के तहत साइबर धोखाधड़ी नेटवर्क, नकदी-निकासी एजेंटों और राष्ट्रीय राजधानी में संचालित अवैध कॉल सेंटरों को लक्षित किया गया। उन्होंने कहा कि अन्य 509 लोगों को साइबर-धोखाधड़ी नेटवर्क के साथ उनके संदिग्ध संबंधों के लिए भारतीय नागरिक सुरक्षा संहिता (बीएनएसएस) के तहत नोटिस जारी किया गया है।

एलओसी से हथियार गोला-बारूद बरामद

श्रीनगर। जम्मू-कश्मीर के कुपवाड़ा जिले में सुरक्षा बलों ने शुक्रवार को एलओसी के पास एक ठिकाने से भारी मात्रा में हथियार और गोला-बारूद बरामद कर एक संभावित आतंकी साजिश को नाकाम कर दिया। बरामद हथियारों में एम-सीरीज की दो असॉल्ट राइफल भी शामिल हैं। पुलिस के एक अधिकारी ने बताया कि खुफिया जानकारी के आधार पर, सुरक्षा बलों ने उत्तरी कश्मीर में कुपवाड़ा जिले के हंदवाड़ा क्षेत्र में एलओसी के पास नीरियान वन क्षेत्र में तलाशी अभियान चलाया।

नए श्रम कानून लागू, फैक्ट्रियों में 12 दुकानों में 10 घंटे करना होगा काम

श्रम मंत्री मनसुख मांडविया ने कहा- श्रम संहिताएं रोजगार को देंगी संगठित रूप

नई दिल्ली, एजेंसी।

सरकार ने शुक्रवार को एक ऐतिहासिक फैसले में सभी चार श्रम संहिताओं को अधिसूचित कर दिया। इस प्रमुख सुधार के जरिये 29 मौजूदा श्रम कानूनों को तर्कसंगत बनाया गया है। इसमें गिग यानी अल्पकालिक अनुबंध पर काम करने वाले कर्मचारियों के लिए सार्वभौमिक सामाजिक सुरक्षा कवरेज, सभी कर्मचारियों के लिए अनिवार्य नियुक्ति पत्र और सभी क्षेत्रों में वैधानिक न्यूनतम मजदूरी तथा समय पर भुगतान जैसे प्रावधान शामिल हैं।

साथ ही लंबे कार्य घंटे, व्यापक निश्चित अवधि के रोजगार और नियोक्ता-अनुकूल छंटनी नियमों की अनुमति भी है, जिसकी श्रमिक संगठनों ने आलोचना की है। ये चार श्रम संहिताएं - वेतन संहिता- 2019, औद्योगिक संबंध संहिता- 2020, सामाजिक सुरक्षा संहिता- 2020 तथा व्यावसायिक सुरक्षा, स्वास्थ्य एवं कार्य दशा संहिता-2020 हैं। इन्हें पांच साल पहले संसद ने पास किया था। चार संहिताओं में 29 श्रम कानून शामिल किए गए हैं। वेतन संहिता में चार, सामाजिक सुरक्षा संहिता में नौ, व्यावसायिक सुरक्षा, स्वास्थ्य एवं कार्य दशा संहिता में 13 और औद्योगिक संबंध संहिता में तीन कानूनों को मिलाया गया है। श्रमिक संगठनों ने छंटनी संबंधी अस्पष्ट प्रावधानों और केंद्र या राज्य सरकारों द्वारा कार्यान्वयन के दौरान संभावित मनमाने व्यवहार को लेकर इन संहिताओं की आलोचना की है। श्रम संहिताओं में बंदी, छंटनी या लागत कटौती के लिए अनिवार्य सरकारी अनुमति की सीमा बढ़ा दी गई है। मौजूदा प्रावधान में 100 या अधिक श्रमिकों वाले प्रतिष्ठानों को सरकारी अनुमति की जरूरत थी। अब यह सीमा 300 श्रमिकों तक बढ़ा दी गई है। फैक्टरियों में काम के घंटे नौ से बढ़ाकर 12 घंटे और दुकानों तथा प्रतिष्ठानों में नौ घंटे से बढ़ाकर 10 घंटे कर दिए गए हैं। देश के 10 मजदूर संगठनों के एक संयुक्त मंच ने गए श्रम सुधारों की निंदा की है और इस कदम को कर्मचारी विरोधी बताते हुए कहा कि यह नियोक्ताओं का समर्थन करता है। श्रम मंत्री मनसुख मांडविया ने कहा कि चारों श्रम संहिताओं को अधिसूचित कर दिया गया है और अब ये देश का कानून हैं, जो श्रम संहिताएं रोजगार को संगठित रूप देंगी।

- सुधार के माध्यम से 29 मौजूदा श्रम कानून बनाए तर्कसंगत
- 300 श्रमिकों की बिना परमिशन की जा सकेगी छंटनी
- केंद्र के ऐतिहासिक फैसले की श्रमिक संगठनों ने की आलोचना

लाभकारी अवसरों की मजबूत नींव का काम करेंगी श्रम संहिता : मोदी

प्रधानमंत्री मोदी ने एक्स पर लिखा कि ये संहिताएं हमारे लोगों, विशेष रूप से नारी शक्ति और युवा शक्ति के लिए सार्वभौमिक सामाजिक सुरक्षा, न्यूनतम और समय पर मजदूरी भुगतान, सुरक्षित कार्यस्थल तथा लाभकारी अवसरों की मजबूत नींव का काम करेंगी। उन्होंने कहा कि यह श्रमिकों के अधिकारों की रक्षा करने वाला तथा भारत की आर्थिक वृद्धि को मजबूत करने वाला भविष्य के लिए तैयार परिवेश बनाएगा। ये सुधार रोजगार सृजन को बढ़ावा देंगे, उत्पादकता को गति देंगे।

ये हैं चार श्रम संहिताएं

● वेतन संहिता- 2019, ● औद्योगिक संबंध संहिता- 2020, ● सामाजिक सुरक्षा संहिता- 2020 ● व्यावसायिक सुरक्षा, स्वास्थ्य एवं कार्य दशा संहिता- 2020

दुबई एयरशो में तेजस क्रैश, विंग कमांडर शहीद

- दो वर्षों में स्वदेशी बहुउद्देशीय लड़ाकू विमान से जुड़ी यह दूसरी दुर्घटना
- दुर्घटना के कारणों का पता लगाने के लिए कोर्ट ऑफ इन्क्वायरी का गठन करेगी आईएएफ

नई दिल्ली/दुबई, एजेंसी

भारतीय वायुसेना (आईएएफ) का एक लड़ाकू विमान तेजस शुक्रवार को दुबई एयरशो के दौरान दुर्घटनाग्रस्त हो गया। इस हादसे में पायलट शहीद हो गया। पिछले दो वर्षों में स्वदेशी बहुउद्देशीय लड़ाकू विमान से जुड़ी यह दूसरी दुर्घटना है। शहीद पायलट की पहचान विंग कमांडर नमांश स्याल (35) के रूप में हुई है। वह हिमाचल प्रदेश के निवासी थे। उनकी पत्नी भी एयरफोर्स में ही कार्यरत हैं।

दुर्घटना के वीडियो फुटेज में विमान को अचानक ऊंचाई से गिरते और फिर आग के एक गोले में बदलते देखा जा सकता है। दुबई वर्ल्ड सेंट्रल स्थित अल मकतूम अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे के ऊपर काला धुआं छा गया, तथा भयभीत दर्शक बड़ी संख्या में बाड़बंद हवाई पट्टी के पीछे एक विशाल स्टैंड क्षेत्र में एकत्र हो गए। भारतीय वायुसेना ने 'एक्स' पर एक बयान में कहा, आईएएफ को इस हादसे में हुए जानमाल के नुकसान पर बहुत दुख है और वह दुख की इस घड़ी में शोक संतप्त परिवार के साथ मजबूती से खड़ी है। दुर्घटना के कारणों का पता लगाने के लिए 'कोर्ट ऑफ इन्क्वायरी' का गठन किया जा रहा है। विमान बनाने वाली सरकारी एयरोस्पेस कंपनी एचएएल ने कहा कि वह साहसी भारतीय पायलट की जान जाने से बहुत दुखी है। सीडीएस ने भी हादसे पर दुख जताया है।

हवाई प्रदर्शन के दौरान दुर्घटनाग्रस्त हुआ तेजस।

1984 में शुरू हुआ था तेजस विमान का निर्माण

तेजस विमान के निर्माण की परियोजना वर्षों के विचार-विमर्श के बाद अंतत: 1984 में शुरू हुई थी और 2011 में विमान को औपचारिक रूप से उड़ान के लिए उपयुक्त घोषित किया गया। तेजस विमान भारतीय वायुसेना का मुख्य आधार बनने के लिए तैयार है। फरवरी 2021 में, रक्षा मंत्रालय ने भारतीय वायुसेना के लिए 83 तेजस एमके-1ए विमानों की खरीद के लिए हिंदुस्तान एयरोनॉटिक्स लिमिटेड के साथ 48,000 करोड़ रुपये का सौदा किया था। नवंबर 2023 में, मंत्रालय ने भारतीय वायुसेना के लिए 97 तेजस विमान के अतिरिक्त बैच की खरीद के लिए प्रारंभिक मंजूरी दी थी।

वीडीओ भर्ती परीक्षा में गड़बड़ी, छह गिरफ्तार

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

अमृत विचार: ग्राम विकास अधिकारी (वीडीओ) भर्ती परीक्षा 2018 में धांधली करने वाले छह आरोपियों को ईओडब्ल्यू ने गुरुवार को गिरफ्तार किया है। इस मामले में कुल 173 लोगों को आरोपी बनाया गया है। इसमें 15 की पहले गिरफ्तारी हो चुकी है। अन्य की तलाश में टीम दबिश दे रही है।

ईओडब्ल्यू के अधिकारी के मुताबिक गिरफ्तार आरोपियों में मलिहाबाद मधवापुर कसमंडी का कुलदीप कुमार, बाराबंकी के सफदरगंज स्थित चैला का सूर्य प्रकाश सिंह, वाराणसी के लोहता के भिठारी का रिंकू यादव, जानकीपुरम मौर्या भट्ठा का अजय कुमार यादव, जालौन कालपी स्थित काशीरामपुर का सर्वेश कुमार और बरेली के बरादरी स्थित सुरेश शर्मा नगर पार्ट-3 का निदेश गंगवार शामिल है। वीडीओके 1953 पद की भर्ती का आयोजन उत्तर प्रदेश अधीनस्थ सेवा चयन आयोग ने वर्ष 2018में किया था। परीक्षा कार्यदायी संस्थान टीसीएस लि. द्वारा कराई जा रही थी। परीक्षा में धांधली की शिकायत मिलने शासन ने ईओडब्ल्यू से जांच कराई गई। धांधली की रिपोर्ट आने के बाद विभूतिखंड थाने में एफआईआर दर्ज कराया गया। मामले की जांच कर रही ईओडब्ल्यू को दी गई। इसके बाद एसआईटी ने वर्ष 2021 में फिर से अपने थाने में मामला दर्ज किया।

- उत्तर प्रदेश अधीनस्थ सेवा चयन आयोग की ओर से वर्ष 2018 में की गई थी भर्ती
- लखनऊ के विभूतिखंड थाने में दर्ज की गई थी एफआईआर ईओडब्ल्यू की टीम ने की कार्रवाई

आयोग के अधिकारी व टीसीएस की मिली भगत से हुई धांधली

जांच में सामने आया कि इस मामले में उप्र अधीनस्थ सेवा चयन आयोग के तत्कालीन अधिकारी, कर्मचारी, कार्यदायी संस्था टीसीएस लि. द्वारा अन्य संस्थाओं, दलालों व अभ्यर्थियों से मिलीभगत कर लाखों रुपये वसूले गए। इसके बदले में भर्ती की लिखित परीक्षा से संबंधित ओएमआर शीट्स में व्यापक स्तर पर कूटरचना कर अपात्र अभ्यर्थियों को उच्चतम अंक दिया गया। इसके कारण पात्र अभ्यर्थियों का चयन नहीं हो सका। धांधली की पुष्टि होने पर परीक्षा को निरस्त कर दी गई थी। इस मामे में कुल 173 लोगों के खिलाफ साक्ष्य मिले। जिसके बाद उनको मामले का आरोपी बनाया गया। इस मामले में ईओडब्ल्यू की टीम ने 15 आरोपियों को पहले ही गिरफ्तार कर लिया है।

रुपया 98 पैसे टूटकर सर्वकालिक निचले स्तर पर

मुंबई। अमेरिकी मुद्रा के मुकाबले शुक्रवार को रुपया धराशायी हो गया जब डॉलर के मुकाबले यह 98 पैसे की जोरदार गिरावट के साथ 89 के स्तर को पार कर सर्वकालिक निचले स्तर 89.61 प्रति डॉलर पर बंद हुआ।

स्थानीय और वैश्विक शेयर बाजारों में बिकवाली के दबाव और व्यापार से जुड़ी अनिश्चितताओं के बीच घरेलू विदेशी मुद्रा विनिमय बाजार में डॉलर की जोरदार मांग के कारण रुपये में बड़ी गिरावट देखने को मिली है। बाजार सूत्रों ने कहा कि एआई, प्रौद्योगिकी शेयरों के आसपास हलचल को लेकर चिंताओं से भी निवेशकों की कारोबारी धारणा प्रभावित हुई। विदेशी निधियों की ताजा धननिकासी से भी निराशा और बढ़ गई। अंतरबैंक विदेशी मुद्रा विनिमय बाजार में रुपया 88.67 पर खुला और दोपहर के भारी उतार-चढ़ाव के भंवर में फंस गया। दिन के कारोबार के दौरान रुपये में 88.59 के उच्चतम और 89.66 के निम्नतम स्तर को छुआ। कारोबार के अंत में, रुपया तीन साल से ज्यादा समय में सबसे बड़ी गिरावट को दर्शाता डॉलर के मुकाबले 98 पैसे गिरकर आखिरकार 89.66 पर बंद हुआ। इससे पहले सबसे बड़ी गिरावट 24 फरवरी, 2022 को देखने को मिली थी जब डॉलर के मुकाबले रुपये में 99 पैसे की गिरावट दर्ज की गई थी।

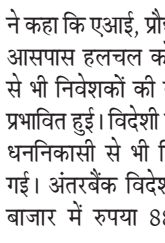

- 89.66 प्रति अमेरिकी डॉलर पर बंद हुआ रुपया

दिल्ली पुलिस बोली, सीएए विरोध का उद्देश्य बांग्लादेश-नेपाल जैसा सत्ता परिवर्तन करना था

नई दिल्ली, एजेंसी

- दिल्ली दंगों में उमर खालिद शरजील इमाम और अन्य की जमानत याचिका का किया विरोध

दिल्ली पुलिस ने फरवरी 2020 के दंगों के मामले में कार्यकर्ताओं उमर खालिद, शरजील इमाम और अन्य की जमानत याचिका का विरोध करते हुए शुक्रवार को शीर्ष कोर्ट से कहा कि राष्ट्रीय राजधानी में सीएए के खिलाफ प्रदर्शन कोई साधारण धरना नहीं था, बल्कि बांग्लादेश, नेपाल की तरह सत्ता परिवर्तन के उद्देश्य से किया गया था।

पुलिस की ओर से पेश अतिरिक्त सॉलिसिटर जनरल एसवी राजू ने पीठ को बताया कि दिल्ली दंगे ताहिर हुसैन, शिफा उर रहमान, मीरान हैदर, इशरत जहां और खालिद सैफी सहित कई आरोपियों की संलिप्तता वाली साजिश का नतीजा थे। राजू ने कहा कि षड्यंत्रकर्ताओं ने हिंसा की योजना बनाई, हालात बिगाड़ने और असम को भारत से अलग करने के लिए चक्का जाम किया, तथा दंगाइयों को संगठित किया। उनके मन में संविधान के प्रति सम्मान नहीं है। मामले पर 24 नवंबर को सुनवाई करेगी।

वक्तव्य सीएम ने विश्व के मुख्य न्यायाधीशों के 26वें अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन में दिया बड़ा संदेश, कहा-दुनिया में जहां अशांति और अराजकता है, वहां सतत विकास बेमानी

भारत की सोच निकाल सकती है वैश्विक चुनौतियों का रास्ता : योगी

राज्य ब्यूरो, लखनऊ

अमृत विचार: मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने कहा कि भारत की सोच वैश्विक चुनौतियों का रास्ता निकाल सकती है। जलवायु परिवर्तन, साइबर सुरक्षा, स्वास्थ्य के संकट, वैश्विक आतंकवाद जैसे मुद्दों पर मुखर होकर यूएन जैसे प्लेटफॉर्म का बेहतर उपयोग करना चाहिए। उन्होंने कहा कि दुनिया में जहां अशांति और अराजकता है, वहां सतत विकास की बात करना बेमानी है। योगी ने वसुधैव कुटुम्बकम् की भावना को भारत की हजारों वर्षों की परंपरा करार दिया।

वे शुक्रवार को सिटी मॉन्टेसरी स्कूल द्वारा आयोजित मुख्य न्यायाधीशों के 26वें अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के उद्घाटन समारोह में बोल रहे थे। मुख्यमंत्री योगी ने कहा कि हमें यूएन के घोषणा को स्मरण करना होगा, जिसमें सतत विकास के लक्ष्यों के बारे में दुनिया के देशों से आह्वान किया गया था। इन 16 लक्ष्यों में शिक्षा सबसे महत्वपूर्ण है। मुख्यमंत्री ने कहा दुनिया में जहां अशांति व अराजकता है, वर्चस्व को लेकर एक-दूसरे की संप्रभुता को हड़पने की होड़ हो, वहां पर एजुकेशन, स्वास्थ्य व सतत विकास की बात बेमानी सी दिखती है। सभी को इस बारे में विचार करना चाहिए कि कैसे इन समस्याओं के समाधान के लिए प्रयास किए जाने की आवश्यकता है। उन्होंने कहा कि जब हम दुनिया के अंदर शिक्षा की बात करते हैं तो 250 करोड़ से अधिक बच्चों के लिए गुणवत्तापरक शिक्षा पर फोकस करते हैं। विचार करना होगा कि बस्ते के बोझ से बच्चे डिप्रेस्ड न हों। उन्होंने कहा कि आज की कोई भी समस्या केवल एक देश की नहीं, बल्कि दुनिया की समस्या होती है और दुनिया को ही मिलकर ही समाधान निकालना पड़ेगा।

मुख्य न्यायाधीशों के अंतर्राष्ट्रीय सम्मेलन के उद्घाटन समारोह में मुख्यमंत्री योगी और अन्य गणमान्य।

वास्तविक समस्या न भूलें

योगी ने कहा कि ये कभी विस्मृत नहीं करना चाहिए कि विश्व की वास्तविक समस्या क्या है। जब हम तह में जाते हैं तो लगता है कि डायलॉग एक-दूसरे के बीच में नहीं है। स्वयं के वर्चस्व को स्थापित करने के लिए डायलॉग को बाधित किया गया। ये कॉन्फ्रेंस डायलॉग का एक माध्यम है। दुनिया के जाजों के माध्यम से यह मानवता व उन लोगों के लिए भी एक उद्घोषणा है, जिन्होंने वर्चस्व स्थापित करने के लिए अराजकता का वातावरण पैदा करने का प्रयास किया।

वंदे मातरम् की प्रस्तुति

कार्यक्रम की शुरुआत गोमती नगर एक्सटेंशन ब्रांच के स्टूडेंट्स ने राष्ट्रगीत वंदे मातरम् की प्रस्तुति से की। छात्र-छात्राओं ने ट्रिनिडाड व टोबैगो, तुवालु, स्वीडन और भारत समेत विभिन्न देशों के प्रतिनिधि के तौर पर अपना पक्ष रखा। क्रोएशिया के पूर्व राष्ट्रपति, लेसोथो के पूर्व प्रधानमंत्री, वर्तमान व पूर्व राष्ट्र प्रमुख, सीएमएस की संस्थापक निदेशक डॉ. भारती गांधी, सिटी मॉन्टेसरी स्कूल के अध्यक्ष डॉ. रोजर किंगडम और अंतरिक्ष यात्री शुभांशु शुक्ला उपस्थित रहे।

एक सम्पूर्ण दैनिक अखबार

अमृत विचार के 6वें स्थापना दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

जिला खाद्य विपणन अधिकारी शाहजहांपुर

जिला खाद्य एवं विपणन विभाग की ओर से किसान भाइयों से अपील

- सरकारी क्रय केंद्रों पर बेचें फसल, एसएसपी का लें लाभ
- निजी आढ़तों की जगह सरकारी केंद्रों पर अपनी फसल बेचें और मिनिमम सपोर्ट प्राइस प्राप्त करें।
- किसान भाई धान अच्छी तरह सुखाकर ही क्रय केंद्रों पर लाएं। क्योंकि 17: से ज्यादा नमी होने पर धान सरकारी खरीद केंद्र पर नहीं खरीदा जा सकता।
- फसल का पैसा किसानो के खाते में सीधे डीबीटी के जरिए भेजा जाता है।
- सरकारी केंद्रों पर अपनी फसल बेचकर खाद्य एवं विपणन विभाग और जिला प्रशासन का सहयोग करें।

धन्यवाद

राकेश मोहन पाडे,
जिला खाद्य विपणन अधिकारी, शाहजहांपुर

एक सम्पूर्ण दैनिक अखबार

अमृत विचार के 6वें स्थापना दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

मुख्य चिकित्सा अधिकारी, शाहजहांपुर

जनस्वास्थ्य सुरक्षा हेतु विशेष अपील

- **संचारी रोगों से बचाव**
  1. घर में पानी न रुकने दें
  2. मच्छरदानी, पूरी बांह के कपड़े पहनें
  3. बुखार/खांसी/सांस फूलने पर तुरंत नजदीकी स्वास्थ्य केंद्र पर चेक करायें।
- **बच्चों का पूर्ण टीकाकरण कराएं**
  मिशन इंद्रधनुष के तहत छूटे बच्चों का टीकाकरण करायें।
- **गर्भवती महिलाओं व नवजात शिशुओं के लिए विशेष सेवाएं**
  सभी टीके सरकारी केंद्रों पर निःशुल्क
- **मातृ एवं शिशु स्वास्थ्य सेवाएं**
  1. प्रसव सेवाएं 24X7 उपलब्ध
  2. प्रसव पूर्व जांच, आयरन-कैल्शियम, टीका निःशुल्क
  3. गर्भवती महिलाओं का समय पर पंजीकरण अनिवार्य
- **आपातकालीन सेवाएं**
  1. एम्बुलेंस सेवा108
  2. प्रसूति हेतु निःशुल्क एम्बुलेंस 102

अपना स्वास्थ्य अपनी जिम्मेदारी

मुख्य चिकित्सा अधिकारी, शाहजहांपुर

न्यूज ब्रीफ

एसपी ने परेड की ली सलामी

शाहजहांपुर, अमृत विचार : एसपी राजेश द्विवेदी ने शुक्रवार को परेड की सलामी ली। उन्होंने अनुशासन एवं पारदर्शिता का निर्देश दिए। उन्होंने पुलिस कर्मचारियों की मैदान में दौड़ लगाई। एसपी ने 112 कंट्रोल रुम, जीडी कार्यालय, हथियारागार, बैरकों आदि का निरीक्षण किया। साप्ताहिक अर्दली रुम के दौरान लंबित प्रकरणों की समीक्षा करते हुए त्वरित निस्तारण करने के निर्देश दिए गए। एसपी ने कर्मचारियों ने की समस्याओं को सुना और समाधान किया। एसपी ने कहा कि जनता का विश्वास ही हमारी सबसे बड़ी पूंजी है। प्रत्येक पुलिस कर्मचारियों को कानून व्यवस्था के साथ-साथ मानवीय संवेदनशीलता का परिचय देना चाहिए। इस अवसर एएसपी, सीओ लाइन, प्रतिसार निरीक्षक आदि स्टाफ मौजूद रहा।

धान और पाइप चोरी में तीन संदिग्ध उठाए

कलान, अमृत विचार : थाना क्षेत्र के ग्राम नौगमा मुबारिपुर निवासी गौरव यादव की दुकान से शरबती धान और पाइप चोरी होने के मामले में पुलिस ने तीन संदिग्ध युवकों को उठाकर पूछताछ शुरू की है। गौरव यादव ने 16 नवंबर को थाने पर तहरीर देकर बताया था कि रात में अज्ञात चोर उनकी दुकान से शरबती धान और पाइप चोरी कर ले गए। गौरव का कहना है कि शुक्रवार को उसे जानकारी मिली कि चोरी गांव के ही कुछ लोगों ने की है। उसने तत्काल इस संबंध में पुलिस को अवगत कराया, जिसके बाद पुलिस ने तीन संदिग्धों को शक के आधार पर हिरासत में लिया है। उनसे पूछताछ की जा रही है। पीड़ित गौरव यादव ने आरोप लगाया है कि संदिग्ध चोरी करने वाले लोग उस पर विभिन्न माध्यमों से दबाव भी बना रहे हैं। पुलिस मामले की जांच कर रही है और चोरी गए सामान के बारे में सुराग जुटाए जा रहे हैं।

आशा वर्कर्स के बयान हुए दर्ज

शाहजहांपुर, अमृत विचार : आशा वर्कर्स ने एसपी कार्यालय में चल रहे प्रकरण में अपने बयान दर्ज कराए। बता दे कि भुगतान लंबित होने पर आशा वकर्स वित मंत्री से मिली थी। सीएमओ को भगतान कराने के निर्देश दिए गए थे। संघ की अध्यक्ष कमलजीत कौर ने बताया कि डीसीपीएम, डीएएम समेत कई अधिकारियों ने आशाओं का भुगतान रोका था। मानसिक शोषण और अभद्र व्यवहार किया था। आर्शा वकर्स मनीषा, कमलेश, द्रोपदी, कुसुम, विजय लक्ष्मी, नीरज, प्रभा रीता, सुशीला आदि के बयान एएसपी कार्यालय में दर्ज किए गए।

गोकशी के आरोपी दस हजार के इनामी के पैर में लगी गोली

एक दर्जन से अधिक मुकदमे में फरार चल रहा था आरोपी, पुलिस ने की तीन राउंड फायरिंग

कार्यालय संवाददाता, शाहजहांपुर

पुलिस मुठभेड़ में घायल इनामी।

अमृत विचार: कटरा पुलिस की गोकशी के वांछित इनामी से मुठभेड़ गुरुवार रात मुठभेड़ हो गई। पैर में गोली लगने से आरोपी घायल हो गया। पुलिस ने घायल को कटरा सीएचसी पर भर्ती कराया। अभियुक्त पर पहले से एक दर्जन से मुकदमे दर्ज है। पुलिस ने तीन राउंड चलाई गोली।

कटरा प्रभारी निरीक्षक जुगुल किशोर को गुरुवार रात सूचना मिली कि नहर की पुलिया के निकट गोकशी के मुकदमे वांछित शानू निवासी कमलनैनपुर थाना कांट अपने एक साथी के खड़ा है। एसपी ने आरोपी पर दस हजार रुपये इनाम घोषित कर रखा है। पुलिस टीम ने घेराबंदी की तो अभियुक्तों ने पुलिस टीम पर फायर किया। पुलिस ने अपनी आत्मरक्षा के लिए फायर किया तो आरोपी शानू के एक पैर में गोली लगने से घायल हो गया जो वही पर गिर गया। जबकि उसका दूसरा साथी मौका पाकर फरार हो गया। पुलिस ने आरोपी के कब्जे से दो तमंचे, कारतूस, दो मोबाइल और 430 रुपये बरामद किए है। अभियुक्त शानू पर पहले से गौकशी के एक दर्जन से अधिक मुकदमे है। पुलिस टीम ने तीन राउंड गोली चलाई है। पुलिस ने घायल अभियुक्त को सीएचसी पर भर्ती कराया। टीम में उप निरीक्षक सुखपाल सिंह, पदम सिंह, मुख्य आरक्षी आरजू सिंह आदि स्टाफ मौजूद रहा।

गोवंश हत्या के दो आरोपियों ने किया सरेंडर

खुटार ,अमृत विचार : खुटार के गांव तुलापुर-बेला के बीच नहर के समीप खेत में गोवंश की हत्या करने के मामले में गैंग के दो आरोपियों ने कोर्ट सरेंडर कर दिया। पुलिस उनकी की तलाश कर रही थी। लेकिन पुलिस के हत्थे चढ़ने से पहले कोर्ट में पहुंचकर सरेंडर कर दिया। मुख्य आरोपी मुजीबुर्रहमान उर्फ नेता के ससुर जनपद पीलीभीत के थाना सेहरामऊ उत्तरी के गांव केसरपुर निवासी आरोपी छोटे ने 11 नवंबर को शाहजहांपुर में कोर्ट में सरेंडर कर दिया था। जबकि गोवंश की हत्या 9 नवंबर को की गई थी। पुलिस ने 11 और 12 नवंबर की मध्य रात को मुख्य आरोपी मुजीबुर्रहमान को मुठभेड़ में पकड़ा था और उसे जेल भेज दिया था। पुलिस के मुताबिक, आरोपी छोटे ने घटना के तीसरे दिन 11 नवंबर को कोर्ट में हाजिर हो गया था। साथ ही उसका दूसरा साथी थाना सेहरामऊ उत्तरी के गांव केसरपुर, हाल, निवासी पूरनपुर के मोहल्ला रजागंज निवासी कमरुल ने जनपद लखीमपुर खीरी के कोर्ट में सरेंडर किया था। आरोपी कमरुल पर पहले से ही गैंगस्टर व अन्य मुकदमें चल रहे थे। इसके अलावा जनपद पीलीभीत के कस्बा पूरनपुर के मोहल्ला रजागंज निवासी जावेद उर्फ करिया, जफर और केसरपुर व हाल पता शेरपुर निवासी भूरे खां अभी भी फरार चल रहे हैं। पुलिस फरार आरोपियों की तलाश कर रही है। जबकि घटना को करीब 12 दिन हो चुके हैं। बावजूद इसके पुलिस के हाथ फरार आरोपी नहीं लग सके है। बता दें कि नौ नवंबर को आरोपियों ने तुलापुर-बेला के बीच नहर के पास एक खेत में गोवंश की हत्या कर दी थी। 10 नवंबर को घटना की जानकारी हिंदू संगठनों और पुलिस को हो पाई थी। 11 और 12 नवंबर की मध्य रात को पुलिस मुठभेड़ में मुख्य आरोपी मुजीबुर्रहमान गिरफ्तार किया गया था। बाद में उसे जेल भेज दिया गया था। जबकि इस घटना से जुड़े आरोपी छोटे और कमरुल ने कोर्ट में सरेंडर कर दिया। पुलिस फरार आरोपी भूरे खां, जावेद उर्फ करिया, जफर की तलाश कर रही है।

बंद फाटक से निकलते समय ट्रेन से टकराई बाइक

तिलहर, अमृत विचार: तिलहर क्षेत्र के डभौरा रेलवे फाटक पर गुरुवार को फाटक बंद होने के बावजूद बाइक लेकर रेलवे ट्रैक पार कर रहा एक युवक डबल डेकर एक्सप्रेस की चपेट में आ गया। ट्रेन की टक्कर इतनी भीषण थी कि मोटरसाइकिल के परखच्चे उड़ गए।

तिलहर-निगोही मार्ग पर ओवरब्रिज निर्माण के कारण डभौरा रेलवे फाटक काफी समय से बंद है। इसके बावजूद स्थानीय लोग आवागमन के लिए रेल पटरियों को पार करते रहते हैं। गुरुवार को भी युवक फाटक बंद होने के बावजूद बाइक लेकर ट्रैक पार कर रहा था कि अचानक शाहजहांपुर की ओर से आ रही डबल डेकर एक्सप्रेस ने उसे टक्कर मार दी। घटना इतनी अचानक हुई कि वहां मौजूद कर्मचारी कुछ भी नहीं कर पाए। रेलवे कर्मियों ने तुरंत जीआरपी को सूचना दी। मौके पर पहुंची पुलिस ने बाइक के टुकड़ों को इकट्ठा किया और आसपास के क्षेत्रों में युवक की खोजबीन शुरू की है। बताया जा रहा है कि कुछ दिन पहले भी डभौरा फाटक के पास एक बाइक मालगाड़ी की चपेट में आ गई थी, जिसमें बाइक के कई हिस्से बिखर गए थे।

दस लाख की अफीम के साथ झारखंड के दो तस्कर पकड़े

संवाददाता, खुटार

- पुलिस को देखकर भाग रहे तस्करों को लालपुर निर्माणाधीन ओवरब्रिज के समीप पकड़ा

पकड़े गए तस्कर। ● अमृत विचार

अमृत विचार: पुलिस ने मुखबिर की सूचना पर गुरुवार रात खुटार-मैलानी रोड पर लालपुर निर्माणाधीन ओवरब्रिज के पास से झारखंड के दो तस्करों को दो किलो अफीम के साथ पकड़ लिया। अफीम की बाजार में कीमत करीब दस लाख रुपये बताई गई है।

खुटार थाना प्रभारी राजेंद्र कुमार रावत ने बताया कि गुरुवार शाम 5:30 बजे पुलिस गश्त कर रही थी। तभी मुखबिर ने सूचना दी कि मैलानी रोड पर लालपुर निर्माणाधीन ओवरब्रिज के पास दो संदिग्ध खड़े है और सवारी का इंतजार कर रहे है। पुलिस को देखकर दोनों आरोपी भाग खड़े हुए। पुलिस ने दोनों को दौड़ाकर पकड़ लिया और पूछताछ की। पुलिस ने प्रांत झारखंड के जनपद चतरा के थाना राजपुर के गांव जोरी निवासी लल्लन कुमार पुत्र राजकुमार वर्मा और गांव दारियातु निवासी विपिन कुमार को पकड़ा है। दोनों अफीम की तस्करी करने जा रहे थे। बाद में बैग की तलाशी ली गई। पुलिस ने दोनों तस्करों के पास से दो किलो अफीम, मोबाइल, पैसे बरामद किए। बाद में पुलिस दोनों को थाने ले आई। साथ ही अधिकारियों को अवगत कराया गया। शुक्रवार को दरोगा प्रांजल सिंह की तरफ से एनडीपीएस एक्ट के तहत रिपोर्ट दर्ज की गई।

झारखंड से बरेली तक फैला तस्करी का जाल

झारखंड से बरेली तक अफीम तस्करी का जाल फैला है। पकड़े गए तस्करों ने बताया दो किलो अफीम बरेली में इंतजार कर रहे साथियों के हाथ में बिक्री कर वापस झारखंड लौट जाते। लेकिन पुलिस ने उन्हें पकड़ लिया। इससे बरेली के तस्करों में खलबली मच गई।

खेत से लौटते समय ट्रैक्टर-ट्रॉली की चपेट में आए किसान की मौत

संवाददाता, पुवायां

- हादसे के बाद चालक ट्रैक्टर समेत फरार, पुलिस कर रही तलाश
- बेटे की मौत की सूचना से वृद्ध मां और बहन हुई बेसुध

अमृत विचार: पुवायां थाना क्षेत्र के गांव नाहिल में शुक्रवार देर शाम सड़क हादसे में किसान मुनीश शेखर त्रिवेदी (53) की मौत हो गई। खेत से पैदल घर लौटते समय उन्हें गन्ना भरी ट्रैक्टर-ट्रॉली ने टक्कर मार दी,जिससे उनकी मौत हो गई। हादसे के बाद चालक मौके से वाहन समेत फरार हो गया।

शाम 6:45 बजे मुनीश शेखर खेत से लौट रहे थे। जैसे ही वह गांव में स्थित धर्मकांटे के पास पहुंचे, तभी तेज रफ्तार ट्रैक्टर-ट्रॉली ने उन्हें चपेट में ले लिया। टक्कर लगते ही वह सड़क पर गिरकर गंभीर रूप से घायल हो गए। आसपास के लोग दौड़कर पहुंचे और परिजनों की मदद से उन्हें तत्काल सीएचसी पुवायां ले जाया गया, जहां डॉक्टरों ने परीक्षण के बाद उन्हें मृत घोषित कर दिया। मृतक मुनीश शेखर अविवाहित थे मां राधेश्री एवं भाई आनंद शेखर त्रिवेदी के साथ रहते थे। परिवार की आर्थिक जिम्मेदारी भी मुख्य रूप से उन्हीं पर थी। हादसे की खबर सुनकर बहन बबिता देवी, निवासी बरैचा, भी अस्पताल पहुंचीं और भाई का शव देखकर फफक पड़ीं। ग्रामीणों के अनुसार दुर्घटना में शामिल ट्रैक्टर-ट्रॉली गांव की ही बताई जा रही है। हादसे के बाद वाहन चालक मौके से फरार हो गया।वहीं बेटे की मौत की सूचना मिलने से वृद्ध मां और बहन का बुरा हाल है।

अपराध निरीक्षक राकेश कुमार ने बताया कि अस्पताल से सूचना मिलने पर पुलिस ने आवश्यक कार्रवाई शुरू कर दी है। शव को पोस्टमार्टम के लिए भेजने की प्रक्रिया चल रही है। परिजनों की तहरीर मिलने पर मुकदमा दर्ज कर जांच आगे बढ़ाई जाएगी।

अधिवक्ताओं ने किया प्रदर्शन

तिलहर, अमृत विचार: अधिवक्ताओं ने विभिन्न मांगों को लेकर तहसीलदार का घेराव किया। उनका आरोप है तहसील प्रशासन द्वारा उनके काम में बार-बार अनावश्यक व्यवधान उत्पन्न किया जा रहा है तथा कई मामलों में सहयोग नहीं किया जा रहा। इसी रोष को व्यक्त करने के लिए बार एसोसिएशन तिलहर के बैनर तले सैकड़ों अधिवक्ता एकजुट हुए और तहसीलदार कार्यालय पहुंचकर प्रदर्शन किया।

प्रदर्शन का नेतृत्व करते हुए बार एसोसिएशन के अध्यक्ष अधिवक्ता नरेश सक्सेना, महासचिव एडवोकेट राजीव सिंह चौहान, उपाध्यक्ष एडवोकेट महेंद्र पाल कन्नौजिया सहित अन्य वरिष्ठ अधिवक्ता मौजूद रहे।

गलत पोस्ट डालने वाला आरोपी गिरफ्तार

कार्यालय संवाददाता, शाहजहांपुर

अमृत विचार: शहर में एक व्यक्ति ने सोशल मीडिया पर आपत्तिजनक पोस्ट डालकर सांप्रदायिक सौहार्द बिगाड़ने की कोशिश की। पुलिस ने इसे संज्ञान में लेते हुए आरोपी को गिरफ्तार कर लिया। इसके बाद पुलिस की टीम ने तत्काल पोस्ट को सोशल मीडिया से हटवाया, इसके बाद आरोपी के खिलाफ मुकदमा दर्ज करके कोर्ट में पेश किया, जहां से उसे जेल भेज दिया गया।

सदर बाजार थाना क्षेत्र के मोहल्ला छोटी सब्जी मंडी बहादुरगंज निवासी केके दीक्षित ने गुरुवार शाम सोशल मीडिया पर एक समुदाय को लेकर सांप्रदायिक सौहार्द बिगाड़ने वाली पोस्ट डाली। पुलिस की सोशल मीडिया टीम ने पोस्ट देखते ही इसे ट्रेस किया। सदर बाजार पुलिस तुरंत हरकत में आई और शाम9 बजे घर के बाहर से पोस्ट डालने वाले आरोपी केके दीक्षित को गिरफ्तार करके सदर बाजार थाना लाया गया। पूछताछ के बाद पुलिस ने आपत्तिजनक को पोस्ट को तुरंत हटवा दिया। पूछताछ के दौरान आरोपी ने दावा किया कि उसकी आईडी हैक हो गई थी। पुलिस ने आरोपी के खिलाफ विभिन्न धाराओं में मुकदमा दर्ज कर लिया। पुलिस ने आरोपी का चालान कर दिया।

पहले भी माहौल बिगाड़ने की कोशिश की थी

बता दें केके दीक्षित की यह पहली हरकत नहीं है, इससे पहले भी उसने एक पोस्ट डाली थी। 12 सितंबर को आरोपी ने फेसबुक पर एक धर्म के खिलाफ आपत्तिजनक पोस्ट की थी। रात में काफी संख्या में एक समुदाय को लोग थाना सदर बाजार पर एकत्रित हो गए थे। एक समुदाय के लोगों ने थाना पर प्रदर्शन किया था। माहौल बिगड़ने से रोकने के लिए पुलिस ने हल्का बल का प्रयोग किया था। पुलिस ने उसे तुरंत गिरफ्तार कर लिया था। पुलिस दो सौ अधिक लोगों के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया था। पुलिस ने कुछ लोगों का शांतिभंग में चालान कर दिया था।

> आपत्तिजनक पोस्ट डालने वाले को गिरफ्तार कर लिया गया है और उसके खिलाफ मुकदमा दर्ज करके कोर्ट में पेश किया गया है। विवादित पोस्ट को हटवा दिया गया है। आपत्तिजनक पोस्ट डालने वाले को बख्शा नहीं जाएगा। - **राजेश द्विवेदी** एसपी

- सौहार्द बिगाड़ने की कोशिश की पुलिस ने पोस्ट को हटवाया

ट्रेन की चपेट में आने से युवक के पैर कटे

कार्यालय संवाददाता, शाहजहांपुर

- हिमगिरी एक्सप्रेस को पीछे रोका घायल की पहचान कराई जा रही

अमृत विचार: बरेली-शाहजहांपुर के बीच उखरी रेलवे क्रॉसिंग पर रेल पटरी पर आत्महत्या करने के उद्देश्य से एक युवक लेट गया।

बरेली से आ रही त्रिवेणी एक्सप्रेस के लोको पायलट ने पटरी पर लेटे युवक को देखकर इमरजेंसी ब्रेक लगाया। उसके बावजूद भी उसके दोनों पैर कट गए। कटरा पुलिस मौके पर पहुंची और घायल अज्ञात युवक को मेडिकल कॉलेज भेज दिया। इस दौरान त्रिवेणी एक्सप्रेस आधा घंटे खड़ी रही। हिमगिरी एक्सप्रेस को पीछे स्टेशन पर रोक दिया गया। टनकपुर-सिंगरौली त्रिवेणी एक्सप्रेस शुक्रवार दोपहर 12 बजे बरेली से लखनऊ की ओर जा रही थी। मीरानपुर कटरा रेलवे स्टेशन के निकट उखरी की रेलवे क्रॉसिंग गेट संख्या 341-सी बंद था। 25 वर्षीय अज्ञात युवक आया और रेल पटरी पर आत्महत्या करने के उद्देश्य से लेट गया। ट्रेन के लोको पायलट ने देखा कि एक युवक पटरी पर लेटा हुआ और बराबर हॉर्न बज रहा था, फिर भी युवक पटरी से नहीं उठ रहा था। लोको पायलट ने इमरजेंसी ब्रेक लगाए तो फिर भी उसके दोनों पैर कट गए। कटरा थाना पुलिस मौके पर पहुंची और घायल युवक को रेल पटरी से हटाया। इस दौरान त्रिवेणी एक्सप्रेस करीब घंटे खड़ी रही और हिमगिरी एक्सप्रेस पीछे स्टेशन पर खड़ी रही। प्रभारी निरीक्षक जुगुल किशोर पाल ने बताया कि ट्रेन की चपेट में आकर एक युवक घायल हो गया है।

कर्ज से परेशान युवक ने की खुदकुशी

संवाददाता, बंडा

संजय गुप्ता।

अमृत विचार: कर्ज से परेशान युवक ने दुकान में फंदा लगाकर आत्महत्या कर ली। परिजनों ने बिना पुलिस को सूचना दिए देर शाम शव का अंतिम संस्कार कर दिया।

बंडा के मोहल्ला बृजपाल नगर कॉलोनी निवासी संजय गुप्ता (38) का किराने की दुकान में लाखों रुपये का नुकसान हो गया। उसने फिर से व्यवसाय शुरू करने के लिए लोगों से पैसा ब्याज पर उठाया। इसके साथ ही उसने मकान पर होम लोन करवाया था और लोगों का पैसा देने के लिए उसने मकान भी बेच दिया था लेकिन तब भी कर्जदार उसे परेशान कर रहे थे। पिछले वर्ष दीपावली के समय करीब तीन लाख रुपये की आतिशबाजी भी पकड़ी गई थी। कई जगह से उस पर लाखों रुपए का कर्ज हो गया था जिसके चलते आए दिन वह डिप्रेशन में रहता था। शुक्रवार सुबह वह अपने दो बच्चों को स्कूल छोड़ने गया और स्कूल से वापस आने के बाद उसने अपनी किराने की दुकान में फंदा लगाकर आत्महत्या कर ली। परिवार के लोगों ने पुलिस को बिना सूचना दिए शव को फंदे से उतार लिया और देर शाम शव का अंतिम संस्कार कर दिया। इस संबंध में थाना प्रभारी प्रदीप कुमार राय ने बताया कि मामले की जानकारी उन्हें नहीं दी गई है न ही पुलिस मौके पर गई थी।

ट्रेन से गिरकर युवक घायल

कार्यालय संवाददाता शाहजहांपुर

अमृत विचार : सियालदहा एक्सप्रेस में दो पक्षों में सीट को लेकर विवाद हो गया, इसके बाद मारपीट शुरु हो गई। कोच के गेट पर खड़े युवक को धक्का लगने पर नीचे गिर गया और घायल हो गया।

हरदोई जिले के शाहाबाद कस्बा निवासी आकाश शर्मा (30) गुरुवार शाम हरदोई से बरेली जा रहा था। वह जनरल कोच में सवार हुआ। सीट न मिलने के कारण वह कोच के गेट के पास खड़ा हो गया। कोच के अंदर सीट को लेकर दो पक्षों में मारपीट शुरु हो गई। दोनों लोग लड़ते-लड़ते गेट पर आ गए। इस दौरान गेट के पास खड़े आकाश शर्मा को धक्का लगा और ट्रेन के नीचे गिरकर घायल हो गया। गंभीर रूप से घायल को बंथरा गांव के सामने लोगों ने पड़ा देखा और स्टेशन मास्टर को सूचना दी। स्टेशन मास्टर ने आरपीएफ को मेमो दिया। आरपीएफ मौके पर पहुंची और घायल यात्री को मेडिकल कॉलेज भेज दिया। इसके साथ ही परिजनों को सूचना दी गई।

इंटरवेंशनल कार्डियोलाजिस्ट डा.दीपेश अग्रवाल कर रहे अत्याधुनिक विधियों से दिल का इलाज

बिना सीना खोले, बिना बाईपास, एसआरएमएस में दिल का इलाज

दिल्ली और लखनऊ के मुकाबले एसआरएमएस में कम खर्च पर दिल की बीमारियों का सफल इलाज

बरेली: दुनिया में जितनी तेजी से दिल के रोगियों की संख्या बढ़ रही है, उतनी ही तेजी से उनके उपचार की विधियां भी इजाद हो रही हैं। अत्याधुनिक तकनीक और अत्याधुनिक उपकरण दिल के रोगियों को स्वस्थ कर उनके जीवन को आसान बनाने का काम कर रहे हैं। अत्याधुनिक उपकरणों, तकनीकों से गुणवत्तापूर्ण और सफल इलाज करने की वजह से एसआरएमएस मेडिकल कालेज भी दिल के मरीजों का पसंदीदा सेंटर बन अपनी विशिष्ट पहचान बना चुका है। पश्चिमी उत्तर प्रदेश के चुनिंदा कार्डियोलाजी सेंटर में से एक एसआरएमएस में अंतरराष्ट्रीय मानकों के साथ 24 घंटे कार्डियक इमरजेंसी में मरीजों का उपचार किया जाता है। इसमें यहां के विशेषज्ञ और अनुभवी डाक्टरों की टीम, विश्वस्तरीय 3 कैथ लैब (डीएसए एवं इलैक्ट्रोफिजियोलॉजी तकनीक से युक्त), समस्त अत्याधुनिक सुविधाओं से सुसज्जित कार्डियक ऑपरेशन थियेटर, 20 बेड का डेडिकेटेड कार्डियक आईसीयू का भी बड़ा योगदान है। दिल के मरीजों का उपचार करने वाले अनुभवी विशेषज्ञ और नामचीन कार्डियोलाजिस्ट में यहां एक नाम और जुड़ा है। वह है डा.दीपेश कुमार अग्रवाल का। जो एसआरएमएस मेडिकल कालेज में प्रोफेसर हैं। कार्डियोलाजी में एमडी, डीएम की डिग्री के साथ एफएससीएआई, एफआरसीपी करने वाले डा.दीपेश इंटरवेंशनल कार्डियोलाजिस्ट हैं। दिल की बीमारियों के उपचार में 20 वर्ष से ज्यादा का अनुभव रखने वाले डा.दीपेश एमजी मेडिकल कालेज जयपुर में प्रोफेसर रह चुके हैं। डा.दीपेश ने पांच महीने पहले लीडलेस डबल चैंबर पेसमेकर की मदद से बेहद गंभीर मरीज को जीवनदान दिया। लीडलेस डबल चैंबर पेसमेकर से पहली बार रुहेलखंड और उत्तराखंड रीजन में किसी मरीज का सफल उपचार किया गया। इंटरवेंशनल कार्डियोलाजिस्ट होने के नाते डा.दीपेश बिना सीना खोले, बिना बाईपास के एआईसीडी, आईवीयूएस, वॉल्व इम्पलांटेशन (TAVI), डिवाइस क्लोजर समेत अन्य अत्याधुनिक विधियों से मरीजों के इलाज को वरीयता देते हैं। यही वजह है कि दिल्ली और लखनऊ के किसी भी कार्डियोलाजी सेंटर के मुकाबले यहां उनके इलाज पर बेहद कम खर्च आता है।

भीम सिंह के साथ डा.दीपेश कुमार अग्रवाल

एसआरएमएस में रोज होता है दर्जनों मरीजों का एंजियोग्राफी, एंजियोप्लास्टी, लीडलेस डबल चैंबर पेसमेकर, एआईसीडी, IVUS, रोटावेलेशन, FFR, वॉल्व इम्प्लांटेशन-डिवाइस क्लोजर इलैक्ट्रोफिजियोलॉजी जैसी अत्याधुनिक विधियों से इलाज

बेहद गंभीर स्थिति में थे बागेश्वर के भीम सिंह

फौज से सेवानिवृत्त बागेश्वर के भीम सिंह (59 वर्ष) की दिल की धड़कन बेहद कम थी। सिस्टोल और डायस्टोल का संतुलन भी बिगड़ चुका था। बार बार बेहोश हो रहे थे। 20 जुलाई को सुबह साढ़े 6 बजे एसआरएमएस लाए गए। डा.दीपेश ने उपचार शुरू किया। हालत कुछ स्थिर होने पर डा.दीपेश ने पेसमेकर लगाने की सलाह दी और परिजनों की सहमति के बाद लीडलेस डबल चैंबर पेसमेकर लगाया। अब भीम सिंह पूरी तरह स्वस्थ हैं और सामान्य दिनचर्या से जीवन यापन कर रहे हैं।

हार्ट प्राब्लम के साथ जोधा सिंह की किडनी भी थी डैमेज

हार्ट प्राब्लम के साथ हल्द्वानी निवासी जोधा सिंह (65 वर्ष) की किडनी भी डैमेज थी। 6 अक्टूबर को उन्हें एसआरएमएस मेडिकल कालेज लाया गया। जांच के लिए एंजियोग्राफी जरूरी थी, लेकिन एंजियोग्राफी के लिए लगाई जाने वाली डाई से किडनी को ज्यादा नुकसान संभव था। ऐसे में डा.दीपेश ने इंट्रावैस्कुलर अल्ट्रासाउंड IVUS तकनीक से रक्त वाहिकाओं की स्थिति को देखा और इसी की मदद से एंजियोग्राफी कर 99 फीसद ब्लाक दोनों नसों खोला। अब जोधा सिंह पूरी तरह स्वस्थ हैं।

बगैर बाईपास स्टंट लगा कर नसरा बेगम को बचाया

फहेतगंज पश्चिम निवासी नसरा बेगम (60 वर्ष) हार्ट अटैक पड़ा था। गंभीर हालत में सीपीआर देते हुए उन्हें 24 जुलाई को एसआरएमएस लाया गया। मुख्य नस ब्लाक होने से बाईपास जरूरी था। लेकिन उम्र और गंभीर स्थिति के कारण बाईपास में जोखिम ज्यादा देख डा.दीपेश ने स्टंट डालने का फैसला किया। परिजनों की सहमति के बाद स्टंट डाला गया। इसी से नसरा की हालत में सुधार हुआ। बाईपास के बगैर बिना सीना खोले सिर्फ स्टंट से नसरा बेगम उपचार हुआ। अब वो पूरी तरह स्वस्थ हैं।

कार्डियक अरेस्ट में एसआरएमएस पहुंचे मोहन सिंह

खटीमा निवासी मोहन सिंह (70 वर्ष) की स्थिति बेहद गंभीर थी। कार्डियक अरेस्ट की स्थिति में सीपीआर देते हुए उन्हें 13 सितंबर को एसआरएमएस लाया गया। वेंट्रिकुलर टैकीकार्डिया (VT) की वजह से हार्ट रेट 200 से ज्यादा थी। बार-बार बेहोश हो रहे थे। आपातकालीन स्थिति में डा.दीपेश ने आटोमैटिक इम्प्लांटेबल कार्डियोवर्टर डिफाइब्रिलेटर (AICD) विधि से उनका उपचार किया। मोहन सिंह पूरी तरह सामान्य दिनचर्या से जीवन यापन कर रहे हैं।

प्रशिक्षित एवं अनुभवी डॉक्टर पैनल

- **डॉ अमरेश अग्रवाल**, वरिष्ठ इंटरवेंशनल कार्डियोलॉजिस्ट
- **डॉ दीपेश अग्रवाल**, वरिष्ठ इंटरवेंशनल कार्डियोलॉजिस्ट
- **डॉ अमित वार्ष्णेय**, इंटरवेंशनल कार्डियोलॉजिस्ट एवं इलैक्ट्रोफिजियोलॉजिस्ट
- **डॉ विकास दीप गोयल**, वरिष्ठ कार्डियोथोरेसिक सर्जन

SRMS श्री राम मूर्ति स्मारक अस्पताल, बरेली ✆ 9458705555

advt

स्कॉर्पियो-ट्रैक्टर में टक्कर, तीन घायल

जलालाबाद, अमृत विचार: कोला पुल के पास गुरुवार देर रात बड़ा हादसा हो गया। कायमगंज से रिश्तेदारी से लौट रही स्कॉर्पियो ट्रैक्टर-ट्रॉली में जा भिड़ी, जिसमें तीन लोग घायल हो गए। एक महिला की हालत नाजुक बताई जा रही है। पुलिस ने मौके से ट्रैक्टर कब्जे में ले लिया, जबकि चालक फरार हो गया।

गांव ककराह निवासी सुशील ने बताया कि वह पांच लोग स्कॉर्पियो से कायमगंज से लौट रहे थे। जैसे ही उनकी गाड़ी कोला पुल से नीचे उतरी, वहां ऊंचाई अवरोधक (हाइट बैरियर) के नीचे ट्रैक्टर-ट्रॉली खड़ी मिली, जिसमें उनकी स्कॉर्पियो सीधे जा टकराई। टक्कर इतनी तेज थी कि गाड़ी में सवार तीन लोग गंभीर रूप से घायल हो गए। घायल प्रेमवती पत्नी जवाहरलाल की हालत ज्यादा गंभीर थी। सूचना मिलते ही जलालाबाद पुलिस मौके पर पहुंची और घायलों को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र नगरिया ले जाया गया। वहां डॉक्टरों ने प्राथमिक उपचार के बाद प्रेमवती की हालत नाजुक देखते हुए उसे राजकीय मेडिकल कॉलेज रेफर कर दिया। वहीं सुशील और सुधा देवी का इलाज सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र में ही किया गया। कोतवाल राजीव कुमार तोमर ने बताया कि हादसा गनीमत के बावजूद बड़ा हो सकता था। स्कॉर्पियो ट्रॉली से टकराई और ट्रैक्टर चालक मौके से भाग गया।

आज का मौसम
25.0° अधिकतम तापमान
11.0° न्यूनतम तापमान
सूर्योदय 06.40
सूर्यास्त 05.17

फरीदपुर एकेडमी में प्रयास को हराया, दया बने श्रेष्ठ खिलाड़ी

कम स्कोर का पीछा कर फरीद एकेडमी ने 14.3 ओवर में जीता मुकाबला

कार्यालय संवाददाता, शाहजहांपुर/जलालाबाद

अमृत विचार: काकोरी शहीद इंटर कॉलेज के मैदान पर चल रहे क्रिकेट टूर्नामेंट में शुक्रवार को प्रयास क्रिकेट एकेडमी जलालाबाद और फरीद क्रिकेट एकेडमी शाहजहांपुर के बीच रोमांचक मुकाबला खेला गया। मैच में फरीद एकेडमी ने शानदार प्रदर्शन करते हुए जीत दर्ज की।

टॉस फरीद एकेडमी के पक्ष में गया और टीम ने पहले गेंदबाजी करने का फैसला किया। प्रयास एकेडमी की टीम निर्धारित 27 ओवर भी पूरे नहीं खेल सकी और 82 रन पर ही ढेर हो गई। टीम की ओर से अमन ने 29 रन की सर्वाधिक पारी खेली, जबकि विकास सक्सेना 11 रन पर आउट हुए। फरीद एकेडमी की गेंदबाजी धारदार रही। सौरभ, अनमोल और दयातीनों गेंदबाजों ने तीन-तीन विकेट लेकर प्रयास एकेडमी की बल्लेबाजी को संघर्ष में डाल दिया। लक्ष्य का पीछा करते हुए फरीद एकेडमी ने सहज अंदाज में बल्लेबाजी की और 14.3 ओवर में पांच विकेट खोकर मैच जीत लिया।

टीम के कौशल ने ताबड़तोड़ 41 रन बनाए और अंशुल ने 19 रन जोड़कर जीत में अहम भूमिका निभाई। प्रयास के गेंदबाज दक्ष शर्मा ने तीन विकेट जरूर झटके, लेकिन टीम को जीत नहीं दिला सके। मैच में उत्कृष्ट प्रदर्शन के लिए दया को मैन ऑफ द मैच चुना गया। अंपायरिंग की जिम्मेदारी संकेत और पंकज तिवारी ने निभाई, जबकि स्कोरिंग देव ने की। आयोजन व्यवस्था में रजत शर्मा और अन्य खिलाड़ियों ने सहयोग किया। आर्ट-11 की टीम ने साइंस-11 को हराया, 214 रन खड़े कर जीता मुकाबला।

टूर्नामेंट में शानदार प्रदर्शन करने वाले खिलाड़ियों को सम्मानित करते आयोजक।

अंकित का शतक बेकार, डॉ. मृदुल पटेल बने मैन ऑफ द मैच

स्वामी शुकदेवानंद कॉलेज में आयोजित मुमुक्षु क्रिकेट लीग के मुकाबले में आर्ट-11 की टीम ने साइंस-11 पर 24 रनों से जीत दर्ज की। आर्ट-11 ने 16 ओवर के खेल में चार विकेट खोकर 214 रन का विशाल स्कोर खड़ा किया, जिसमें टीम के कप्तान प्रो. अजीत सिंह चारग ने 50 रन की तेज पारी खेली। लक्ष्य का पीछा करते हुए साइंस-11 की शुरुआत ठीक रही, लेकिन नियमित अंतराल पर विकेट गिरते रहे और पूरी टीम 190 रन पर रुक गई। बैटिंग में अंकित अवस्थी ने शानदार शतक ठोका, लेकिन टीम को जीत नहीं दिला सके। पूरा मैच दर्शकों के लिए रोमांच से भरा रहा। कमेंट्री का जिम्मा शिवओम शर्मा ने संभाला। बेहतरीन प्रदर्शन के लिए डॉ. मृदुल पटेल को मैन ऑफ द मैच घोषित किया।

बसंतापुर व लालपुर समितियों की शुरुआत

नवगठित समिति का उद्घाटन पर डीएपी की बोरियां बांटते अतिथि। ● अमृत विचार

संवाददाता, बंडा

● नई पैक्स खुलने से किसानों को खाद उपलब्धता में मिलेगी राहत

अमृत विचार: नवगठित बसंतापुर और रनमस्तपुर बुजुर्ग क्षेत्र से कटकर गठित बहुउद्देशीय प्राथमिक ग्रामीण सहकारी समिति (पैक्स) लालपुर आजादपुर का शुभारंभ समारोहपूर्वक किया गया। मुख्य अतिथि जिला सहकारी बैंक अध्यक्ष धर्मेंद्र प्रताप सिंह राठौर ने फीता काटकर बी.पैक्स का उद्घाटन किया। उद्घाटन के साथ ही किसानों में उत्साह देखने को मिला और बड़ी संख्या में ग्रामीण कार्यक्रम में शामिल हुए।

किसानों ने कहा कि नई पैक्स की स्थापना से खाद-बीज की समय पर उपलब्धता सुनिश्चित होगी। उन्होंने भरोसा जताया कि पारदर्शी वितरण व्यवस्था और सहकारिता तंत्र मजबूत होने से खेती-किसानी के कार्यों में उन्हें सीधा लाभ मिलेगा। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए डीपीएस राठौर ने कहा कि बी पैक्स किसानों की रीढ़ है। सहकारी समितियां बिना किसी बिचौलिये के खाद वितरण, बीज उपलब्धता, ऋण सुविधा और सरकारी योजनाओं का लाभ किसानों तक पहुंचाती हैं। उन्होंने कहा कि नई पैक्स किसानों की जरूरतों को ध्यान में रखते हुए बेहतर कार्य करेगी। उद्घाटन कार्यक्रम में किसानों को खाद का वितरण भी किया गया। किसानों ने कहा कि पैक्स खुलने से क्षेत्र में सहकारिता व्यवस्था मजबूत होगी और कृषि कार्यों में बड़ी राहत मिलेगी। इस मौके पर बी.पैक्स बसंतापुर के अध्यक्ष आशीष मिश्रा, रनमस्तपुर बुजुर्ग के अध्यक्ष नरेंद्र कुमार, जिला सहकारी बैंक निदेशक कृष्ण कुमार, एआर कोऑपरेटिव अखिलेश प्रताप सिंह, जिला सहकारी बैंक के जीएम सौरभ द्विवेदी, ब्लॉक प्रमुख ओमप्रकाश, मंडल अध्यक्ष अभिषेक शुक्ला, मंडल अध्यक्ष धर्मवीर, विकास मिश्रा विक्कू, हर्ष मिश्रा, रजनीश मिश्रा, रितेश मिश्रा, सत्यम शुक्ला, डेविड, जिला पंचायत सदस्य अभिषेक सिंह तोमर, राजीव गंगवार और अनूप द्विवेदी (क्रय विक्रय संचालक पुवायां) सहित कई गणमान्य लोग मौजूद रहे।

न्यूज ब्रीफ

खेल प्रतियोगिता में छात्रों ने किया प्रतिभाग

तिलहर, अमृत विचार: सेंट मेरी कॉन्वेंट सीनियर सेकेंडरी स्कूल में शुक्रवार को स्पोर्ट्स एक्स्ट्रावेगेंजा के दूसरे दिन कई प्रतियोगिताओं का आयोजन किया गया। शुक्रवार को प्रतियोगिताओं का शुभारंभ मुख्य अतिथि बैंक मैनेजर आशीष तिवारी ने दीपक जलाकर किया। इसके बाद आयोजित दौड़, कबड्डी, ऊंची कूद, लंबी कूद आदि प्रतियोगिताओं में छात्रों ने बढ़-चढ़कर हिस्सा लिया और जीत हासिल की। आयोजन छात्रों के लिए आनंददायक रहा और उपस्थित अभिभावकों ने भी इसकी सराहना की। इस अवसर पर विद्यालय प्रबंधक रेव. फादर लिजू एंटनी और प्रिंसिपल रेव. सिस्टर अविला सहित अन्य गणमान्य व्यक्ति उपस्थित थे।

विश्व मात्स्यिकी दिवस पर मत्स्य अगुलिकाए संचय

शाहजहांपुर, अमृत विचार: विश्व मात्स्यिकी दिवस के अवसर पर मत्स्य विभाग द्वारा नदियों में मत्स्य संपदा एवं पर्यावरण का सन्तुलन बनाएं रखने के लिए रामगंगा नदी में मत्स्य जीवी महकारी समिति लिमिटेड वाई 2 बृहमदेव नगर कलान एवं मत्स्य जीवी महकारी समिति लिमिटेड कुदौली, जलालाबाद के ग्राम कुन्दौली घाट एवं कलान के ग्राम परौर घाट पर उत्तर प्रदेश मत्स्य विभाग निगम की हैचरी खुटार के 44000 हजार मत्स्य अगुलिकाएं संचय की गई। कुन्दौली के राजेश कुमार वर्मा पूर्व नगर पंचायत अध्यक्ष अल्हागंज एवं मत्स्य विभाग के प्रभारी सहायक निदेशक पूरनलाल की उपस्थित तथा कलान के ग्राम परौर घाट पर 22 हजार मत्स्य अंगुलिकाएं हरीनारायण गुप्ता अध्यक्ष नगर पंचायत कलान की उपस्थिति में संचय किया गया।

बच्चों ने शहीद संग्रहालय का किया भ्रमण

शाहजहांपुर, अमृत विचार: खंड शिक्षा अधिकारी पुवायां ने विकासखंड में अध्ययनरत 100 छात्र-छात्राओं को दो बसों के माध्यमों से 'राष्ट्रीय अविष्कार अभियान कार्यक्रम के अन्तर्गत जनपद के गन्ना शोध संस्थान शहीद संग्रहालय, शहीद पार्क का स्थलीय भ्रमण कराकर जनपद में गन्ने की विभिन्न प्रकार की प्रजातियों के बारे में बीएसए के द्वारा छात्रों को जानकारी उपलब्ध कराई गई। साथ ही जनपद में शहीदों के बारे में भी जानकारी उपलब्ध करायी गयी एवं शहीद पार्क में स्थलीय भ्रमण कराकर शहीदों द्वारा दी गई श्रद्धांजलि के बारे में जानकारी उपलब्ध कराई गई। छात्रों के भ्रमण के दौरान बीएसए दिव्या गुप्ता, श्री कृष्ण कुमार शुक्ला, जितेन्द्र कुमार, रजनीश कुमार, पल्लवी, राकेश रोशन, सुखपाल, अवनि, अनूप वर्नबाल, रोली, छोटोलाल, वैभव, प्रिया सक्सेना, रमेश, विनोद आदि अध्यापक एवं स्टाफ मौजूद रहे।

जीवन लक्ष्य निर्धारण व क्षमता विकास पर जोर

संवाददाता, शाहजहांपुर

● आरुषि खरे ने करियर, लाइफ स्किल्स और मानसिक स्वास्थ्य पर किया मार्गदर्शन

अमृत विचार: तक्षशिला पब्लिक स्कूल में 21 नवंबर को पूर्व छात्र सम्मेलन आयोजित किया गया, जिसमें विद्यालय की पूर्व छात्रा आरुषि खरे मुख्य वक्ता के रूप में आमंत्रित रहीं। आरुषि खरे ट्रिपल आईआईटी भुवनेश्वर से बी टेक हैं तथा साइबर सिक्योरिटी में इंजीनियरिंग के बाद इग्नू से एमए साइकोलॉजी की पढ़ाई कर रही हैं। वह वर्तमान में करियर एवं मानसिक स्वास्थ्य विषयों पर काउंसलर के रूप में कार्यरत हैं।

सम्मेलन के दौरान आरुषि खरे ने कक्षा 9 से 12 तक के विद्यार्थियों के साथ संवाद स्थापित किया और अपने अनुभव साझा किए। उन्होंने लाइफ स्किल्स और सॉफ्ट स्किल्स के महत्व, करियर और जीवन की अनिश्चितताओं, मानसिक स्वास्थ्य तथा पढ़ाई व हॉबीज़ में संतुलन बनाए रखने जैसे विषयों पर विस्तार से चर्चा की।

उन्होंने विद्यार्थियों को सलाह दी कि वे नौकरी के पीछे भागने के बजाय अपनी योग्यता और क्षमता का विकास करें। जुनून और रुचि के आधार पर करियर निर्माण को बेहतर बताया।

उन्होंने कहा कि यदि व्यक्ति अपने कौशल को विकसित करता है तो अच्छे अवसर स्वतः प्राप्त होते हैं। कॉलेज जीवन को आत्म-मूल्यांकन का महत्वपूर्ण चरण बताया, जहां यह प्रमाणित करना होता है कि व्यक्ति कितना बहुमुखी प्रतिभाशाली है।

आरुषि ने कहा कि सफलता तुरंत नहीं मिलती, लेकिन निरंतर प्रयास से एक दिन अवश्य मिलती है। करियर बदलने से डरना नहीं चाहिए, क्योंकि जीवन में परिस्थितियां किसी भी दिशा में मुड़ सकती हैं। उन्होंने अनुशासन, आत्मविश्वास और भीतरी प्रेरणा को सफलता की कुंजी बताया। उन्होंने विद्यार्थियों से जीवन लक्ष्य निर्धारित कर उसी दिशा में निरंतर परिश्रम करने की सलाह दी। विद्यालय के प्रधानाचार्य प्रखर खंडेलवाल ने सभी आगंतुकों का आभार व्यक्त करते हुए कहा कि पूर्व छात्रा आरुषि के अनुभवों से विद्यालय के बच्चों को अपने लक्ष्य निर्धारित करने में निश्चित रूप से बड़ी सहायता मिली है। उन्होंने कहा कि लक्ष्य निर्धारण के साथ-साथ आवश्यक क्षमताओं का विकास भी उतना ही जरूरी है, जो समय और प्रयास से हासिल होता है। कार्यक्रम का संचालन कक्षा 9-10 के समन्वयक हेमंत अनेजा ने किया। प्रश्नोत्तरी सत्र में कक्षा 9 के छात्रों शिवोहम शर्मा और अर्शप्रीत कौर ने सहयोग किया।

इस अवसर पर उप प्रधानाचार्य के सी जोशी, शैलेन्द्र सिंह चौहान, चेताली सहाय, तुषार अग्निहोत्री, सरिता सक्सेना, शिवम शुक्ला, श्रेयांशी सक्सेना सहित कई शिक्षक उपस्थित रहे। कार्यक्रम में शिक्षक शिवम वर्मा का विशेष सहयोग रहा।

बीएलओ की लापरवाही उजागर शिक्षा मित्र पर कार्रवाई

शाहजहांपुर, अमृत विचार: भारत निर्वाचन आयोग के निर्देशों के अनुपालन की समीक्षा के दौरान दो बीएलओ की लापरवाही सामने आई है। एईआरओ एवं नायब तहसीलदार निशि सिंह ने सुपरवाइजर अनूप वर्मा (लेखपाल) के साथ मौके पर जांच की। जांच में पाया कि बूथ संख्या 388 पर कुल 1290 प्रपत्रों में से केवल 37 प्रपत्रों का डिजिटाइजेशन किया गया, जबकि बूथ संख्या 389 पर कुल 1070 प्रपत्रों में से मात्र 15 का डिजिटाइजेशन हुआ। यह प्रगति असंतोषजनक पाई गई और निर्वाचन कार्यों में गंभीर लापरवाही का स्पष्ट प्रमाण माना गया। जांच में यह भी पुष्ट हुआ कि दोनों बीएलओ शिक्षा विभाग में शिक्षा मित्र के पद पर जिले में कार्यरत हैं। ईआरओ/सिटी मजिस्ट्रेट ने आरोपी शिक्षा मित्र के विरुद्ध कार्रवाई के निर्देश जारी किए हैं। सेवा समाप्ति के लिए संबंधित विभाग को औपचारिक निर्देश भेजे गए हैं।

बोर्ड परीक्षाओं में ड्यूटी करने वालों का बढ़ा पारिश्रमिक

संवाददाता, शाहजहांपुर

● केंद्र व्यवस्थापक, कक्ष निरीक्षक से लेकर चतुर्थ श्रेणी तक सभी को मिलेगा लाभ

अमृत विचार: माध्यमिक शिक्षा परिषद ने हाईस्कूल और इंटरमीडिएट परीक्षाओं में तैनात कर्मचारियों के पारिश्रमिक में बढ़ोतरी कर दी है। परीक्षा केंद्र, मूल्यांकन केंद्र और संकलन केंद्रों पर कार्य करने वाले सभी कर्मचारियों के लिए अब पहले से अधिक धनराशि का भुगतान किया जाएगा। नए आदेश के अनुसार सभी श्रेणियों के कर्मचारियों को संशोधित दरों से ही पारिश्रमिक दिया जाएगा।

पहले यूपी बोर्ड परीक्षा में केंद्र व्यवस्थापक को 80 रुपये प्रति पाली या 160 रुपये प्रतिदिन दिया जाता था, जिसे बढ़ाकर अब 100 रुपये प्रति पाली या 200 रुपये प्रतिदिन कर दिया गया है। अतिरिक्त केंद्र व्यवस्थापक को पूर्व में 106 रुपये प्रतिदिन मिलते थे, जबकि अब उन्हें 120 रुपये प्रतिदिन प्रदान किए जाएंगे। कक्ष निरीक्षक का पारिश्रमिक भी बढ़ा है। उन्हें पहले 96 रुपये प्रतिदिन दिया जाता था, जो अब बढ़ाकर 100 रुपये कर दिया गया है। बंडल वाहक को पहले 16 रुपये प्रति पाली मिलते थे, जबकि अब 20 रुपये प्रति पाली दिए जाएंगे।

इसके अलावा चतुर्थ श्रेणी कर्मचारियों के लिए 26.50 रुपये प्रति पाली के मुकाबले अब 30 रुपये प्रति पाली का भुगतान किया जाएगा। डीआईओएस हरिवंश कुमार ने बताया कि पारिश्रमिक वृद्धि से संबंधित आदेश पूर्व में ही जारी किए जा चुके हैं और इसी के अनुसार इस बार भुगतान किया जाएगा।

ई-बसों की पहले दिन ही कमाई गिरी लगाया लंबा जाम

शाहजहांपुर, अमृत विचार: नगर विकास विभाग द्वारा शहर के साथ पुवायां, जलालाबाद व कांट के लिए ई-बसों का संचालन डीएम, नगर आयुक्त की अनुमति के बाद कराया जा रहा था, जिससे रोजाना चलने वाले यात्रियों को जहां सहूलियत बनी थी। वहीं ई-बसों की लाखों रुपये इनकम रोजाना हो रही थी, लेकिन दो दिन पहले ई-बस विभाग के एमडी के आदेश के बाद एक बार पुनः ई-बसों का संचालन पुवायां, कांट व जलालाबाद रुट पर शुक्रवार सुबह से बंद कर दिया है। जिससे यात्रियों को दिक्कत हो गई। साथ ही इनकम पर भी असर पड़ा है। 21 ई-बसों का संचालन शहर में कराने से यातायात व्यवस्था बिगड़ गई और जगह-जगह जाम लग गया। ट्रैफिक पुलिस को काफी मशक्कत करनी पड़ी। नगर आयुक्त डा.बिपिन कुमार मिश्रा ने बताया कि जानकारी मिली है, डीएम से वार्ता कर रास्ता निकाला जाएगा।

कुत्तों से लोग परेशान

शाहजहांपुर: इन दिन क्षेत्र में घूमने वाले आवारा कुत्तों से लोग काफी परेशान हो चुके हैं। आय दिन लोगों पर हमले करके कुत्ते घायल कर रहे है। रोज बड़ी संख्या में लोग रैबिज का टीका लगवाने पहुंच रहे है। स्थानीय लोगों ने कुत्तों को पकड़कर दूर भिजवाने की मांग की है।

पुलिस पर लगाया छेड़छाड़ का आरोप

कार्यालय संवाददाता, शाहजहांपुर

● आरोप पति को मारा, रुपये छीन लिए, एसपी ने सीओ को दी जांच

अमृत विचार: फर्रुखाबाद निवासी महिला ने अल्हागंज पुलिस पर आरोप लगाया है उसे और उसके पति के साथ थाने मारपीट की गई और पैसे छीन लिए गए। आरोप है कि कम्प्यूटर कक्ष की लाइट बंद करके सिपाही ने उसके साथ छेड़छाड़ की। पीड़िता ने फर्रुखाबाद के एसपी को प्रार्थना पत्र दिया था। एसपी ने यहां के एसपी को प्रार्थना पत्र भेज दिया है। एसपी ने सीओ जलालाबाद को जांच दी है।

फर्रुखाबाद जिले के कादरीगेट थाना के एक मोहल्ले की महिला ने फर्रुखाबाद एसपी को दिए शिकायती पत्र में बताया उसके फोन पर अज्ञात महिला और पुरुष गाली गलौज कर रहे थे। 13 नवंबर को दोपहर 1 बजे उसके फोन पर काल आई। काल करने वाली महिला ने उसका नाम और पता पूछा। पीड़िता ने उससे परिचय पूछा तो अभद्र व्यवहार करते हुए फोन काट दिया। आधा घंटे बाद उसके फोन पर एक व्यक्ति का फोन आया। फोन करने वाले ने कहा अल्हागंज से बोल रहा हूं और मिलना चाहता हूं। उसने कहा कि कहां मिलोगी और पीड़िता ने उससे परिचय पूछा तो अभद्र व्यवहार किया। उसके पति शाम को दुकान पर सामान खरीदने के लिए गए। इसी बीच बिना नंबर की एक गाड़ी आकर रुकी। गाड़ी में वर्दी पहने दो सिपाही ओर एक महिला बिना वर्दी की थी। उसके पति को जबरन गाड़ी में बैठा लिया। उसके पति को लेकर उसके आवास पर आए। पुलिस ने मकान की तलाशी ली और गाली-गलौज की। आरोप है कि उसके पति की जेब से 3250 रुपये निकाल लिए और पीड़िता और उसके पति व बच्चों को जबरन गाड़ी में बैठाकर अल्हागंज थाना पर ले आए। पीड़िता का आरोप है कि कंप्यूटर कक्ष में ले गए और लाइट बंद करके उसके छेड़छाड़ की। महिला सिपाही ने उसके साथ मारपीट की। उसके परिवार के लोग थाना पर आ गए। पुलिस ने लिखा पढ़ी के बाद छोड़ दिया। पीड़िता का आरोप है कि सीसीटीवी कैमरे चेक किए तो हकीकत सामने आ जाएगी। एसपी ने सीओ जलालाबाद को जांच दी है।

> महिला के पति के खिलाफ थाना पर शिकायत आई थी। पुलिस ने उसके पति को पूछताछ के लिए लाई थी। पति ने माफीनामा लिखकर दिया है। महिला ने जो आरोप लगाए है। सीओ जलालाबाद जांच कर रहे है। – राजेश द्विवेदी, एसपी

खो-खो प्रतियोगिता के लिए टीमें रवाना

संवाददाता, शाहजहांपुर

अमृत विचार: लीड कान्वेंट स्कूल के छात्र-छात्राओं की टीमें शुक्रवार 21 नवंबर 2025 को जूनियर राज्य स्तरीय खो-खो प्रतियोगिता में हिस्सा लेने के लिए हरदोई रवाना हुईं। यह प्रतियोगिता ओलंपिक संघ उत्तर प्रदेश द्वारा आयोजित की जा रही है। प्रतियोगिता स्थल डॉ. राम मनोहर लोहिया महाविद्यालय, अल्लीपुर हरदोई निर्धारित किया गया है।

ओलंपिक संघ के अध्यक्ष नरेंद्र त्यागी ने खिलाड़ियों को प्रेरित करते हुए कहा कि खेल शारीरिक और मानसिक क्षमता को मजबूत करने का सर्वोत्तम माध्यम है। उन्होंने बच्चों को अनुशासित रहकर खेल भावना के साथ मैदान में उतरने की सलाह दी। प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए छात्र-छात्राएं लंबे समय से निरंतर अभ्यास कर रहे थे। स्कूल की थंडर स्ट्राइक (बालक टीम) में अक्षय शुक्ला, अब्दुल कादिर, अध्ययन श्रीवास्तव, आदित्य द्विवेदी, विहान, अहमद, ताल्हा अंसारी, विवेक, आनन वर्मा, शौर्य प्रताप सिंह, उमेर हसन और अनस शामिल रहे। वहीं फीयरलेस फ्लायर्स (बालिका टीम) में इनाया फातिमा, नबा खान, जोया फातिमा, मायशा खान, इशिका वर्मा, आराध्या सक्सेना, हंसिका बाजपेई, हुरिया, सुगरा, अवनी गुप्ता, जानवी पाल और जोहर आसिफ शामिल हैं। टीमों के साथ स्कूल के कोच संतोष सक्सेना, अर्चित शर्मा, श्रुति सिंह और चांदनी अनवर भी हरदोई रवाना हुए।

खो-खो प्रतियोगिता के लिए हरदोई रवाना होती टीम।

● हरदोई में होने वाली जूनियर चैंपियनशिप में दिखाएंगे दम

किसी भी अंजान व्यक्ति को ओटीपी शेयर न करें

संवाददाता, शाहजहांपुर

अमृत विचार: जिला विधिक सेवा प्राधिकरण की ओर से शुक्रवार को मिथिलेश कुमारी कन्या इंटर कॉलेज कलान में कन्या भ्रूण हत्या विषय पर विधिक साक्षरता शिविर का आयोजन किया गया। शिविर में अपर जिला एवं शस्त्र न्यायाधीश-सचिव जिला विधिक सेवा प्राधिकरण ओमप्रकाश मिश्र तृतीय द्वारा कन्या भ्रूण हत्या के विषय पर जानकारी दी गई।

उन्होंने ने कहा कि कन्या भ्रूण हत्या को रोकने के लिए भारत में गर्भधारण पूर्व एवं प्रसव पूर्व निदान तकनीक लिंग चयन पर रोक अधिनियम पीसीपीएनडीटी अधिनियम 1994 में लागू हुआ था। जो 20 सितंबर 1994 को प्रभावी हुआ। अधिनियम के तहत भ्रूण के लिंग का निर्धारण करना गैर कानूनी है। इसके अतिरिक्त पॉक्सो एक्ट से संबंधित जानकारी दी गई। नगर कलान के चेयरमैन हरनारायण गुप्ता ने कन्या भ्रूण हत्या को पाप बताया। थाना प्रभारी कलान प्रभाष चंद्र ने कहा कि आज कल लोग ज्यादातर साइबर ठगी के शिकार हो जाते हैं, कई बार फोन पर ओटीपी संबंधित फोन आते हैं, किसी भी अंजान व्यक्ति को ओटीपी शेयर न करें। शिविर में उपस्थित प्राविधिक स्वयंसेवक राममूर्ति कश्यप,सभासद संदीप गुर्जर, राजस्व निरीक्षक विश्राम सिंह, भूपेंद्र कश्यप आदि विद्यालय स्टॉफ, छात्र एवं छात्राएं मौजूद रहीं।

बाल श्रम के विरुद्ध निकाली जागरुकता रैली

कार्यालय संवाददाता, शाहजहांपुर

अमृत विचार: ऑपरेशन मुक्ति के तहत बाल विवाह एवं बाल श्रम के विरुद्ध रेलवे स्टेशन पर रैली निकालकर जागरूक एवं रेस्क्यू अभियान चलाया गया। इस दौरान यात्रियों को हेल्पलाइन 1098 की उपयोगिता के विषय में विस्तार से जानकारी दी गई।

चाइल्ड हेल्पलाइन के समन्वयक विनय कुमार शर्मा ने बच्चों की समस्याओं की रिपोर्टिंग में भूमिका को रेखांकित किया। उन्होंने कहा कि किसी दुकान या फैक्ट्री में बच्चे काम कर रहे है ओर बाल विवाह की जानकारी मिले तो उसकी सूचना तुरंत हेल्पलाइन नंबर को दे। सरंक्षण अधिकारी निकेत कुमार सिंह ने बाल विवाह एवं बाल श्रम उन्मूलन के लिए कानूनों और समाज की जिम्मेदारी प्रकाश डाला।

उन्होंने बताया कि जिला प्रोबेशन अधिकारी गौरव मिश्रा के मार्ग दर्शन में 30 नवंबर तक विभिन्न स्थानों पर संचालित किया जाएगा, जिसका उसका उद्देश्य बाल विवाह एवं बाल श्रम जैसी कुरीतियों के प्रति जागरूकता फैलाना तथा आवश्यकतानुसार रेस्क्यू की कार्रवाई करना है। इस दौरान रेलवे परिसर में संगोष्ठी का भी आयोजन किया गया। इस अवसर पर एसएस पीएस तोमर, आरपीएफ प्रभारी निरीक्षक जितेंद्र कुमार, जीआरपी थाना प्रभारी अनिल प्रकाश, महिला सिपाही कांतो देवी, रोहित कुमार, शिव सागर, प्रतिभा मिश्रा, कीर्ति मिश्रा, सुधीर कुमार आदि मौजूद रहे।

स्टेशन परिसर में निकली गई रैली। ● अमृत विचार

परमवीर चक्र नायक यदुनाथ सिंह की याद में हुआ कार्यक्रम

शाहजहांपुर, अमृत विचार: भारतीय युवा चेतना मंच एवं अखिल भारतीय पूर्व सैनिक सेवा परिषद की ओर से परमवीर चक्र नायक यदुनाथ सिंह की स्मृति में हुई प्रतियोगिता का पुरस्कार वितरण रोजा के हरि कौशल त्यागी पब्लिक स्कूल हरिकिशन त्यागी मार्ग रोजा में किया गया। मुख्य अतिथि कर्नल जगवीर सिंह जागलान एवं विशिष्ट अतिथि पुलिस इंस्पेक्टर गंगा सिंह ने बच्चों को पुरस्कार एवं प्रमाण पत्र प्रदान कर सम्मानित किया। आयोजक भारतीय युवा चेतना मंच एवं अखिल भारतीय पूर्व सैनिक सेवा परिषद की तरफ से नरेंद्र त्यागी, रमेश दीक्षित ,प्रदीप मिश्रा, योगेन्द्र त्यागी, सुदेश मिश्रा से प्राप्त जानकारी के अनुसार जनपद के विभिन्न स्कूलों के 97 बच्चों ने परीक्षा दी।

MEDICAL Lifelines OF BAREILLY अमृत विचार
विज्ञापन हेतु सम्पर्क करें :- 8445507002

फोकस नेत्रालय
राजेन्द्र नगर, बरेली 731-098-7005
● 40,000 से अधिक सफल सर्जरी सम्पन्न
● बिना इंजेक्शन एनेस्थीसिया (केवल आई ड्राप्स द्वारा)
● आयुष्मान/सीजीएचएस/ईसीएचएस/सीएपीएफ सभी स्वास्थ्य बीमा मान्य
● कैशलेस ईलाज
बरेली का सबसे बड़ा केवल आँखों के लिए समर्पित प्राइवेट अस्पताल ...
नवीनतम AI तकनीक एवं NABH मान्यता के साथ

डॉ. नितिन अग्रवाल
एम.डी. (गोल्ड मेडिलिस्ट), डी.एम. (कार्डियोलॉजी)
हृदय रोग विशेषज्ञ मो. 9457833777
2D ECHO + TMT
हृदय रोग के लक्षण : ■ घबराहट ■ छाती में दर्द या भारीपन ■ सांस फूलना ■ पैरों में सूजन ■ हाई ब्लडप्रेशर ■ हाई कोलेस्ट्रोल ■ डाइबिटीज (शुगर) ■ सीने या पेट में जलन या दर्द ■ हार्ट अटैक ■ हार्ट फेल
APPLE CARDIAC CARE
ए-3, एकता नगर, केयर अस्पताल के सामने, स्टेडियम रोड, बरेली। सम्पर्क करें:- 9458888448

डॉ. हारिस अंसारी
एम.एस., एम.सी.एच. (यूरोलॉजी)
Consultant Urologist & Andrologist
गुर्दा, प्रोस्टेट, पेशाब की थैली की पथरी व कैंसर सर्जन
● प्रोस्टेट (गदूद का आपरेशन) (TURP) ● गुर्दे की पथरी का आपरेशन (PCNL) ● गुर्दे की नली (यूरेटस) की पथरी का ऑपरेशन (URSL) ● पेशाब के समस्त प्रकार के रोगों का इलाज
कैशलेस, इंश्योरेंस, TPA व ESI आयुष्मान से अनुबन्धित अस्पताल
डॉ. एम. खान हॉस्पिटल
मल्टी स्पेशलिटी व क्रिटिकल केयर सेन्टर स्टेडियम रोड, निकट सेंट फ्रांसिस स्कूल, बरेली
समय दोपहर 12 से शाम 4 बजे तक हेल्पलाईन 9837549348, 98978382286

एक सम्पूर्ण दैनिक अखबार

अमृत विचार के 6वें स्थापना दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं

एक सम्पूर्ण दैनिक अखबार
अमृत विचार के 6वें स्थापना दिवस
की हार्दिक शुभकामनाएं
बलजीत कौर पत्नी
देवेन्द्र सिंह (कुक्के)
ग्राम पंचायत रसवां कलां - खुटार

एक सम्पूर्ण दैनिक अखबार
अमृत विचार के 6वें स्थापना दिवस
की हार्दिक शुभकामनाएं

कुलविंदर कौर
ग्राम प्रधान
पत्नी
सरताज सिंह
ग्राम पंचायत
टोंडरपुर खुटार

एक सम्पूर्ण दैनिक अखबार
अमृत विचार के 6वें स्थापना दिवस
की हार्दिक शुभकामनाएं

नवदीप कौर
ग्राम प्रधान
पत्नी सतनाम सिंह
ग्राम पंचायत
खमरिया गदियाना
खुटार

एक सम्पूर्ण दैनिक अखबार
अमृत विचार के 6वें स्थापना दिवस
की हार्दिक शुभकामनाएं

गुरजीत कौर
ग्राम प्रधान
पत्नी
पलविन्दर सिंह
ग्राम पंचायत हंसपुर
खुटार

एक सम्पूर्ण दैनिक अखबार
अमृत विचार के 6वें स्थापना दिवस
की हार्दिक शुभकामनाएं

सतनाम सिंह
ग्राम प्रधान
ग्राम पंचायत
सुजानपुर - खुटार

एक सम्पूर्ण दैनिक अखबार
अमृत विचार के 6वें स्थापना दिवस
की हार्दिक शुभकामनाएं

विजय शंकर अवस्थी
(सोनू)
निवर्तमान भाजपा
मंडल अध्यक्ष, खुटार

VINEET JEWELLERS
22K & 18K Jewellery Showroom
Sadar Bazar, Shahjahanpur
9335510137, 8953745999 www.vineetjewellers.com

Introducing Complete Men's wear Raymond Dealer with Complete Tailoring
हमारे यहां दूल्हा एवं दुल्हन दोनों सजाए जाते हैं
RAJ SELECTION
Raymond
ये त्यौहार राज सलेक्शन्स के साथ
Ladies Suit, Lehenga Chunni, Kids Wear, Gents Suit,
Branded Jeans, Shirt/T-Shirt, Designer Saree

गोविन्द गंज, शाहजहांपुर
Pooran Singh (Sonu) +91 9415326726 Balvinder Singh +91 9415302726

अमृत विचार के छठवें स्थापना दिवस की हार्दिक शुभकामनाएं
सत्यानन्द मल्टी स्पेशलिटी हॉस्पिटल
मो. 8931002707, 8795944222
उपलब्ध विभाग
1. नवजात शिशु एवं बाल रोग विभाग 2. स्त्री एवं प्रसूति विभाग 3. निश्चेतना विभाग 4. प्लास्टिक सर्जरी 5. ई.एन.टी. विभाग 6. यूरो सर्जरी विभाग 7. गैस्ट्रो रोग विभाग 8. कैंसर रोग विभाग 9. रेडियोलॉजी विभाग 10. माइक्रोबायोलॉजी विभाग 11. पैथोलॉजी विभाग 12. हड्डी एवं जोड़ रोग विभाग 13. ओरोमेक्सिलो विभाग 14. बच्चों के सर्जन 15. मेडिसिन विभाग
सत्यानन्द डायग्नोस्टिक लैब मो. 7887297444
सत्यानन्द अल्ट्रासाउण्ड मो. 9695492222
एम्बुलेन्स वेन्टीलेटर युक्त मो. 8931002708
अजीजगंज, निकट वृंदावन गार्डन, शाहजहांपुर

अमृत विचार

बरेली, शनिवार, 22 नवंबर 2025

शाहजहांपुर

न्यूज ब्रीफ

कुक्कुट पालन प्रशिक्षण का समापन

बरेली, अमृत विचार : केंद्रीय पक्षी अनुसंधान संस्थान में शनिवार को पांच दिवसीय बैकयार्ड कुक्कुट पालन प्रशिक्षण का समापन हुआ। मुख्य अतिथि संस्थान के निदेशक डॉ. संदीप सरन ने कहा कि आगा खान फाउंडेशन जमीनी स्तर पर बैकयार्ड मुर्गीपालन को बढ़ावा दे रहा है और गरीब परिवारों को पोषण सुरक्षा के साथ अतिरिक्त आमदनी कराने में उनकी मदद कर रहा है। फाउंडेशन के डायरेक्टर रघुवेंद्र प्रताप सिंह, प्रधान वैज्ञानिक डॉ. दिव्या, समन्वयन डॉ. एमपी सागर आदि मौजूद रहे। प्रशिक्षण में फाउंडेशन के कर्मचारियों ने भाग लिया।

वालीबॉल ट्रायल की तिथि घोषित

बरेली, अमृत विचार : अंतर महाविद्यालयीय महिला और पुरुष वालीबॉल प्रतियोगिता का आयोजन संघटक राजकीय महाविद्यालय भदपुरा नवाबगंज की ओर से रुहेलखंड विश्वविद्यालय परिसर स्थित स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स में किया जाएगा। प्रतियोगिता में भाग लेने के लिए कॉलेज टीम का चयन ट्रायल के माध्यम से किया जाएगा। ट्रायल 25 नवंबर को सुबह 11 बजे से बरेली कॉलेज में आयोजित किए जाएंगे। क्रीड़ा सचिव विवेक डागर ने बताया कि खिलाड़ियों को ट्रायल में भाग लेना अनिवार्य है।

वक्फ संपत्तियों को पोर्टल पर कराएं दर्ज

बरेली, अमृत विचार : दरगाह आला हजरत से वक्फ संपत्तियों को जल्द से जल्द उम्मीद पोर्टल पर दर्ज कराने की अपील की गई है। दरगाह के सज्जादानशीन अहसन रजा कादरी (अहसन मियां) ने कहा कि वक्फ संपत्तियों को दर्ज करने की प्रक्रिया सरकार की ओर से उम्मीद पोर्टल पर चल रही है। उन्होंने कहा कि जिन मुतावल्लियों या जिम्मेदारों ने अब तक इस पोर्टल पर अपनी वक्फ संपत्ति दर्ज नहीं कराई है वो 5 दिसंबर से पहले दर्ज करा लें। क्योंकि वक्फ संपत्तियां हमारे बुजुर्गों की निशानी हैं। इसकी हिफाजत और रखरखाव का जिम्मा भी हम सब का है।

विधवा से शादी का झांसा देकर किया दुष्कर्म

बरेली, अमृत विचार : दूसरे समुदाय की विधवा महिला के साथ मुस्लिम युवक ने शादी का झांसा देकर दुष्कर्म किया। आरोप है कि दहेज के नाम पर महिला से एक लाख रुपये भी ले लिए लेकिन अब युवक शादी से इन्कार कर रहा है। युवती की तहरीर पर बारादरी थाने में युवक और उसके परिजनों पर रिपोर्ट दर्ज की गई है। बारादरी क्षेत्र के एक मोहल्ले की रहने वाली महिला ने बताया कि एक साल पहले उसके पति की मौत हो गई। उसकी जान पहचान शोएब से हुई। आरोप है कि शोएब ने खुद को अविवाहित बताकर महिला से निकाह का वादा किया और उसके भरोसे का फायदा उठाकर कई बार शारीरिक संबंध बनाए। इस दौरान दहेज के नाम पर उसने करीब 1 लाख रुपये भी हड़प लिए। इसके बाद वह शादी करने से इन्कार करने लगा।

स्पर्धा में जय नारायण की टीम रही प्रथम

बरेली, अमृत विचार : राजकीय इंटर कॉलेज में शुक्रवार को मंडल के माध्यमिक विद्यालयों के छात्र-छात्राओं की महादेवी वर्मा वाद-विवाद प्रतियोगिता हुई। वर्तमान जीवन प्रणाली एवं पनपता अवसाद विषय पर आयोजित प्रतियोगिता में जयनारायण सरस्वती विद्या मन्दिर इंटर कॉलेज के अनुभव रस्तोगी और अमूल्य श्रीवास्तव ने मंडल में प्रथम स्थान प्राप्त किया। बदायूं की बालिकाओं को द्वितीय स्थान प्राप्त हुआ।

तालाब-पोखरों की सुरक्षा और जल संसाधन संरक्षण पर जोर

मत्स्य प्रकोष्ठ सहकार भारती ने अवैध कब्जों से जल स्रोत के खत्म होने पर जताई चिंता

कार्यालय संवाददाता, शाहजहांपुर

अमृत विचार: सहकार भारती एवं बहुउद्देशीय मत्स्यजीवी सहकारी समिति लिमिटेड सदर शाहजहांपुर की ओर से विश्व मात्स्यिकी दिवस पर कार्यक्रम आयोजित किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता करते हुए प्रदेश प्रमुख मत्स्य प्रकोष्ठ सहकार भारती अभिनव कश्यप ने जल संसाधनों की सुरक्षा को अत्यंत आवश्यक बताया।

उन्होंने कहा कि प्रदेश में जल कृषिकी को आगे बढ़ाने के लिए ग्रामीण क्षेत्रों में मौजूद तालाबों, पोखरों, जलाशयों और झीलों को संरक्षित करना बेहद जरूरी है। इन जल स्रोतों पर लगातार अवैध कब्जे हो रहे हैं और कई स्थानों पर तालाब समतल कर खेती अथवा निर्माण के लिए इस्तेमाल किए जा रहे हैं। यह प्रवृत्ति पर्यावरण, जल संचयन और मत्स्य पालन-तीनों के लिए घातक है।

उन्होंने संविधान के अनुच्छेद 21 का उल्लेख करते हुए कहा कि जल स्रोतों का संरक्षण न केवल

विश्व मात्स्यिकी दिवस पर आयोजित कार्यक्रम में प्रतिभाग करते विशेषज्ञ।

पर्यावरणीय दायित्व है बल्कि कानूनी जिम्मेदारी भी है। जलाशय सुरक्षित रहेंगे तो मत्स्य पालन बढ़ेगा, रोजगार उपलब्ध होंगे, ग्रामीण क्षेत्रों की आय बढ़ेगी और गांवों को अतिरिक्त राजस्व प्राप्त होगा। इससे पर्यावरण भी सुरक्षित रहेगा और पशुओं के लिए जल की उपलब्धता बनी रहेगी।

अभिनव कश्यप ने नीली अर्थव्यवस्था को मजबूत करने पर बल देते हुए कहा कि मत्स्य पालन के साथ-साथ मूल्य संवर्धन, ब्रांडिंग और पैकेजिंग पर ध्यान दिया जाए, जिससे उत्तर प्रदेश मत्स्य उत्पादन में अग्रणी राज्य बन सके। उन्होंने सभी उपस्थित लोगों से संकल्प लेने की अपील की। कार्यक्रम में अन्य वक्ताओं ने भी अपने विचार रखे। कन्हैया लाल कश्यप ने ग्रामीण युवाओं को मत्स्य पालन अपनाने की जरूरत बताई। देवेश त्रिपाठी ने कहा कि मत्स्य पालन का पौराणिक महत्व है और वेद-पुराणों में इसका उल्लेख मिलता है। राम बाबू कश्यप ने कहा कि मत्स्य पालन सभी जातियों और समुदायों के लिए रोजगार का उत्कृष्ट माध्यम है और विभाग द्वारा पूरी मदद दी जाती है। सुशील वर्मा

- **मत्स्य पालन से ग्रामीण रोजगार और नीली अर्थव्यवस्था मजबूत करने का आह्वान**

ने मत्स्य उद्योग को बेहतर रोजगार विकल्प बताया। सर्वेश गुप्ता ने समितियों में सेवानिवृत्त व वरिष्ठ नागरिकों को जोड़ने पर जोर दिया ताकि उनके अनुभव से नए लोगों को मार्गदर्शन मिल सके। मदन कश्यप और विपिन त्रिपाठी ने कहा कि समितियों के माध्यम से नवयुवाओं को रोजगार उपलब्ध कराया जा सकता है। शिवनंदन सागर ने कहा कि मत्स्य पालन कम लागत में अधिक लाभ देने वाला क्षेत्र है। समिति को चाहिए कि ब्लॉक स्तर पर गांव-गांव जाकर जागरूकता अभियान चलाए और अधिक से अधिक लोगों को योजनाओं के बारे में जानकारी देकर जोड़ें। कार्यक्रम में शिवम कश्यप, राजेश कुमार कश्यप, प्रभात वर्मा समेत कई लोगों ने सहभागिता की। अंत में शिवनंदन सागर ने सभी उपस्थित लोगों का आभार व्यक्त कर कार्यक्रम का समापन किया।

250 ट्रेनों में लगेगी फॉग सेफ डिवाइस

बरेली, अमृत विचार: कोहरे में ट्रेनों की रफ्तार पर असर न पड़े इसके लिए इज्जतनगर मंडल की 250 ट्रेनों में फॉग सेफ डिवाइस लगाई गई हैं। इसके अलावा क्रॉसिंग पर लगे बैरियर पर ल्यूमिनस स्ट्रिप लगाई गई हैं।

वरिष्ठ मंडल वाणिज्य प्रबंधक संजीव शर्मा ने बताया कि सुरक्षित एवं संरक्षित रेल यात्रा, रेलवे की पहली प्राथमिकता है। सर्दी में इज्जतनगर मंडल क्षेत्र में कोहरे का प्रभाव रहता है, जिसे ध्यान में रखते हुए सुरक्षित ट्रेन संचालन के लिए सभी तैयारियां पूरी कर ली गई हैं। सभी प्रकार के सिग्नल पोस्टों पर ल्यूमिनस स्ट्रिप लगाई गई हैं और सिग्नल साइटिंग बोर्ड पर लाइन मार्किंग करा दी गई है। क्रॉसिंग पर लगे बैरियर पर ल्यूमिनस स्ट्रिप लगाई गई हैं। इज्जतनगर मंडल पर कुल 250 फॉग सेफ डिवाइस की व्यवस्था की गई है। कोहरे के दौरान सुरक्षित और तेज ट्रेन संचालन में आधुनिक जीपीएस आधारित फॉग सेफ डिवाइस का महत्वपूर्ण योगदान है। इस डिवाइस के उपयोग में आने के पूर्व कोहरे के दौरान अधिकतम गति 60 किमी प्रति घंटा अनुमेय थी, जबकि फॉग सेफ डिवाइस के लग जाने के बाद अधिकतम अनुमेय गति 75 किमी प्रति घंटा हो गई। अब ट्रेनें कोहरे के दौरान 25 प्रतिशत ज्यादा गति से चल सकती हैं।

ग्रामीण खेल लीग सिंधौली में आरंभ, युवाओं में उत्साह

संवाददाता, सिंधौली

- **विधायक चेतराम और चेयरमैन संजय गुप्ता ने किया उद्घाटन**

अमृत विचार: उत्तर प्रदेश ग्रामीण खेल लीग के अंतर्गत सिंधौली क्षेत्र में दो दिवसीय खेलकूद प्रतियोगिता का शुभारम्भ पुवाया विधायक चेतराम और पुवायां चेयरमैन संजय गुप्ता ने फीता काटकर, दीप प्रज्ज्वलित कर और गुब्बारे उड़ाकर किया। कार्यक्रम में नोडल अधिकारी एवं जिला कृषि रक्षा अधिकारी संजय कुमार तथा जिला व्यायाम शिक्षक सत्येंद्र सिंह की देखरेख में सब जूनियर, जूनियर और सीनियर स्तर की प्रतियोगिताएं आयोजित की गईं। बीडीओ राम प्रकाश राणा ने पूरे कार्यक्रम का पर्यवेक्षण किया।

विधानसभा क्षेत्र के युवाओं ने प्रतियोगिताओं में उत्साहपूर्वक प्रतिभाग किया। कार्यक्रम को संबोधित करते हुए विधायक चेतराम ने कहा कि खेल न केवल शरीर को स्वस्थ रखते हैं, बल्कि मानसिक विकास के साथ सरकारी रोजगार के अवसर भी उपलब्ध कराते हैं। उन्होंने अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ी ममता सागर का उदाहरण देते हुए कहा कि उन्होंने कोरिया सहित कई देशों में भारत के लिए स्वर्ण पदक जीता है, जो क्षेत्र की प्रतिभाओं के लिए प्रेरणा है। प्रतियोगिता परिणामों में 400 मीटर सीनियर बालक वर्ग में रितिक सिंह प्रथम, सत्यम सिंह द्वितीय और सत्येंद्र सिंह तृतीय स्थान पर रहे। सब जूनियर बालिका वर्ग में उपासना देवी, अंशिका सिंह और शिखा ने क्रमशः पहला, दूसरा और तीसरा स्थान हासिल किया। जूनियर बालक वर्ग में गुरपाल सिंह प्रथम, सोहित द्वितीय और आर्यन पटेल तृतीय रहे। जूनियर बालिका 400 मीटर दौड़ में बबली प्रथम, बबीता द्वितीय और गौरी तृतीय स्थान पर रहीं। जूनियर बालक 200 मीटर दौड़ में दीपक ने प्रथम, मुनीब सिंह ने द्वितीय और विशाल कुमार ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। वॉलीबॉल स्पर्धाओं में सब जूनियर बालिका वर्ग में पुवाया विजेता घोषित हुई। वॉलीबॉल जूनियर बालक वर्ग में खुटार की टीम विजेता और बंडा उपविजेता रही।

इस अवसर पर अंतरराष्ट्रीय खिलाड़ी अजय पाल वर्मा, एमए पब्लिक स्कूल सिंधौली के प्रबंधक मोहम्मद आसिफ अली मंसूरी, उमेश सिंह फौजी, वीओ अनुराग, शुभम सिंह, राहुल उपाध्याय, ऋषिपाल सिंह, रत्नाकर दीक्षित, पीटीआई अफरोज खान, संजीव कुमार, राजीव कुमार वर्मा समेत अन्य रहे।

व्हाइट कोट पहन कर ली चरक की शपथ

कार्यालय संवाददाता, बरेली

- **बरेली इंटरनेशनल विवि के रोहिलखंड मेडिकल कॉलेज एंड हॉस्पिटल के छात्रों को दिलाई शपथ**

अमृत विचार : बरेली इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी के रोहिलखंड मेडिकल कालेज एंड हॉस्पिटल में शुक्रवार को व्हाइट कोट सेरेमनी को आयोजन हुआ। जिसमें एमबीबीएस पाठ्यक्रम के वर्ष 2025 के नव प्रवेशित विद्यार्थियों को प्रधानाचार्य डॉ. रजनीश पठानिया ने चरक शपथ ग्रहण कराई।

कार्यक्रम का आरंभ मुख्य अतिथि अमेरिका के न्यूजर्सी से आए वरिष्ठ यूरोसर्जन डॉ. आफताब, बरेली इंटरनेशनल यूनिवर्सिटी के कुलाधिपति डॉ. केशव कुमार अग्रवाल, प्रतिकुलाधिपति डॉ. अशोक कुमार अग्रवाल, कुलपति डॉ. लता अग्रवाल व प्रतिकुलपति डॉ. किरन अग्रवाल ने दीप प्रज्ज्वलित कर किया।कुलाधिपति डॉ. केशव अग्रवाल ने सभी छात्र-छात्राओं को बधाई का पात्र बताते हुए कहा कि वे आने वाले समय में एक अच्छे चिकित्सक बनेंगे। उन्होंने रोहिलखंड मेडिकल कॉलेज के चयन के रूप में प्रदेश के सर्वश्रेष्ठ मेडिकल कॉलेज का चयन किया है। उन्होंने बताया कि रोहिलखंड मेडिकल कॉलेज एक रैगिंग मुक्त संस्थान है। उन्होंने छात्र-छात्राओं से मरीजों के हित में अच्छे आचरण के साथ उनका उपचार बिना किसी भेदभाव से करने को कहा। प्रति कुलाधिपति डॉ. अशोक अग्रवाल ने नवागत छात्र- छात्राओं को पढ़ाई के साथ-साथ योग व खेल आदि में भी में रुचि दिखाने की सलाह दी। उन्होंने बताया कि खेल व योग से छात्र खुद को मानसिक तनाव से मुक्त रख सकते हैं। खेलों से एक अच्छे शरीर का निर्माण होता है, जिसमें एक अच्छे मस्तिष्क का वास होता है। कुलपति डॉ. लता अग्रवाल ने डायसेक्शन हाल में प्रारंभिक सुरक्षा के लिए महत्वपूर्ण सुझाव दिए, जैसे कि डायसेक्शन हाल में छात्राएं अपने बालों को पूरी तरह चोटी बांधकर जाएं, जिससे संक्रमण होने का खतरा न रहे।

ब्लॉक खेलकूद प्रतियोगिता में संडा खास बना चैंपियन

संवाददाता, निगोही

अमृत विचार: विकास क्षेत्र निगोही में आयोजित दो दिवसीय ब्लॉक स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिता का समापन उत्साह और जोश के साथ हुआ। राष्ट्रीय शैक्षिक महासंघ के जिला महामंत्री महेंद्र सिंह ने मां सरस्वती की प्रतिमा के समक्ष दीप प्रज्ज्वलित कर प्रतियोगिता के द्वितीय दिवस की शुरुआत की।

उच्च प्राथमिक विद्यालय ढकिया तिवारी के खेल मैदान में आयोजित प्रतियोगिता में ब्लॉक की सभी न्याय पंचायतों के बच्चों ने पूरे उत्साह के साथ प्रतिभाग किया। एथलेटिक्स में बच्चों ने दमदार प्रदर्शन किया। 100 मीटर बालिका वर्ग में अनामिका प्रथम, देवकी द्वितीय और आरुषि तृतीय स्थान पर रहीं, जबकि बालक वर्ग में नितिन ने पहला, छत्रपाल ने दूसरा और अभिषेक ने तीसरा स्थान हासिल किया। 200 मीटर दौड़ में बालक वर्ग में प्रिंस और बालिका वर्ग में रीना ने प्रथम स्थान प्राप्त किया। 800 मीटर बालक वर्ग में हर्षित ने स्वर्ण पदक जीता और 600 मीटर बालिका वर्ग

समारोह में विजेता खिलाड़ी को मेडल पहनाते अतिथि। ● अमृत विचार

कबड्डी मुकाबले में प्वाइंट के लिए जोर लगाते खिलाड़ी। ● अमृत विचार

- **अजमतपुर उपविजेता, कई स्पर्धाओं में खिलाड़ियों ने दिखाया दम**
- **सन्डा खास ने एथलेटिक्स कबड्डी और खो-खो में दबदबा बनाए रखा**

में रीना ने अव्वल स्थान प्राप्त कर सबका ध्यान आकर्षित किया। टीम स्पर्धाओं में भी सन्डा खास ने अपना वर्चस्व कायम रखा। कबड्डी बालक वर्ग में सन्डा खास विजेता और अज़मतपुर उपविजेता रहा, जबकि बालिका वर्ग में सन्डा खास विजेता और निगोही उपविजेता रहा। खो-खो बालक वर्ग में सन्डा खास विजेता और सतनुआ उपविजेता रहा तथा बालिका वर्ग में भी सन्डा खास विजेता और अज़मतपुर उपविजेता घोषित हुआ। फील्ड स्पर्धाओं में रतनपाल ने लंबी कूद में पहला और दिव्यांश ने दूसरा स्थान हासिल किया, जबकि बालिका वर्ग में रीना प्रथम और प्रिया द्वितीय रहीं। चक्का फेंक बालक वर्ग में आदित्य और बालिका वर्ग में रीना ने पहला स्थान प्राप्त किया। गोला फेंक स्पर्धा में मधुकर (बालक) और रीना (बालिका) ने स्वर्ण पदक अपने नाम किए। समापन समारोह में वरिष्ठ शिक्षक पुत्तू लाल श्रीवास्तव और सुरेंद्र पाल सिंह ने विजेता खिलाड़ियों को मेडल और ट्रॉफी प्रदान की तथा जिला और मंडल स्तरीय प्रतियोगिताओं के लिए शुभकामनाएं दीं। जिला महामंत्री महेंद्र सिंह ने कहा कि जल्दी ही जिला स्तरीय प्रतियोगिता आयोजित की जाएगी और इसके बाद मंडल स्तरीय प्रतियोगिता जिला शाहजहांपुर में होगी, जिसके लिए सभी खिलाड़ियों को निरंतर अभ्यास करने की आवश्यकता है। कार्यक्रम का संचालन ब्लॉक व्यायाम शिक्षक संजय सक्सेना ने किया। निर्णायक मंडल में अवधेश कुमार, तौकीर अहमद, विनोद कुमार, अमित गुप्ता, आलोक कुमार, त्रिभुवन नाथ, गिरजेश मिश्रा और आशीष बाजपेई शामिल रहे। प्रतियोगिता को सफल बनाने में सुरेंद्र पाल सिंह, पुत्तू लाल श्रीवास्तव, सुरेश पाल कुशवाहा, राजेंद्र प्रसाद, अनमोल वर्मा, अर्चना राजपूत, रंजना पाल, आशा सक्सेना, सर्वेश यादव, अवनीश पाल, कुशवाहा कांत, अंकित वर्मा, रवि वर्मा, सुरेश चंद्र वर्मा, घनेंद्र यादव, अनिल कुमार, रामौतार, विजेंद्र पाल, संदीप सक्सेना, मतीन अली और राहुल दिवाकर सहित कई शिक्षकों ने महत्वपूर्ण सहयोग दिया।

जिम संचालक और ट्रेनर समेत छह पर रिपोर्ट दर्ज

बरेली, अमृत विचार: जिम ट्रेनर के पास दूसरे समुदाय की महिला के मिलने के बाद हंगामे के मामले में पुलिस ने जिम संचालक, ट्रेनर समेत छह लोगों पर रिपोर्ट दर्ज कर ली है।

कर्मचारी नगर इलाके में स्थित एक जिम पर दूसरे समुदाय की महिला अपने पति और बच्चे को छोड़कर जिम ट्रेनर शोएब के साथ रह रही थी। उसकी जिम ट्रेनर से इंस्टाग्राम के जरिए दोस्ती हुई थी। वह भी शोएब के साथ जिम में ही ट्रेनर के रूप में काम कर रही थी। युवती के भाई को पता चला तो वह गुरुवार रात बहन को लेने के लिए जिम पहुंचे। इसके बाद शोएब और जिम मालिक अभय उपाध्याय के साथ युवती को लेकर विवाद हुआ। जब भाई ने बहन को जिम से लेकर जाने की कोशिश की, तो जिम मालिक और उसके सहयोगियों ने हमला कर दिया।

चोरों ने काटे एसी के तार, जांचें प्रभावित

बरेली, अमृत विचार: तीन सौ बेड अस्पताल में चोरों ने सीटी स्कैन यूनिट के एसी के तार काटकर चोरी कर लिए। इसकी वजह से शुक्रवार को मरीजों की सीटी स्कैन की जांचें प्रभावित हुईं। अस्पताल प्रबंधन की ओर से पुलिस को सूचना दे गई है। शुक्रवार को सुबह जब कर्मचारियों ने यूनिट का ताला खोलने के बाद एसी ऑन किया तो एसी नहीं चले।

दुष्कर्म के आरोपी की जमानत अर्जी खारिज

विधि संवाददाता, बरेली: 12 साल की बच्ची से दुष्कर्म करने के आरोपी ऊधमसिंह नगर के रूद्रपुर निवासी मुकेश कुमार की जमानत अर्जी स्पेशल जज पॉक्सो एक्ट कोर्ट नरेंद्र प्रकाश ने खारिज कर दी। सरकारी वकील सुभव कुमार मिश्रा ने बताया कि पीड़िता के पिता ने थाना शीशगढ़ में तहरीर देकर बताया था कि करीब एक माह पूर्व पकौड़ी लेने के बेटी जा रही थी तभी रास्ते में गांव का ही मुकेश मिला और उसकी पुत्री को बहला फुसलाकर अपने खेत पर ले गया और दुष्कर्म किया। इस दौरान अश्लील वीडियो व फोटो भी बना लिए। वीडियो वायरल करने की धमकी देकर ब्लैकमेल कर मुर्गी फॉर्म पर बुलाकर 2-3 बार फिर दुष्कर्म किया। पुलिस ने पॉक्सो एक्ट, में रिपोर्ट दर्ज की।

न्यूज ब्रीफ

घर से बिना बताए निकला किशोर लापता

विजय नगला, अमृत विचार : घर पर बिना बताए निकला किशोर लापता हो गया है। उसके परिजनों ने पुलिस को सूचना दी। पुलिस ने गुमशुदगी दर्ज करक किशोर की तलाश शुरू की है। थाना बिनावर क्षेत्र के गांव नाई निवासी गंगा प्रसाद पुत्र लाल जमनालाल ने प्रार्थना पत्र देकर बताया कि उनका 16 साल का बेटा संगम 17 नवंबर शाम लगभग 6 बजे घर पर बिना बताए कहीं चला गया था। जिसके बाद वह वापस नहीं लौटा है। देर शाम तक वापस न आने पर परिजनों ने उसे तलाश किया लेकिन कहीं पता नहीं चला है। रिश्तेदारी में भी जानकारी की। फिर उसके बारे में किसी भी प्रकार की जानकारी नहीं मिल सकी।

तमंचे के बल अपहरण करने का आरोप

उस्मानपुर, अमृत विचार : एक युवक संदिग्ध परिस्थितियों में लापता हो गया। परिजनों ने तमंचे के बल अपहरण करने का आरोप लगाया है। थाना जरीफनगर क्षेत्र के गांव मलिकपुर बिचौला निवासी एक युवक लापता हो गया। परिजनों ने तहरीर देकर जमीन की रंजिश के चलते युवक के अपहरण की आशंका जताई है। रानी ने तहरीर देकर बताया कि उनके पति पप्पू सिंह उर्फ रामभरोसे शुक्रवार रात लगभग 3 बजे अपने पिता रामभरोसे, राजाराम के साथ खेत पर सिंचाई कर रहे थे। इसी दौरान गांव निवासी दो लोग अन्य तीन लोगों के साथ पहुंचे। गाली-गलौज करते हुए मारपीट की। तमंचे के बल पर अपने साथ ले गए। पति का कई जगह तलाश करने के बाद भी कहीं पता नहीं चल सका है। थानाध्यक्ष सुमित कुमार शर्मा ने कहा कि घटना संदिग्ध लग रही है। दो पक्ष में जमीन का विवाद है। जांच की जा रही है। जल्द ही खुलासा किया जाएगा।

शेखूपुर चीनी मिल पहुंचा 50 हजार क्विंटल गन्ना

हवन पूजन के बाद फीता काटकर शुरू किया गया पेराई सत्र

कार्यालय संवाददाता, बदायूं

फीता काटकर मिल में गन्ना पेराई सत्र का आरंभ करते सदर विधायक व अन्य।

अमृत विचार : दि किसान सहकारी चीनी मिल्स लिमिटेड के 49वें पेराई सत्र-2025-26 का आरंभ सदर विधायक महेश चन्द्र गुप्ता, पूर्व विधायक शेखूपुर धर्मेन्द्र शाक्य, प्रभारी जिलाधिकारी अपर जिलाधिकारी वित्त एवं राजस्व वैभव शर्मा ने हवन पूजन के बाद फीता काटकर किया।

सहकारी चीनी मिल शेखूपुर में गन्ना पेराई सत्र शुरू करने की कई दिनों से तैयारियां की जा रही थी। मिल प्रशासन ने मिल का पहले ट्रायल किया उसके बाद मिल में पेराई सत्र शुरू करने की तैयारी की। इसके तहत शुक्रवार को मिल परिसर को सजाया गया। मिल परिसर में ही टैंट लगा कर हवन पूजन किया गया। मिल गेट पर ग्राम शेखूपुर निवासी किसान अमरवती व ग्राम अल्लापुर भोगी निवासी अर्जुन सिंह की गन्ने से भरी प्रथम बैलगाडी एवं ट्रॉली की तौल कर पेराई सत्र का आरंभ किया। इसके पश्चात ढोगा पूजन, किसान कैंटीन का आरंभ व मिल के शिव मंदिर पर पूजन किया गया। मिल के सचिव व प्रधान प्रबंधक ने गन्ना कृषकों से अपील की हैं कि वह सत्र प्रारम्भ से ही मिल को स्वच्छ एवं ताजा पेड़ी गन्ने की आपूर्ति कराने में सहयोग प्रदान करें, ताकि उनके द्वारा आपूर्ति किए गए गन्ने का समयान्तर्गत भुगतान भी सुनिश्चित हो सके। मिल की सचिव एवं प्रधान प्रबंधक मणि अरोरा ने कहा कि किसानों को किसी तरह की दिक्कत नहीं होने दी जाएगी। किसानों का गन्ना समय से तौला जाएगा साथ ही भुगतान की प्रक्रिया भी शुरू कर दी जाएगी। इससे किसानों को समय से उनका पैसा मिल सके। उन्होंने कहा कि किसान अपना गन्ना मिल गेट पर ही लाएं। बिचौलियों के हाथ न बेचें। इस अवसर पर समस्त उपाध्यक्ष सोबरन सिंह, गन्ना किसान, मिल के अधिकारी और कर्मचारी उपस्थित रहे।

13 हजार क्विंटल प्रतिदिन है पेराई क्षमता

शुक्रवार को पहले दिन ही क्षेत्र के दर्जनों किसान गन्ना लेकर पहुंचे जिससे मिल परिसर में करीब 50 हजार क्विंटल गन्ना एकत्र हो गया। मिल की पेराई क्षमता करीब 13 हजार क्विंटल प्रतिदिन है। इस मानक के अनुसार करीब चार दिन तक निर्बाध गति से पेराई होगी। अब गन्ना किसान रात दिन गन्ना लेकर मिल गेट पर पहुंचेंगे।

पांच घंटे गुल रही 25 गांवों की बिजली लोग रहे परेशान

बदायूं, अमृत विचार : ढाक वाली जियारत से जुड़े 25 गांवों की लाइट पांच घंटे तक गुल रही। इससे लोगों को भारी परेशानी का सामना करना पड़ा। उपभोक्ताओं ने बिजली विभाग की लापरवाही पर भारी रोष जताया।

ढाक वाली जियारत से करीब दो दर्जन से अधिक गांवों को बिजली दी जाती है। शुक्रवार को सुबह से दोपहर तक सप्लाई दी गई उसके बाद दो बजे बिजली गुल हो गई, जो शाम 7 बजे तक शुरू नहीं की गई। बिजली गुल होने से झंडापुर रसूलपुर, सिमरिया, सूरजपुर, उदमई, उपरैला, सहित दो दर्जन गांवों में अंधेरा छाया रहा। बिजली विभाग ने उपभोक्ताओं को कोई जानकारी नहीं दी जिससे उपभोक्ता अधिकारियों को फोन करने लगे। शाम 7 बजे के बाद जब सप्लाई शुरू हुई तो उपभोक्ताओं ने राहत की सांस ली। लोगों ने बताया कि इस बिजली घर से आये दिन समस्या रहती है। लोग बिजली को परेशान रहते हैं। शेड्यूल के अनुसार बिजली नहीं दी जाती है। अघोषित कटौती को लेकर लोगों में रोष रहता है। आज भी ग्रामीणों ने बिजली विभाग के खिलाफ नाराजगी व्यक्त की।

दस साल पुराने विवाद में युवक को मारी गोली

संवाददाता, कुंवरगांव

जिला अस्पताल में भर्ती घायल जुगेंद्र।

- कुंवरगांव क्षेत्र के खासपुर गौटिया में दो पक्ष में चल रहा जमीन का विवाद

अमृत विचार : जमीन को लेकर तकरीबन 10 साल पुरानी रंजिश ने एक पक्ष ने युवक को गोली मारी और उनकी पत्नी के सिर पर वार करके घायल कर दिया। घायलों को जिला अस्पताल में भर्ती कराया गया है। पुलिस के अनुसार गोली मारने की बात झूठी है। पुलिस ने जांच शुरू कर दी है।

कुंवरगांव थाना क्षेत्र के गांव खासपुर गौटिया निवासी जुगेंद्र का दूसरे पक्ष से जमीन का विवाद चल रहा था। इसको लेकर आए दिन झगड़ा होता रहता था। पुलिस ने शांतिभंग में कार्रवाई की थी। शुक्रवार सुबह लगभग 8 बजे जुगेंद्र पत्नी रेनू और बहनोई के साथ खेत पर गए थे। यहां पहले से घात लगाए बैठे आधा दर्जन लोगों ने उनपर हमला कर दिया। लाठी-डंडां से पीटा।

आरोप है कि उन्होंने जुगेंद्र के सिर और पैर में गोली और रेनू के सिर में डंडा मारा। सूचना पर परिजन मौके पर पहुंचे। घायल पति-पत्नी को जिला अस्पताल में भर्ती कराया। परिजनों ने तहरीर दी है। उन्होंने बताया कि बताया जाता है कि लगभग 10 वर्ष से जुगेंद्र, नेत्रपाल, सूरजपाल का गांव के घासी राम के लड़कों दन्ना, सुरेन्द्र, ज्ञानचंद से पुरानी रंजिश चली आ रही है।

इस दौरान नेत्रपाल ने घासी राम को गोली मार दी थी। दोनों पक्ष अक्सर आमने-सामने आते रहे हैं। गुरुवार को भी झगड़ा हुआ था। पुलिस ने नेत्रपाल, जुगेंद्र का शांतिभंग में चालान किया था। पुलिस मामले की जांच कर रही है। थानाध्यक्ष राजेश कौशिक ने बताया कि दोनों पक्ष में विवाद चल रहा है। जुगेंद्र के चोट लगी है। गोली की बात झूठी है। जांच करके आगे की कार्रवाई की जाएगी।

ऑटो में सवार युवक से टप्पेबाजी में तीन आरोपी गिरफ्तार

बदायूं, अमृत विचार : उझानी पुलिस ने ऑटो में युवक के साथ टप्पेबाजी करने के तीन आरोपियों को गिरफ्तार किया है। उनके पास से 5100 रुपये बरामद हुए। तीनों ने अक्टूबर में एक लाख रुपये की टप्पेबाजी की थी। चेकिंग के दौरान पुलिस ने तीनों को पकड़ा। आरोपियों को जेल भेजा गया है।

पुलिस शुक्रवार को सरदार कोल्ड स्टोर के पास संदिग्ध व्यक्ति और वाहनों की चेकिंग कर रही थी। यहां संदिग्ध प्रतीत हुए ऑटो सवार शहर के मोहल्ला ऊपर पारा की नई बस्ती निवासी फहीम, फैजान उर्फ चिकना, मुशाहिद को गिरफ्तार किया। उन्होंने 26 अक्टूबर को ऑटो सवार उझानी क्षेत्र के गांव ननाखेड़ा निवासी अमजद पुत्र शेर मोहम्मद की जेब पर ब्लेड मारा और एक लाख रुपये की टप्पेबाजी कर ली थी। पुलिस ने अज्ञात पर रिपोर्ट दर्ज की थी। पुलिस ने गिरफ्तार किए गए आरोपियों का रिकॉर्ड चेक किया। फहीम पर आबकारी अधिनियम, बलवा, धमकाने, छेड़छाड़ और फैजान पर आबकारी अधिनियम, मारपीट, धमकाने की रिपोर्ट पहले से दर्ज हैं। गिरफ्तारी करने वाली टीम में उप निरीक्षक जुगमेंद्र बालियान, हेड कांस्टेबल भूपेंद्र सिंह, कांस्टेबल निशांत व मोहित चौहान रहे।

गंगा में उतराता मिला युवक का शव

उझानी, अमृत विचार : कोतवाली उझानी क्षेत्र में कछला स्थित गंगा में रेलवे पुल के नीचे एक शव उतराता मिला। मौके पर लोगों की भीड़ जमा हो गई। घाट पर मौजूद लोगों की सूचना पर कछला पुलिस मौके पर पहुंची। पुलिस ने शव को बाहर निकलवाया। शिनाख्त का प्रयास किया लेकिन जानकारी नहीं हो सकी। पुलिस ने शव को जिला अस्पताल की मोर्चरी में रखवाया है।

फर्जी रसीद देकर विद्युत उपभोक्ता को ठगा

कार्यालय संवाददाता, बदायूं

पीड़ित को दी गई फर्जी रसीद।

- पांच हजार की रसीद काटकर बिल में कम नहीं किए रुपये
- एसडीओ ने रसीद के फर्जी होने की पुष्टि की, वैन चालक गायब

अमृत विचार : विद्युत विभाग में बड़े पैमाने में बिजली बिल भुगतान के नाम पर धोखाधड़ी हो रही है। इसकी शिकायत पीड़ित ने कोतवाली बिजली घर पर की है। साथ ही बिल जमा करने के बाद फर्जी रसीद देने वाले के खिलाफ कार्यवाही की मांग की है। इसके बाद अन्य कई उपभोक्ताओं का आरोप है कि उनके बिल जमा करने के बाद भी बकाया दर्शाया जा रहा है।

ताजा मामला बरेली रोड स्थित आरिफपुर नवादा का है। नवादा निवासी बिजली उपभोक्ता रमेश चंद्र ने शहर की कोतवाली स्थित बिजली घर के एसडीओ को एक पत्र देते हुए बताया कि उसने 4 जुलाई को करीब पांच हजार रुपये का बिजली बिल एक वैन पर जमा किया था। वैन एक कंपनी की है जो शहर में जगह जगह खड़ी कर बिजली बिल जमा किए जाते हैं। 4 जून को वैन नई सराय के निकट खड़ी थी। पीड़ित ने वहीं पर 5007 रुपये का बिजली का बिल जमा किया। बिल की रसीद भी दे दी गई। जब कुछ माह बाद उपभोक्ता का बिल आया तो पांच हजार रुपये उसमें जमा नहीं किए गए थे। इस पर पीड़ित ने कोतवाली स्थित बिजली घर के उपखंड अधिकारी विद्युत वितरण को उक्त रसीद दिखाई जिस पर बताया गया कि यह रसीद फर्जी है। किसी ने पैसे लेकर फर्जी रसीद दे दी है। यह धनराशि बिल में जमा नहीं की गई है। यह पता लगते ही रमेश ने उच्चाधिकारियों के समक्ष यह मामला रखा, लेकिन किसी ने इस पर ध्यान नहीं दिया। अब पीड़ित इधर उधर भटक रहा है। विभाग के जिम्मेदार कुछ बोलने को तैयार नहीं है। पीड़ित का कहना है कि बिल जमा करने वाली उक्त वैन अब वहां पर खड़ी नहीं होती है। इससे ठगी करने वाला नहीं पकड़ा जा सका है। बिजली विभाग में अवैध वसूली और ठगी का धंधा काफी समय से चल रहा है। मीरा सराय निवासी कई लोगों ने बताया कि उन्होंने बिल जमा किया फिर भी उन पर बकाया है। शिकायत करने के बाद भी कोई कार्यवाही नही की गई। अधिशासी अभियंता प्रथम संजीव कुमार ने कहा कि इस तरह की शिकायत पहले भी मिल चुकी हैं। लेकिन ठग पकड़ में नहीं आ रहे हैं। मामले की जांच कराई जाएगी।

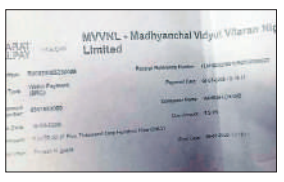

खुलासे में सीसीटीवी आया काम, प्रतिष्ठान स्वामी सम्मानित

बदायूं, अमृत विचार : खेड़ा बुजुर्ग के साईं मंदिर में पुजारी की हत्या की घटना के खुलासे में सीसीटीवी कैमरों की फुटेज का बहुत सहयोग मिला। इसके चलते एसएसपी डॉ. बृजेश कुमार सिंह ने प्रतिष्ठान स्वामी को प्रशस्ति पत्र देकर सम्मानित किया। सिविल लाइन कोतवाली क्षेत्र में 16 नवंबर की रात साईं मंदिर के पुजारी कुंवरगांव थाना क्षेत्र के कल्लिया काजमपुर निवासी मनोज शंखधार की गला दबाकर हत्या करके लूटपाट की गई थी। मौके पर अधिकारियों ने जांच पड़ताल की थी। फील्ड यूनिट ने साक्ष्य एकत्र किए थे। अज्ञात के खिलाफ मुकदमा दर्ज किया गया था। जांच के दौरान आरिफपुर नवादा निवासी सलीम के मुख्य मार्ग स्थित प्रतिष्ठान पर लगे सीसीटीवी कैमरे की फुटेज चेक की। पुलिस को अहम साक्ष्य मिले। इसके आधार पर पुलिस ने दो भाइयों समेत तीन आरोपियों को गिरफ्तार करके जेल भेजा था। जिसके चलते एसएसपी ने शुक्रवार को प्रतिष्ठान के मालिक सलीम को सम्मानित किया। एसएसपी ने सभी लोगों से आह्वान किया है कि असामाजिक तत्वों से सुरक्षा और निगरानी के लिए अपने घरों व प्रतिष्ठानों पर सीसीटीवी कैमरे लगवाएं। अप्रिय घटना होने पर सीसीटीवी के डाटा के आधार पर कार्रवाई की सके।

सलीम को सम्मानित करते एसएसपी डॉ. बृजेश कुमार सिंह।

निरीक्षण कर सीओ ने थाने के अभिलेख देखे

निरीक्षण करते सीओ सिटी।

विजय नगला, अमृत विचार : सीओ सिटी रजनीश कुमार उपाध्याय ने शुक्रवार को थाना बिनावर का औचक निरीक्षण किया। थाने के मालखाना, हवालात, मैस, साइबर व महिला हेल्प डेस्क, सीसीटीएनएस कार्यालय के अलावा अभिलेखों का भी रखरखाव देखा। आईजीआरएस पोर्टल पर प्राप्त शिकायतों के बारे में जानकारी की। पुलिस को क्षेत्र में गश्त बढ़ाने को निर्देशित किया।

कहा कि थाने पर आने वाले सभी लोगों की शिकायतों को सुनकर समयबद्ध व गुणवत्तापूर्ण तरीके से निस्तारण कराएं। इस दौरान थाना प्रभारी राजेंद्र सिंह, उपनिरीक्षक संजीव कुमार, रवींद्र शुक्ला, हेड मोहर्रिर मनोज निगम आदि उपस्थित रहे।

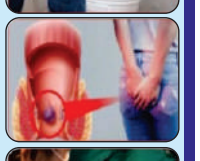

रोहिलखण्ड आयुर्वेदिक मेडिकल कॉलेज एण्ड हॉस्पिटल
पता : सेक्टर-7, राम गंगा नगर योजना, डोहरा रोड, बरेली
द्वारा आयोजित
नि:शुल्क भगन्दर, बवासीर/पाइल्स, नासूर, मस्से, PNS का चिकित्सा शिविर
धागा विधि (क्षारसूत्र) द्वारा भगन्दर, बवासीर/पाइल्स, नासूर, मस्से PNS आदि का सफल इलाज
परीक्षण, उपचार एवं ऑपरेशन अनुभवी चिकित्सकों द्वारा किया जाता है।
यदि आप निम्न लक्षणों से पीड़ित है तो एक बार अवश्य डोहरा रोड स्थित रोहिलखण्ड आयुर्वेदिक मेडिकल कॉलेज एण्ड हॉस्पिटल में दिखायें।
- शौच के समय मल द्वार से खून आना (बवासीर/मस्से/Piles)
- गुदामार्ग के पास फोड़ा होना, मवाद (पस) आना (नासूर/भगन्दर)
- कब्ज़ की शिकायत रहना
- शौच के समय दर्द एवं जलन रहना
- बच्चों के मलद्वार से खून आना, दर्द होना, कब्ज़ की शिकायत होना
- धागा विधि (क्षारसूत्र) द्वारा भगन्दर, बवासीर, PNS का सफल इलाज
- आधुनिक उपकरणों से सुसज्जित ऑपरेशन थियेटर
शिविर में आये हुये मरीजों की नि:शुल्क शुगर की जाँच
नि:शुल्क परामर्श

शिविर का स्थान
किरण हेल्थ केयर, सरकारी अस्पताल के गेट पर, नियम जगतपुर पुलिस चौकी, बरेली
दिनांक : 22-11-2025, शनिवार, समय प्रातः 10:00 बजे से दोपहर 01:00 बजे तक
शिविर का लाभ लेने के लिए निम्न नम्बर पर फोन करके रजिस्ट्रेशन करवायें
मो. 8077808309
नियमित सेवायें : क्षारसूत्र चिकित्सा की क्षारसूत्र विशेषज्ञों द्वारा चिकित्सा कमरा नं0 10

वरुण अर्जुन मेडिकल कॉलेज एवं रोहिलखण्ड अस्पताल
N.H.-30, बंथरा, शाहजहाँपुर, उत्तर प्रदेश
Radiation Oncology Department
Cancer Facilities (कैंसर उपचार एवं सुविधाएं)
कैंसर की सटीक जाँच (Accurate Diagnosis)
नवीनतम तकनीक द्वारा कैंसर की प्रारंभिक एवं सटीक पहचान की सुविधा
- बायोप्सी
- रेडियो इमेजिंग (CT, MRI)
- ब्लड मार्कर जाँच

कीमोथेरेपी (Chemotherapy)
- सभी प्रकार के कैंसर की कीमीथेरेपी द्वारा उपचार की पूर्ण व्यवस्था
कैंसर की पूर्ण देखभाल (Comprehensive Cancer Care)
- कैंसर रोगियों के लिए पोषण, काउंसलिंग एवं पुर्नवास सहायता
- व्यक्तिगत (Individualised) उपचार योजना
रेडिएशन ऑन्कोलॉजिस्ट परामर्श उपलब्ध
- कैंसर के हर चरण के लिए सही मार्गदर्शन व उपचार योजना उपलब्ध।
(प्रतिदिन ओ.पी.डी. कमरा नं. 171 में प्रातः 9:00 से सायं 4:00 बजे तक)
अधिक जानकारी के लिए सम्पर्क करें :- 7521001988, 7521001989

वरुण अर्जुन मेडिकल कॉलेज एवं रोहिलखंड अस्पताल
विशाल चिकित्सा शिविर
हड्डी रोग विभाग | स्त्री रोग विभाग | बाल रोग विभाग
शल्य रोग (सर्जरी) विभाग | मेडिसिन विभाग | चेस्ट एवं टी.बी. विभाग
नेत्र रोग विभाग | मानसिक रोग विभाग | चर्म रोग विभाग | नाक, कान, गला रोग विभाग
यह सुविधा 10 नवम्बर 2025 से प्रारंभ
समस्त रोगों के इलाज की उच्च स्तरीय सुविधाएं
रजिस्ट्रेशन शुल्क मात्र 50/- रुपये
डॉक्टर द्वारा परामर्श मुफ्त
भर्ती एवं पलंग मुफ्त
मुफ्त सामान्य ऑपरेशन (दवाओं का खर्च अतिरिक्त)
नार्मल व सिजेरियन डिलीवरी मुफ्त (दवाओं का खर्च अतिरिक्त)
भर्ती मरीजों का एक्स-रे मुफ्त
भर्ती मरीजों की सामान्य जांचें मुफ्त
भर्ती मरीजों का अल्ट्रासाउंड मुफ्त
भर्ती मरीजों का एमआरआई ब्रेन- रु. 2000/- एमआरआई स्पाईन- रु. 3000/- सीटी हेड- रु. 800/-
भर्ती मरीजों की दवाईयां भारी छूट पर
70 वर्ष से अधिक उम्र के व्यक्तियों के लिए मुफ्त आयुष्मान कार्ड बनवाने एवं मुफ्त उपचार की सुविधा।
(आयुष्मान भारत योजना के लाभार्थियों के लिए नि:शुल्क कार्ड एवं नि:शुल्क चिकित्सा की सुविधा उपलब्ध)
परिवार स्वास्थ्य कार्ड की सुविधा मात्र 200 रुपए में 1 वर्ष के लिए उपलब्ध।
वरुण अर्जुन मेडिकल कॉलेज एवं रोहिलखंड अस्पताल
NH-30, बन्थरा, शाहजहाँपुर, उ.प्र.-242307
मो.नं : 05842-297260, 05842-297360, 7521001988, 7521001989

अमृत विचार एक सम्पूर्ण अखबार
क्लासीफाइड
विज्ञापन हेतु सम्पर्क करें
9756905552, 8445507002

सूचना
सूचित किया जाता कि मकान नम्बर 267 बाग अहमद अली तालाब गंगापुर रोड बरेली जिसके सम्बन्ध में हिस्से को लेकर विवाद सिविल न्यायालय में विचाराधीन है जिसमें माननीय न्यायालय द्वारा मौके पर यथास्थिति बनाये रखे जाने का स्टे आदेश पारित किया गया है जिसकी प्रति संलग्न की जाती है। यदि उक्त मकान को कोई भी व्यक्ति क्रय करता है तो उसका समस्त उत्तरदायित्व उसी व्यक्ति का होगा। **रेशमा खातून पुत्री इश्तियाक उल हसन निवासी बिहारीपुर कहरवान बरेली**

सूचना
सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि मैंने अपने पुत्र जोगेन्द्र सिंह यादव को गलत आचरण एवं दुर्व्यवहार के कारण सम्बन्ध विच्छेद कर अपनी समस्त चल-अचल सम्पत्ति से बेदखल कर दिया है। भविष्य में उनके द्वारा किए गए किसी भी कृत्य के लिए वह स्वयं जिम्मेदार होंगे। मेरा व मेरे परिवार से कोई वास्ता नहीं होगा। **कल्लू यादव पुत्र श्री शिव लाल यादव निवासी 132, सिविल लाइन्स, चौपला बरेली, उ.प्र.**

सूचना
सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि मेरे आर्मी नं. 6933240वाई रैंक-हवलदार के सर्विस रिकार्ड में मेरी पत्नी का नाम भूलवश रीना रावत जन्मतिथि 30.05.1975 दर्ज हो गई है जबकि सही नाम रीना नेगी जन्मतिथि 02.08.1976 है। **पदम भूषण सिंह पुत्र श्री भीम सिंह नेगी निवासी भरतौल तह. व जिला बरेली।**

सूचना
सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि मेरे पुत्र के स्कूल के अभिलेखों में भूलवश नाम ABHAY PRATAP व जन्मतिथि 10.09.2014 जन्म हो गया है जबकि उसका वास्तविक नाम ABHAY व जन्मतिथि 10.09.2016 है। आधार कार्ड में भी यही नाम व जन्मतिथि दर्ज है। **राम मोहन पुत्र श्री बाबू राम निवासी ग्राम बिलहारी जिला शाहजहांपुर।**

सूचना
सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि मेरे पुत्र के स्कूल के अभिलेखों में भूलवश नाम AJAY PRATAP व जन्मतिथि 10.11.2015 जन्म हो गया है जबकि उसका वास्तविक नाम AKSHAY व जन्मतिथि 10.11.2017 है। आधार कार्ड में भी यही नाम व जन्मतिथि दर्ज है। **राम मोहन पुत्र श्री बाबू राम निवासी ग्राम बिलहारी जिला शाहजहांपुर।**

सूचना
सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि मेरी एम.कॉम. की डिग्री रोल नं. 6403352 इनरोलमेन्ट नं. 0671499 दिनांक 15.02.2012 को एम.जे.पी.आर.यू. द्वारा जारी की गई थी दिनांक 01.11.2025 को मेरे बैग के साथ चोरी हो गई है। **शफत अली खान पुत्र शौकत अली खान निवासी 666,667 बिहारीपुर सिविल लाइन बरेली।**

वैधानिक सूचना :- समाचार पत्र में प्रकाशित किसी भी विज्ञापन जैसे टावर सम्बन्धी, नौकरी सम्बन्धी, ऋण सम्बन्धी या अन्य किसी भी प्रकार के विज्ञापन में पाठकों को सावधान किया जाता है। विज्ञापनदाता द्वारा किये गये दावे या उल्लेख, समर्थन की पुष्टि समाचार पत्र नहीं करता है।

स्पेशल बैक परीक्षा में फेल छात्रों को एक और मौका

बरेली, अमृत विचार: रुहेलखंड विश्वविद्यालय ने सत्र 2024-25 की स्पेशल बैक परीक्षा में फेल छात्रों को एक और मौका दिया है। परीक्षा नियंत्रक संजीव कुमार के मुताबिक ऐसे छात्र जिन्होंने बैक परीक्षा का फार्म भरकर परीक्षा दी और फेल हो गए और जिन्होंने परीक्षा नहीं दी वह मुख्य परीक्षा वर्ष 2026 के स्नातक स्तर पर विषम सेमेस्टर में सिर्फ केवल पंचम सेमेस्टर और स्नातकोत्तर स्तर पर सिर्फ तृतीय सेमेस्टर बैक परीक्षा के आवेदन 22 नवंबर से विश्वविद्यालय की वेबसाइट पर ऑनलाइन भर सकेंगे। छात्रों को 27 नवंबर तक फार्म भरने होंगे और भरे हुए फार्म 28 नवंबर तक महाविद्यालय में जमा करने होंगे। महाविद्यालयों को भरे हुए फार्म 29 नवंबर तक ऑनलाइन जमा करने होंगे। स्नातक और स्नातकोत्तर प्रथम सेमेस्टर वर्ष मुख्य परीक्षा 2026 के फार्म भरने की तिथि अलग से जारी की जाएगी।

आजम के मामलों की सुनवाई से खुद को किया अलग

यतीमख़ाना मामले की सुनवाई के दौरान न्यायमूर्ति जैन ने अधिवक्ताओं की मौजूदगी में अचानक यह घोषणा की

विधि संवाददाता, प्रयागराज

अमृत विचार: समाजवादी पार्टी के वरिष्ठ नेता आजम खान से जुड़े मामलों की सुनवाई कर रहे इलाहाबाद हाईकोर्ट के न्यायमूर्ति समीर जैन ने अचानक स्वयं को इन सभी मामलों से अलग कर लिया। शुक्रवार को यतीमख़ाना मामले की सुनवाई के दौरान न्यायमूर्ति जैन ने अधिवक्ताओं की मौजूदगी में अचानक यह घोषणा की कि वह अब आजम खान से जुड़े किसी भी मामले की सुनवाई नहीं करेंगे। हालांकि उन्होंने इस निर्णय के पीछे कोई कारण नहीं बताया।

आजम खां।

न्यायमूर्ति जैन की एकलपीठ के समक्ष आजम खान के कुल चार मामले लंबित थे। उनकी अलगाव घोषणा के साथ ही अब इन मामलों को नई पीठ को सौंपा जाएगा, जिसके निर्धारण की जिम्मेदारी मुख्य न्यायाधीश पर होगी। गौरतलब है कि न्यायमूर्ति समीर जैन अदालत में कई चर्चित संवेदनशील मामलों की सुनवाई के लिए जाने जाते हैं।

उन्होंने पूर्व में माफिया मुख्तार अंसारी के बेटे अब्बास अंसारी को सुनाई गई दो वर्ष की सजा पर रोक लगाने का आदेश दिया था, जिससे उनकी विधायकी बहाल हुई थी। इसके अतिरिक्त कांग्रेस सांसद राहुल गांधी, भीम आर्मी प्रमुख चंद्रशेखर आज़ाद, सपा सांसद जियाउर रहमान बर्क और पूर्व विधायक इरफान सोलंकी के मामलों की सुनवाई भी उनकी पीठ ने की है। आजम खान के मामलों से स्वयं को अलग करने के उनके निर्णय ने न्यायिक और राजनीतिक गलियारों में आश्चर्य उत्पन्न कर दिया है।

क्वालिटी बार में 8 दिसंबर को सुनवाई : रामपुर, अमृत विचारः सिविल लाइंस स्थित क्वालिटी बार में लूटपाट करने के मामले में आजम खां सहित कई लोगों को आरोपी बनाया गया था। जिसकी सुनवाई एमपी-एमएलए कोर्ट में हो रही है। शुक्रवार को वादी कोर्ट पहुंचे। हालांकि सुनवाई नहीं हो सकी। अब इस मामले में 8 दिसंबर को सुनवाई होगी।

आजम खान की तबीयत बिगड़ी, सांस लेने में दिक्कत

रामपुर, अमृत विचार : रामपुर जेल में बंद समाजवादी पार्टी के वरिष्ठ नेता आजम खान की शुक्रवार शाम अचानक तबीयत बिगड़ गई है। शुक्रवार शाम से उन्हें सांस लेने में समस्या हो रही है। हाल में ही दो पैन कार्ड मामले में एमपी एमएलए कोर्ट ने आजम खान और उनके बेटे अब्दुल आजम खान को सात-सात साल की सजा सुनाई थी। तभी से पिता-पुत्र रामपुर जिला कारागार में बंद है। शुक्रवार शाम को अचानक आजमगढ़ की हालत बिगड़ गई। उन्हें सांस लेने में परेशानी होने लगी। जानकारी मिलने के बाद जेल प्रशासन ने डॉक्टर को बुलाकर चेकअप कराया। नेबुलाइजर दिया गया ताकि सांस लेने में कोई परेशानी ना हो। जेलर सुनील कुमार ने बताया कि जेल के डॉक्टरों ने आजम खान का चेकअप किया। दवाएं दी हैं। इससे पहले आजम खान ने स्वास्थ्य कारणों का हवाला देते हुए कुर्सी की मांग की थी, लेकिन जेल प्रशासन ने नियमों का हवाला देकर इसे मना कर दिया था। कुर्सी न मिलने पर आजम खान नाराज हो गए थे। इसके बाद उन्होंने शुक्रवार को किसी से भी मुलाकात करने से इंकार कर दिया था।

कार्यालय नगर पंचायत मीरगंज (बरेली)

पत्रांक : 489/पं.मी./2025-26 दिनांक : 21.11.2025

सूचना

समस्त जलौनी लकड़ी विक्रेताओं/फर्मो/सप्लायर्स को सूचित किया जाता है कि नगर पंचायत मीरगंज जनपद बरेली के द्वारा गत वर्षो की भांति इस वर्ष भी नगर के गरीब व असहाय व्यक्तियों को शीतलहर के प्रकोप से बचाव को दृष्टिगत रखते हुये नगर क्षेत्र में विभिन्न स्थानों पर अलाव जलाने हेतु सूखी जलौनी लकड़ी की आपूर्ति हेतु प्रति कुन्टल दरें/भाव दिनांक 22.11.2025 को सुबह 10:00 बजे से दिनांक 28.11.2025 को दोपहर 12:00 बजे तक आमंत्रित की जाती है। प्राप्त प्रति कुन्टल दरें/भाव दिनांक 28.11.2025 को दोपहर 02:00 बजे उपस्थित विक्रेताओं की उपस्थिति में अधोहस्ताक्षरी के समक्ष खोली जायेगी। अन्य शर्तो की जानकारी किसी भी कार्य दिवस में कार्यालय नगर पंचायत मीरगंज से प्राप्त कर सकते हैं।

लिपिक, नगर पंचायत मीरगंज, बरेली | अधिशासी अधिकारी, नगर पंचायत मीरगंज, बरेली | अध्यक्ष, नगर पंचायत मीरगंज, बरेली

कार्यालय बरेली विकास प्राधिकरण, बरेली

पत्रांक : 4350 का0ब0वि0प्रा0/2024-25 दिनांक 21.11.2025

विज्ञप्ति का प्रारूप

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि आवेदक मैसर्स जी0पी0डी0 एसोसिएट प्रा0लि0 द्वारा डायरेक्टर डा0 गोपाल दत्त पुत्र स्व0 श्री सत्यपाल दत्त द्वारा निर्माण स्थल-प्लॉट नंबर 35/I-4 पुराना नगर निगम 153/9-6 पुराना एवं न्यू नगर निगम नंबर 183/158/1-6 रामपुर बाग, सिविल लाइंस, बरेली क्षेत्रफल 1671.58 वर्गमी0 भूमि पर ''व्यावसायिक परिसर " की अनुज्ञा हेतु ऑनलाइन मानचित्र संख्या-बी0डी0ए0/बी0पी0/25-26/0307 प्रस्तुत किया गया है। बरेली महायोजना-2031 के अनुसार स्थल का भू-उपयोग कार्यालय है व स्थल के सम्मुख 30 मीटर चौड़ा मार्ग दर्शित है।

उत्तर प्रदेश के विकास प्राधिकरणों हेतु मॉडल भवन निर्माण एवं विकास उपविधि तथा आदर्श (मॉडल) जोनिंग रेगुलेशन - 2025 के प्रस्तर 15.3.2 के क्रम संख्या - 2.2 के अनुसार ''व्यावसायिक परिसर क्रिया '' भू - उपयोग '' कार्यालय उपयोग '' में अनुमन्य है। प्रस्तर 15.1.3 के बिन्दु (iv) में उल्लेख है कि महायोजना भू-उपयोग अथवा अनुमोदित ले-आउट में परिभाषित भू-उपयोग के अतिरिक्त अन्य क्रियाओं की अनुज्ञा निर्धारित प्रक्रिया के अनुसार जनता से आपत्ति / सुझाव आमंत्रित करने के उपरान्त दी जाएगी। उक्त के क्रम में जन-सामान्य को कोई आपत्ति / सुझाव देने हैं तो विज्ञप्ति प्रकाशन के एक माह के अन्दर प्राधिकरण लिपिक श्री मोहित कुमार (प्रथम) को प्राप्त करा सकते हैं। नियत अवधि के उपरान्त प्राप्त होने वाली किसी भी आपत्ति / सुझाव को स्वीकार नहीं किया जायेगा।

उपाध्यक्ष
बरेली विकास प्राधिकरण
बरेली

सुभाषनगर में बुजुर्ग समेत दो ने फंदा लगाकर दी जान

बरेली, अमृत विचारः सुभाषनगर थाना क्षेत्र में 24 घंटे में बुजुर्ग समेत दो लोगों ने फांसी लगाकर जान दे दी। पहले मामले में पत्नी से विवाद के बाद युवक फंदे पर लटक गया, जबकि दूसरे मामले में बुजुर्ग ने आत्महत्या कर ली।

बग्गा कॉलोनी निवासी बुजुर्ग अजयपाल (62) की पत्नी की वर्ष 2018 में मौत हो गई थी। इसकी वजह से वह मकान में अकेले ही रहते थे। उनका बेटा ब्रजेश सिंह गुजरात में प्राइवेट कंपनी में काम करता है। अजयपाल ने गुरुवार रात में खिड़की के पर्दे को छत के कुंडे में बांधकर लटककर जान दे दी। पुलिस ने मृतक के भाई एवं भतीजे की मौजूदगी में शव को पोस्टमॉर्टम के लिए भेज दिया। वहीं प्रजापति कॉलोनी निवासी अमन का शव शुक्रवार सुबह कमरे में खिड़की की सरिया के सहारे फंदे से लटका मिला। परिजनों ने बताया कि साल 2021 में अमन की शादी काजल नाम की युवती के साथ हुई थी। शादी के बाद पति-पत्नी में विवाद होने लगा। इसके चलते काजल उसे छोड़कर अलग रहने लगी। इस बीच अमन ने अलीगढ़ के माणिक चौक निवासी मुस्कान से वर्ष 2022 में दूसरी शादी कर ली थी। परिजनों का आरोप है कि पहली पत्नी काजल समझौते के नाम पर उससे रुपये मांग रही थी। जिससे अमन परेशान था। इसी के चलते अमन ने फंदा लगाकर जान दे दी।

दंपती गिरफ्तार, दूसरे आरोपी दंपती की तलाश

हनी ट्रैप गैंग

कार्यालय संवाददाता, मुरादाबाद

पुलिस की गिरफ्त में हनी ट्रैप के आरोपी।

- पति से 1.60 लाख रुपये वसूले जाने पर महिला ने दर्ज कराई थी रिपोर्ट

अमृत विचार : थाना सिविल लाइंस पुलिस ने हनी ट्रैप के जरिए लोगों से अवैध वसूली करने वाले गैंग का पर्दाफाश करते हुए एक दंपती को गिरफ्तार किया है। शुक्रवार को रिजर्व पुलिस लाइन में एसपी सिटी कुमार रणविजय सिंह ने प्रेस वार्ता में मामले का खुलासा किया।

एपी सिटी ने बताया कि मामला शिकायतकर्ता फारिया पत्नी असीम अहमद की तहरीर पर सामने आया था। पीड़िता फारिया ने बताया कि कुछ लोगों ने उनके पति को हनी ट्रैप में फंसाकर 1 लाख 60 हजार रुपये वसूल लिए और वीडियो वायरल करने व दुष्कर्म का मुकदमा दर्ज कराने की धमकी दी। आरोपी दंपती वसीम और पत्नी मुस्कान के विरुद्ध मुकदमा दर्ज किया। जिसके बाद टीम ने आरोपी दंपती की तलाश में दबिश दी। साक्ष्य जुटाने के बाद पुलिस ने मुख्य आरोपी वसीम उर्फ मुन्ना और उसकी पत्नी मुस्कान निवासी चक्कर की मिलक (हाल निवासी मुगलपुरा) को गिरफ्तार कर लिया। आरोपियों ने पूछताछ में स्वीकार किया कि गैंग की महिला सदस्य सोशल मीडिया और फोन के जरिए लोगों को फुसलाकर बुलाती हैं, जहां आपत्तिजनक वीडियो बनाया जाता है।

कार्यालय अधीक्षण अभियन्ता
बरेली वृत लो0नि0वि0, बरेली

पत्रांक : 11350 / 141सी0(ई0टेण्डर)-3 / 25 दिनांक: 17.11.2025

ऑन-लाइन निविदा आमंत्रण सूचना

1- महामहिम राज्यपाल, उ0प्र0 की ओर से अधीक्षण अभियन्ता, बरेली वृत, लो0नि0वि0, बरेली के अंतर्गत निम्न तालिका में अंकित विवरण के अनुसार ऑन-लाइन ई-निविदा दिनांक 24.11.2025 से दिनांक 05.12.2025 की अपरान्ह 12:00 बजे तक आमंत्रित कर दिनांक 05.12.25 को अपरान्ह .12 30 बजे खोला जाना प्रस्तावित किया गया है:-

क्र0 सं0.	कार्य का नाम	खण्ड का नाम	सिविल कार्य की लागत (रू0 लाख में)	धरोहर धनराशि (रू0 लाख में)	निविदा प्रपत्र का मूल्य (निविदा शुल्क+ स्टेशनरी+ जी0एस0टी0) (रू0 में)	कार्य पूर्ण करने की अवधि	ठेकेदारो की पात्रता श्रेणी (सेतु कार्य हेतु)
1	2	3	4	7	8	9	10
1	जनपद शाहजहाँपुर में ग्राम कुकहा महमूदपुर से प्राइमरी स्कूल विक्रमपुर चकोरा सम्पर्क मार्ग पर 4 गुणा 6.00 मीटर स्पान के लघु सेतु एवं अतिरिक्त पहुँच मार्ग का निर्माण कार्य। (वित्तीय वर्ष 2025-26)	प्रान्तीय खण्ड लो0नि0वि0 शाहजहाँपुर	350.00	19.50	2725.00	12 माह	'ए' (सेतु कार्य)

2- निविदा दस्तावेज एवं निविदा हेतु आमंत्रण के विस्तृत नियम एवं शर्तों हेतु वेबसाइट http://etender.up.nic.in पर लॉग ऑन किया जा सकता है।

UP - 240935 दिनांक: 20/11/2025
विज्ञापन वेबसाइट www.up.gov.in पर उपलब्ध है।

(महेन्द्र कुमार पाल) अधिशासी अभियन्ता, प्रान्तीय खण्ड, लो0नि0वि0, शाहजहाँपुर
(प्रकाश चन्द्र) अधीक्षण अभियन्ता, बरेली वृत, लो0नि0वि0, बरेली

कार्यालय बरेली विकास प्राधिकण, बरेली

विज्ञप्ति का प्रारूप

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि वेदान्त बिल्डर्स एल.एल.पी. के पार्टनर मो. हसीब पुत्र श्री मो. हनीफ निवासी 39 काजी टोला, पुराना शहर, बरेली एवं लकीब्रिक बिल्डवेल प्रा. लि. के डायरेक्टर श्री अमित सेठी पुत्र श्री रामचन्द्र सेठी, मो. हसीब पुत्र श्री मो. हनीफ मानचित्र संख्या-बी.डी.ए./एल.डी./25-26/0241 गाटा संख्या-822 ग्राम कलारी बरेली पर आवासीय तलपट मानचित्र प्रस्तावित किया गया है, जो पूर्व स्वीकृत कालोनी बालाजी बिल्डर्स मानचित्र संख्या-बी.डी.ए./एल.डी./24-25/0535 ग्राम कलारी बरेली के आन्तरिक 12 मीटर चौड़े मार्ग का प्रयोग प्रस्तावित कालोनी में पहुंच (एप्रोच) हेतु किया गया है।

अत: उक्त प्रस्तावित मानचित्र में पहुँच हेतु प्रयोग किये जाने वाले 12 मीटर चौड़े मार्ग के सम्बन्ध में जन-सामान्य को आपत्ति/सुझाव देने है, तो विज्ञप्ति प्रकाशन के 15 दिन के अन्दर अपना आपत्ति/सुझाव प्राधिकरण कार्यालय में मानचित्र लिपिक श्री मोहित कुमार को प्राप्त करा सकते हैं। नियत अवधि के उपरान्त प्राप्त होने वाली किसी भी आपत्ति/सुझाव को स्वीकार नहीं किया जायेगा।

उपाध्यक्ष
बरेली विकास प्राधिकरण
बरेली।

महिला के साथ मारपीट, युवक के खिलाफ एफआईआर दर्ज

बरेली, अमृत विचार : महिला ने मारपीट के मामले में युवक के खिलाफ रिपोर्ट दर्ज कराई गई है। प्रेमनगर थाना क्षेत्र के ब्रह्मपुर निवासी गुड़िया ने बताया कि 10 नवंबर को सुबह करीब 9 बजे बिलाल गली में अपनी गाड़ी निकाल रहा था। इसी दौरान उसने घर के बाहर रखा ठेला पलट दिया। जब विरोध किया तो उसके साथ मारपीट की गई। आरोप है कि उसके बाद वह जान से मारने की धमकी देकर फरार हो गया।

कार्यालय कृषि उत्पादन मण्डी समिति, दातागंज (बदायूं)

पत्रांक:- कृ.उ.म.स./2025-87 दिनांक: 21.11.2025

दुकान आवंटन/नीलामी सूचना

कृषि उत्पादन मण्डी समिति दातागंज (बदायूं) की रिक्त दुकानों का आवंटन/नीलामी दिनांक 12.12.2025 को पूर्वाहन 11:30 बजे मण्डी समिति दातागंज के कार्यालय में की जायेगी। इच्छुक व्यक्ति / फर्म मण्डी समिति दातागंज के कार्यालय से रू. 295.00 नकद जमा करके आवंटन प्रार्थना पत्र प्राप्त कर पूर्ण रूप से भरकर पंजीकरण की धनराशि का ड्राफ्ट संलग्न कर दिनांक 11.12.2025 को सायं 05:00 बजे तक मण्डी समिति दातागंज के कार्यालय में अनिवार्य रूप से जमा कर दें। दुकानों एवं पंजीकरण धनराशि का विवरण निम्नवत् है:-

क्र.	दुकानों का विवरण	कुल संख्या	दुकानों में आरक्षण का विवरण (दुकान सं.)				न्यूनतम प्रीमियम
			अनु. जाति	अ.पि.वर्ग	सामान्य	दिव्यांग	
3	मण्डी स्थल 'स' श्रेणी की	02	-	01	01	-	872130.33

शेष शर्ते किसी भी कार्य दिवस में मण्डी समिति कार्यालय में देखी जा सकती है। सभी धनराशि पर 18 प्रतिशत जी.एस.टी. देय होगा।

खडबिन्द प्रकाश, सचिव
धर्मेन्द्र कुमार सिंह, उपजिलाधिकारी/सभापति

कार्यालय मुख्य अभियन्ता, नगर निगम, बरेली

ई-निविदा आमन्त्रण सूचना

पत्रांक : 288/मु.अभि./नि.वि./2025-26 दिनांक 21.11.25

ई-निविदा सूचना शासनादेश सं.-3890/नौ -5 -149सा/2019 नगर विकास अनुभाग-05 उ.प्र. शासन लखनऊ दिनांक 20 सितम्बर, 2019 के अनुपालन में ठेकेदारों से निर्माण कार्यो हेतु निविदायें टू बिड पद्धति (तकनीकी एवं वित्तीय) के माध्यम से निम्न प्रकार से आमंत्रित की जाती है। निविदा खोले जाने की तिथि में यदि अवकाश होगा तो निविदाएं अगले कार्य दिवस में खोली जायेंगी। ई-निविदा से सम्बन्धित प्रपत्र उत्तर प्रदेश की ई - प्रक्योरमेन्ट की वेबसाईट http://etender.up.nic.in व नगर निगम की बेवसाइट www.nagarnigambareilly.com पर देखी जा सकती है।

पुनः ई-निविदा आमंत्रित हेतु (क्रमांक सं. 01 से 05 तक)	
ई-निविदा डाउनलोड प्रारम्भ की तिथि/समय	24.11.2025 - (03:00 PM)
ई-निविदा अपलोड प्रारम्भ की तिथि/समय	24.11.2025 - (04:00 PM)
ई-निविदा अपलोड की अन्तिम तिथि/समय	01.12.2025 - (03:00 PM)
ई-निविदा खोली जाने की तिथि/समय	01.12.2025 - (04:00 PM)
फाईनेंशियल ई-निविदा खोली जाने हेतु	After Technical Evaluation

प्रथम बार ई-निविदा आमंत्रित हेतु (क्रमांक सं. 06 से 56 तक)	
ई-निविदा डाउनलोड प्रारम्भ की तिथि/समय	27.11.2025 - (03:00 PM)
ई-निविदा अपलोड प्रारम्भ की तिथि/समय	27.11.2025 - (04:00 PM)
ई-निविदा अपलोड की अन्तिम तिथि/समय	17.12.2025 - (03:00 PM)
ई-निविदा खोली जाने की तिथि/समय	17.12.2025 - (04:00 PM)
फाईनेंशियल ई-निविदा खोली जाने हेतु	After Technical Evaluation

कार्यो का विवरण, नियम व शर्ते नगर निगम बरेली के वेबसाइट www.nagarnigambareilly.com पर ई-निविदा लिंक एवं ई-पोर्टल http://etender.up.nic.in पर उपलब्ध है। किसी परिवर्तन, संशोधन व अतिरिक्त सूचनाओं के लिये उक्त वेबसाइट पर देखी जा सकती है।

मुख्य अभियन्ता
नगर निगम, बरेली

कार्यालय अधिशासी अभियन्ता
नलकूप खण्ड-द्वितीय, बरेली

निरस्तीकरण-पत्र

नलकूप खण्ड-द्वितीय, बरेली के अन्तर्गत फतेहगंज पूर्वी एवं हाजीपुर पम्प नहर पर इस कार्यालय के पत्रांक:-1805/नख2ब/टेण्डर/दिनांक: 31.10.2025 के द्वारा पूर्व में आमंत्रित की गयी अल्पकालीन ई-निविदा सूचना संख्या-02/अधि0अभि0/2025-26 को अपरिहार्य कारणों से निरस्त किया जाता है।

अधिशासी अभियन्ता
नलकूप खण्ड-द्वितीय,
बरेली

UP - 240909 दिनांक: 20/11/2025
विज्ञापन वेबसाइट www.up.gov.in पर उपलब्ध है।

व्हाट्सएप लिंक भेजकर सेना के जवान को ठगा

बरेली, अमृत विचारः सेना के जवान को व्हाट्सएप लिंक भेजकर साइबर ठगी कर ली गई। अज्ञात नंबर से आए लिंक खोलने के बाद उसके खाते से पैसे कट गए। पीड़ित ने कैंट थाने में शिकायत कर रिपोर्ट दर्ज कराई है।

130 साटा रेजिमेंट निवासी विवेगनातन ने कैंट थाने में दी तहरीर में बताया कि 12 नवंबर की सुबह उनके व्हाट्सएप पर किसी अज्ञात व्यक्ति ने एक लिंक भेजा। जैसे ही उन्होंने लिंक ओपन किया, उनके बैंक खाते से लगातार तीन ट्रांजेक्शन हो गए, जिसमें पहली बार में 73 हजार, दूसरी बार में 35 हजार और फिर 27 हजार रुपये कट गए। ऐसे में कुल 1 लाख 35 हजार रुपये उनके खाते से कट गए। उन्होंने साइबर क्राइम पोर्टल पर ऑनलाइन शिकायत दर्ज कराकर खाते से कटी रकम होल्ड करा ली। उसके बाद कैंट थाने में रिपोर्ट दर्ज कराई।

कार्यालय नगर पंचायत गुलड़िया भिण्डारा, पीलीभीत

पत्रांक : मेमो/न.पं.गु.भि./2025-26 दिनांक : 6.11.2025

नोटिस

सर्वसाधारण को सूचित किया जाता है कि निम्नलिखित विवरण के अनुसार कॉलम-04 में अंकित व्यक्ति के द्वारा किये गये रजिस्टर्ड बैनामा के द्वारा हस्तांतरण के आधार पर कॉलम-05 में उल्लिखित व्यक्ति ने अपना नाम गृह कर पंजिका में दर्ज किये जाने हेतु इस कार्यालय में प्रार्थना-पत्र दिया है, यदि कॉलम संख्या-05 में अंकित व्यक्ति अपने नाम को गृहकर पंजिका में अंकित किये जाने में किसी भी व्यक्ति को कोई आपत्ति हो तो प्रकाशन तिथि से 01 माह के अन्दर नगर पंचायत गुलड़िया भिण्डारा में लिखित रूप से प्रस्तुत कर सकता है। उल्लिखित समय-सीमा के अन्दर किसी प्रकार की आपत्ति प्राप्त न होने की दशा में प्रस्तावित नाम को नगर पंचायत गुलड़िया भिण्डारा के गृहकर रजिस्टर में गृहकर वसूली के उद्देश्य से दर्ज कर लिया जायेगा।

क्र.सं.	सम्पत्ति का विवरण	हस्तांतरण हेतु प्रस्तावित सम्पत्ति का वार्ड का नाम व पता	रजिस्टर्ड बैनामाकर्ता वयीयतनामाकर्ता/ दानकर्ता का नाम व पता	प्रस्तावित व्यक्ति का नाम जो उस व्यक्ति को गृहकर हेतु दर्ज किया जाना है।	हस्तांकरण का आधार
1	2	3	4	5	6
1.	गाटा सं-138 मि. रकबा-83.64 वर्गमी.	वार्ड नं. 02 नगर पंचायत गुलड़िया भिण्डारा तहसील-अमरिया जिला पीलीभीत	श्री रमेश चन्द्र शुक्ला पुत्र श्री बाबू राम शुक्ला नि. फ्लैट नं. 245, फेस-01 पुष्पांजलि, वृन्दावन बांगर वृन्दावन मथुरा उ.प्र.	श्री मोहित गोगिया पुत्र श्री केवल किशोर गोगिया नि. मझोला डाकखाना-जमौर तहसील-खटीमा जिला-ऊधमसिंह उत्तराखण्ड	रजिस्टर्ड बैनामा

अधिशासी अधिकारी, नगर पंचायत गुलड़िया भिण्डारा, पीलीभीत
अध्यक्ष, नगर पंचायत गुलड़िया भिण्डारा, पीलीभीत

कार्यालय स्वास्थ्य विभाग नगर निगम, बरेली

पत्रांक : 273/स्वा.वि./उप न.स्वा.अधि./2025-26 दिनांक : 20.11.2025

पुनः ई-निविदा सूचना

नगर आयुक्त महोदय की स्वीकृति दिनांक 17.11.2025 के अनुपालन में नगर निगम बरेली के क्षेत्र से उत्पाती बन्दर पकड़कर जंगल (पीलीभीत व शाहजहांपुर वन क्षेत्र) में छोड़े जाने हेतु डबल बिड पुनः ई-निविदा आमंत्रित की जाती है जो ई-निविदायें ई-निविदा प्रपत्र उत्तर प्रदेश की ई-प्रोक्योरमेन्ट की वेबसाइट htp..//etender.up.nic.in व नगर निगम की वेबसाइट www.nagarnigambareilly.com पर देखी जा सकती है। शासनादेश संख्या-/नौ-5-2018-149सा/2019 नगर विकास अनुभाग-5 उ.प्र. शासन लखनऊ दिनांक 20 सितम्बर 2019 के क्रम में ठेके से उक्त कार्य कराने हेतु पुनः ई-निविदा डबल बिड पद्धति (तकनीकि एवं वित्तीय) के माध्यम से निम्न प्रकार से आमंत्रित की जाती है। निविदा खोले जाने की तिथि में यदि अवकाश होगा तो निविदायें अगले कार्य दिवस में खोली जायेगी। तथा अन्य शर्ते एवं विवरण उक्त वेबसाइट पर देखी जा सकती है। ई-निविदा निम्नानुसार आमंत्रित की जाती है।

ई-निविदा डाउनलोड प्रारम्भ की तिथि/समय	24.11.2025	(01:00 PM)
ई-निविदा अपलोड की प्रारम्भ की तिथि/समय	24.11.2025	(03:00 PM)
ई-निविदा अपलोड की अन्तिम तिथि/समय	03.12.2025	(03:00 PM)
तकनीकी बिड खोली जाने की तिथि/समय	स्वीकृति उपरान्त	
वित्तीय बिड खोले जाने की तिथि/समय	स्वीकृति उपरान्त	

क्र. सं.	कार्य का नाम	जमानत धनराशि	निविदा शुल्क स्वीकृति उपरान्त	18% GST	निविदा मूल्य 15%
01	नगर निगम बरेली के 01 से 80 वार्डो के क्षेत्रों से विभिन्न स्थानों पर आतंकी/उत्पाती व कटखने बन्दरों (ए.वे बोर्ड द्वारा समय-समय पर दी गयी गाईडलाईन्स के अनुसार) को पकड़कर जंगल (पीलभीत व शाहजहाँपुर वन क्षेत्र) में छोड़ने जाने (जी.पी.एस. फोटो सहित) हेतु दर मय जी.एस.टी. सहित प्रति बन्दर देनी है (लगभग 10,000 बन्दर स्वीकृति के दिनांक से एक वर्ष लिए)	1,98,000.00	6600.00	1188.00	7788.00

उप नगर स्वास्थ्य अधिकारी
नगर निगम बरेली

पूर्वोत्तर रेलवे

ई-निविदा सूचना

भारत के राष्ट्रपति की ओर से मुख्य परियोजना प्रबन्धक, गतिशक्ति, पूर्वोत्तर रेलवे, इज्जतनगर द्वारा निम्नलिखित कार्य हेतु ई-निविदा आमंत्रित करते हैं।, **क्रम सं.:-1., ई-निविदा संख्या:-** CPM-GS-IZN-2025-15, **कार्य का नाम:-** अमृत भारत स्टेशन योजना के तहत स्टेशन के विकास के संबंध में बचे हुए कार्यों का निर्माण जैसे कि आरएमआर स्टेशन पर पहुंच मार्ग, केपीवी स्टेशन पर 1 नं. टाइप-III क्वार्टर का निर्माण, बीएचआई, केएचएच और यूजेएच स्टेशन पर वाटर कूलर केज, केपीवी स्टेशन पर एसएस बिल्डिंग, केजीएम, केएचएच, बीएचआई और बीईएम स्टेशन पर पोर्च, केएचएच स्टेशन पर 2 बे पी.पी. शेल्टर, काशीपुर पीआरएस बिल्डिंग की पुनः छत, केएचएच और बीईएम स्टेशन पर चाय की दुकान और केएचएच, केपीवी स्टेशन पर अग्रभाग का सुधार, बीईएम पर जीआरपी बैरक और स्टील शेड और अन्य विविध कार्य।, **अनुमानित निविदा मूल्य:**-10,66,33,152.66, **बयाना राशि:**-6,83,200/-, **निविदा प्रपत्र का मूल्य (रू0):**- निल, **कार्य पूर्ण करने की अवधि:**- 09 (नौ) माह, • बिडिगं प्रारम्भा करने की तिथि 28.11.2025, • उपरोक्त ई निविदा सबमिसन की अन्तिम तिथि- दिनांक 12.12.2025 15.00 बजे तक, • उपरोक्त ई-निविदा खुलने की तिथि दिनांक 12.12.2025 15.30 बजे, • निविदा सूचना, योग्यता मापदण्ड, नियम एवं शर्ते वेवसाइट **https://ireps.gov.in** पर देखा जा सकता है। • निविदा सूचना में यदि हिन्दी या अंग्रजी के आलेखों में कोई भिन्नता होती है तो अंग्रेजी के ही आलेख मान्य होगें।

उप मुख्य इंजीनियर / गतिशक्ति
मुजाधि / डब्लू-340 इज्जतनगर

ट्रेनों में बीड़ी / सिगरेट न पियें

रामायण वाटिका का कमिश्नर ने किया निरीक्षण

बरेली, अमृत विचार : कमिश्नर भूपेंद्र एस चौधरी शुक्रवार को बीडीए की रामगंगा नगर आवासीय योजना पहुंचे। उन्होंने स्थलीय निरीक्षण कर विकास कार्यों की प्रगति रिपोर्ट देखी। इस दौरान बीडीए उपाध्यक्ष डॉ. ए मनिकंडन ने रामायण वाटिका, स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स एवं कन्वेंशन सेंटर, रूद्रावनम समेत अन्य विकास कार्यों की विस्तृत जानकारी दी।

सबसे पहले कमिश्नर रामगंगा नगर आवासीय योजना के सेक्टर 2 में बनी रामायण वाटिका पहुंचे। उन्होंने भगवान श्रीराम की 51 फुट ऊंची भव्य प्रतिमा, वाटिका में स्थापित कलात्मक म्यूरल्स, विकसित मियावाकी वन क्षेत्र, पाथवे, लैंडस्केपिंग समेत अन्य कार्यों को देख प्रसन्नता व्यक्त की। उन्होंने सेक्टर-7 में विकसित स्पोर्ट्स कॉम्प्लेक्स व कन्वेंशन सेंटर को भी देखा। यहां खेल गतिविधियों के लिए उपलब्ध सुविधाओं, मल्टी-स्पोर्ट्स एरीना, दर्शक दीर्घाओं, पार्किंग व कन्वेंशन सेंटर के सभागार एवं अन्य संरचनात्मक कार्यों की प्रगति की समीक्षा करते हुए अधिकारियों को कार्यों की गति और गुणवत्ता बढ़ाने के निर्देश दिए। ग्रेटर बरेली आवासीय योजना में निर्माणाधीन रूद्रावनम पार्क का भी जायजा लिया। इस दौरान बीडीए उपाध्यक्ष ने बताया कि यह पार्क लगभग 1 लाख वर्गमीटर में विकसित किया जा रहा। इसके बरेली की भावी पहचान बनने की संभावना पर कमिश्नर ने संतोष व्यक्त किया।

कार्यालय अधीक्षण अभियन्ता
बरेली वृत लो0नि0वि0, बरेली

पत्रांक : 11285 / 141सी0(ई0टेण्डर)-3 / 25 दिनांक: 14.11.2025

ऑन-लाइन निविदा आमंत्रण सूचना

1- महामहिम राज्यपाल, उ0प्र0 की ओर से अधीक्षण अभियन्ता, बरेली वृत, लो0नि0वि0, बरेली के अंतर्गत निम्न तालिका में अंकित विवरण के अनुसार ऑन लाइन ई-निविदा दिनांक 22.11.2025 से दिनांक 05.12.2025 की अपरान्ह 12:00 बजे तक आमंत्रित कर दिनांक 05.12.2025 को ही अपरान्ह 12.30 बजे खोला जाना प्रस्तावित किया गया है:-

क्र0 सं0.	कार्य का नाम	खण्ड का नाम	लागत: सिविल कार्य की लागत (रू0 लाख में)	लागत: 05 वर्ष अनुरक्षण की लागत (रू० लाख में)	लागत: कुल लागत (4+5) (रू० लाख में)	धरोहर धनराशि (रू0 लाख में)	निविदा प्रपत्र का मूल्य (निविदा शुल्क+ स्टेशनरी+ जी0एस0टी0) (रू0 में)	कार्य पूर्ण करने की अवधि	ठेकेदारो की पात्रता श्रेणी (मार्ग कार्य हेतु)
1	2	3	4	5	6	7	8	9	10
1	पुवायॉ नाहिल मार्ग किमी-11 से भरसण्डा सम्पर्क मार्ग के नवनिर्माण का कार्य।	प्रान्तीय खण्ड, लो0नि0वि0, शाहजहांपुर	157.50	11.07	168.57	10.43	2725.00	12 माह	'ए' 'बी' (मार्ग कार्य)
2	ग्राम कुरसण्डा से पंचपीर बाबा तक नवनिर्माण का कार्य।		105.70	6.50	112.20	7.61	2725.00	12 माह	'ए' 'बी' (मार्ग कार्य)

2- निविदा दस्तावेज एवं निविदा हेतु आमंत्रण के विस्तृत नियम एवं शर्तों हेतु वेबसाइट http://etender.up.nic.in पर लॉग ऑन किया जा सकता है।

UP - 240903 दिनांक: 20/11/2025
विज्ञापन वेबसाइट www.up.gov.in पर उपलब्ध है।

(महेन्द्र कुमार पाल) अधिशासी अभियन्ता, प्रान्तीय खण्ड, लो0नि0वि0, शाहजहांपुर
(प्रकाश चन्द्र) अधीक्षण अभियन्ता, बरेली वृत, लो0नि0वि0, बरेली

6th वार्षिकोत्सव विशेष फीचर

मेरा शहर-मेरी प्रेरणा

बरेली में अब अंतर्राष्ट्रीय मानक वाला ट्रैक

बरेली के खिलाड़ियों को अंतर्राष्ट्रीय स्तर की तैयारी के लिए स्पोर्टस स्टेडियम में सिंथेटिक ट्रैक का निर्माण पूरा हो चुका है। ट्रैक का निर्माण अंतर्राष्ट्रीय मानकों के अनुरूप तैयार किया गया है, जिस पर 9.34 करोड़ रुपये की लागत आई है। 400 मीटर लंबे इस ट्रैक का निर्माण मार्च 2024 में शुरू हुआ था। ट्रैक एक विशेष प्रकार का कृत्रिम रूप से निर्मित रनिंग ट्रैक होता है, जिसे एथलीट्स के प्रशिक्षण और प्रतिस्पर्धा के लिए तैयार किया जाता है। यह ट्रैक आमतौर पर रबर ग्रेन्यूल्स और पॉलीयुरेथेन की कई परतों से बना होता है, जो इसे लचीला, टिकाऊ और झटकों को अवशोषित करने योग्य बनाता है। यह सतह एथलीट्स को बेहतर ग्रिप, स्थिरता और गति प्रदान करती है, जिससे परफॉर्मेंस में सुधार होता है और चोट का खतरा कम होता है। किसी भी मौसम में उपयोग किया जा सकता है। मिट्टी या घास के ट्रैक की तुलना में अधिक टिकाऊ व सुविधाजनक होता है।

■ खिलाड़ियों को मिलेंगे ये लाभ

स्पोर्टस स्टेडियम में करीब 400 खिलाड़ी रोजाना प्रैक्टिस करते हैं। इसमें एथलेटिक्स, लॉग जंप, हाई जंप, डिस्कस थ्रो, ट्रिपल जंप, शॉर्टपुट, जैबलिन और हर्डल रेस आदि की प्रैक्टिस करने वाले खिलाड़ियों को सिंथेटिक ट्रैक बनने से काफी फायदा मिलेगा। वह अपनी प्रैक्टिस राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय मानकों के हिसाब से करेंगे। साथ ही इनके खेल स्तर में भी सुधार होगा।

■ सिंथेटिक ट्रैक पर होने वाले गेम्स

एथलेटिक्स, लॉग जंप, हाई जंप, डिस्कस थ्रो, हैमर थ्रो, ट्रिपल जंप, शॉर्टपुट, जैबलिन, हर्डल रेस।

> आठ लेन वाला यह सिंथेटिक ट्रैक जनपद ही नहीं अपितु मंडल में सबसे शानदार होगा। अप्रैल 2025 में ही प्लेयर्स इस पर दौड़ना शुरू कर देंगे। राष्ट्रीय-अंतर्राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं की तैयारी करेंगे। खिलाड़ियों के लिए यह ट्रैक सौगात होगी।
> – **जितेंद्र यादव**, आरएसओ स्पोर्टस स्टेडियम बरेली

कामयाबी की मिसाल हैं रिदम अब फोकस ओलंपिक पर

मंजिल उन्हीं को मिलती है, जिनके सपनों में जान होती है। पंख से कुछ नहीं होता, हौसलों से उड़ान होती है. ये कहावत तो आपने खूब सुनी होगी, लेकिन बरेली की पैरा एथलीट रिदम शर्मा ने इसे सच कर दिखाया। 18 साल की रिदम बचपन से न बोल सकती है और न सुन सकती है, फिर भी राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर गोल्ड मेडल जीत चुकी है। रिदम की कहानी सिर्फ पदकों की नहीं, बल्कि जज्बे, संघर्ष और प्रेरणा की कहानी है। उन्होंने साबित किया है कि अगर इरादे मजबूत हों, तो कोई भी असमर्थता सफलता की राह में बाधा नहीं बन सकती। रिदम ने उन लोगों के लिए मिसाल कायम की है जो दिव्यांग हैं। अब रिदम का एक ही सपना है ओलंपिक में गोल्ड मेडल जीतकर अंतराष्ट्रीय स्तर पर देश का मान बढ़ाना। 2023 में इंदौर में हुई 35वीं राष्ट्रीय एथलेटिक्स चैंपियनशिप में उन्होंने 200 मीटर, 100 और 400 मीटर दौड़ में पदक जीते। 2024 में अंतर्राष्ट्रीय गेम्स में गोल्ड मेडल जीतकर नाम रोशन किया। कुआला लंपुर मलेशिया में एशियाई डीफ एथलेटिक्स चैंपियनशिप में 400 मीटर मिक्स रिले और 4&400 मीटर रिले में स्वर्ण पदक, जबकि 400 मीटर बाधा दौड़ में रजत पदक अपने नाम कर इतिहास रच डाला। रिदम ने दो बार राज्य स्तर पर गोल्ड, दो बार राष्ट्रीय स्तर पर गोल्ड और एक अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर गोल्ड मेडल जीता।

■ रिदम बरेली के बड़ा बाजार इलाके की रहने वाली हैं। उनके पिता अनुकाम शर्मा प्राइवेट नौकरी करते हैं और मां पूनम शर्मा हाउस वाइफ हैं। दोनों ने मिलकर अपनी बेटी के सपने को उड़ान दी। रिदम लिप रीडिंग तकनीक से संवाद करती हैं और 12 साल की उम्र में उन्होंने तय कर लिया था कि वह एथलीट बनेंगी। रिदम के परिवार में एक बड़ी बहन अपूर्वा और छोटा भाई विनायक है।

■ मां पूनम शर्मा ने बताया कि रिदम को बचपन से ही टीवी पर खेल देखने का शौक था। चार से पाच साल की उम्र में रिदम ज्यादा कुछ समझ नहीं पाती थीं, लेकिन टीवी चैनल परिवार में कोई चेंज कर देता तो खुद अपने पसंद का स्पोर्ट चैनल लगा लेती थीं, इसके बाद पेरेंट्स को रिदम की रुचि के बारे में पता चला और सपोर्ट करने लगे।

■ जब रिदम पांच साल की थी तो पेरेंट्स यही सोचते थे कि थोड़ा समय और लगेगा फिर बेटी बोलने और सुनने लगेगी। मगर छह साल बीतने के बाद भी कोई रिस्पांस नहीं मिलता तो डाक्टर को दिखाया गया और पता चला कि वह सुन-बोल नहीं सकती। इलाज के लिए बरेली से लेकर दिल्ली तक गए, लेकिन आर्थिक स्थिति ठीक न होने के चलते इलाज नहीं करा पाए।

■ 11वीं की छात्रा रिदम कड़ी मेहनत कर रही हैं। सुबह चार बजे रेलवे ग्राउंड में तैयारी के लिए जाती हैं। मदद कोच अजय कश्यप करते हैं। कालेज की तरफ से भी उन्हें एक घंटे की छूट दी गई है। खुद को फिट रखने के लिए रोजाना करीब 24 किलोमीटर साइकिल द्वारा अपने घर से रेलवे ग्राउंड तक आना-जाना करती हैं।

डोरी लाल अग्रवाल स्पोर्ट्स स्टेडियम अंतर्राष्ट्रीय खेलों में कर चुका है मेजबानी

डोरी लाल अग्रवाल स्पोर्ट्स स्टेडियम या क्षेत्रीय खेल स्टेडियम उत्तर प्रदेश के बरेली में स्थित एक बहुउद्देश्यीय स्टेडियम है। इस मैदान का उपयोग मुख्यत फुटबॉल, क्रिकेट, नेटबॉल, हैंडबॉल, बास्केटबॉल और अन्य खेलों के मैचों के आयोजन के लिए किया जाता है। इस स्टेडियम की स्थापना 1960 में हुई थी और इसने भारतीय महिला क्रिकेट टीम और श्रीलंका महिला क्रिकेट टीम के बीच अंतर्राष्ट्रीय मैचों की मेजबानी भी की है। 2015 में उत्तर प्रदेश सरकार ने पुरुष और महिला खिलाड़ियों दोनों के लिए 400 बिस्तरों वाले एक छात्रावास के निर्माण के साथ-साथ सीढ़ियों के निर्माण के माध्यम से स्टेडियम के कोर को अपग्रेड करने का निर्णय लिया था। अगस्त 2015 में स्टेडियम ने ग्रामीण क्षेत्रों के लिए एक स्थानीय टी 20 टूर्नामेंट में भारतीय ग्रामीण क्रिकेट लीग की मेजबानी की। स्टेडियम स्थानीय क्रिकेट टूर्नामेंट की भी मेजबानी की कर चुका है।

हॉकी के जादूगर की याद दिलाता है मेजर ध्यानचंद स्टेडियम

मेजर ध्यानचंद स्टेडियम भी बरेली की शान है, जो हॉकी के जादूगर की याद दिलाता है। कैंट में स्थित यह स्टेडियम भारतीय खेल प्राधिकरण (SAI) का प्रशिक्षण केंद्र है। यह स्टेडियम विभिन्न खेलों के प्रशिक्षण के लिए एक महत्वपूर्ण केंद्र है, जिसमें हॉकी और एथलेटिक्स शामिल हैं। हाल के वर्षों में, इसमें सुधार किए गए हैं, जैसे कि सिंथेटिक ट्रैक का निर्माण शामिल है।

स्टेडियम के सेंट्रल इंचार्ज व एथलेटिक्स कोच संदीप मोहन चौधरी ने बताया कि जनवरी 2007 में 30 साल की लीस पर स्टेडियम लिया गया है। यह कैंटोमेंट बोर्ड से लिया था। इसमें हॉटी, एथलेटिक्स व सेपक टाकरा खेल शामिल है। खिलाड़ियों के लिए छात्रावास की सुविधा भी है। हर साल यहां खिलाड़ियों का चयन होता है। 10-18 साल के खिलाड़ियों के बीच- ट्रायल लिया जाता है। ट्रायल जनवरी व फरवरी में होते है। एसिस्टेंट अभिषेक कुश्वाह ने बताया कि यह स्टेडियम रीजनल सेंटर लखनऊ अंडर में आता है। सेपक टाकरा में खिलाड़ी बॉबी कुमार इंटरनेशन खिलाड़ी है। उनकी बिहार के पटना में पुलिस में दो माह पहले ही नौकरी लगी है। वहीं बिहार के जयवीर सिंह भी इंटरनेशन खिलाड़ी है। सेपक टॉकरा की कोच मीना ने बताया कि आवासीय योजना स्कीम के अंतर सेपक टाकरा के 18 खिलाड़ी, हॉकी के 20 और एथलेटिक्स के 17 खिलाड़ी है।

डरबन वर्ल्ड चैंपियनशिप में पांच स्वर्ण और दो विश्व रिकॉर्ड

किसी भी ख्वाब को पूरा करने के लिए उम्र मायने नहीं रखती, बल्कि जज्बा और जुनून सबसे बड़ा हथियार होता है। इस कहावत को सच कर दिखाया है बरेली शहर के 75 वर्षीय भगवान बंसल ने, जो उम्र के उस पड़ाव पर खड़े हैं जहां अधिकतर लोग आराम और दवाइयों पर निर्भर हो जाते हैं, लेकिन भगवान बंसल इसके बिल्कुल उलट हैं। वह रोजाना वेट लिफ्टिंग और पावरलिफ्टिंग का अभ्यास करते हैं। अब तक दुनिया के मंच पर भारत का नाम बार-बार रोशन कर चुके हैं। भगवान बंसल ने साउथ अफ्रीका के डरबन में आयोजित वर्ल्ड पावरलिफ्टिंग चैंपियनशिप में उन्होंने पांच स्वर्ण पदक जीतकर और दो विश्व रिकॉर्ड बनाकर इतिहास रच दिया। 5 से 9 नवंबर तक साउथ अफ्रीका के डरबन में आयोजित वर्ल्ड पावरलिफ्टिंग चैंपियनशिप में भगवान बंसल ने एक बार फिर अद्वितीय प्रदर्शन किया।

सेपक टाकरा लाए थे डॉ. सीरिया

यह खेल बरेली जिले में 1985 में आया। जिसका पूरा श्रेय स्वर्गीय डॉ. एसएम सीरिया को जाता है। यही प्रदेश में इस खेल के जनक हैं। उस समय मेरी उम्र 17 वर्ष थी। आज 57 साल के अंतराल में मैंने इस खेल में बहुत उतार चढ़ाव देखे। प्रदेश में सेपक टकरा लगभग 35 से 40 जिलों में खेला जाने लगा है। खेल के माध्यम से कई सरकारी नौकरियां मिलना, प्रदेश स्तरीय मान्यता और सभी सरकारी स्कूलों में इस खेल को खेला जाना ये बहुत बड़ी उपलब्धि है। कई खिलाड़ी पोस्ट ऑफिस, इनकम टैक्स, पैरामिलिट्री फोर्स में इसी खेल के माध्यम से नौकरी कर रहे हैं।

खेल की स्थापना एसोसिएशन का गठन

उत्तर प्रदेश में सेपक टकरा खेल को संगठित रूप देने और इसे बढ़ावा देने के लिए उत्तर प्रदेश सेपक टकरा संघ की स्थापना 1986 में हुई थी।

संस्थापक : इस संघ की बुनियाद डॉ. एस. एम. सीरिया (Dr. S.M. Siriah) के मार्गदर्शन में रखी गई थी। उद्देश्य : इस संघ का मुख्य उद्देश्य उत्तर प्रदेश में इस खेल को जमीनी स्तर पर विकसित करना, विभिन्न जिलों में प्रचार-प्रसार करना और प्रतिभाशाली खिलाड़ियों को राज्य तथा राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिताओं के लिए तैयार करना है। उत्तर प्रदेश से कई खिलाड़ी राष्ट्रीय स्तर पर अच्छा प्रदर्शन कर चुके हैं और कुछ ने अंतर्राष्ट्रीय प्रतियोगिताओं, जैसे साउथ एशियन गेम्स और एशियन गेम्स में भी भारत का प्रतिनिधित्व किया है।

हाल ही में हुई चैंपियनशिप

हाल ही में पुरुष व महिला इक्कीसवीं सीनियर सेपक टकरा चैंपियनशिप का आयोजन हुआ। इससे पहले प्रथम प्रदेश स्तरीय चैंपियनशिप 1989 में बरेली कालेज के मैदान में खेली गई। इसमें भाग लेने वाले जिलों में लखीमपुर खीरी, मुरादाबाद, शाहजहांपुर, अमरोहा, पीलीभीत, बागपत, सीतापुर, बदायूं के खिलाड़ियों ने अच्छा प्रदर्शन करके अपने जिले का नाम रोशन कर रहे हैं।

सेपक टकरा खेल की बुनियाद

सेपक टकरा एक प्राचीन और रोमांचक खेल है जिसे किक वॉलीबॉल भी कहा जाता है। यह खेल फुटबॉल और वॉलीबॉल का मिश्रण है, जिसमें खिलाड़ी बिना हाथ का उपयोग किए अपने पैर, सिर और शरीर का इस्तेमाल कर नेट के ऊपर से गेंद को विरोधी के पाले में गिराने की कोशिश करते हैं।

2000 में भारतीय खेल प्राधिकरण की स्थापना

उत्तर प्रदेश में ही दो 2000 भारतीय खेल प्राधिकरण की स्थापना साई सेन्टर बरेली में किया गया। इससे पहले सांई सेंटर बरेली बरेली कॉलेज में इस खेल का प्रशिक्षण चला रहा था। मगर यह खेल जो इस समय पूरे उत्तर प्रदेश में लोकप्रियता और ऊँचाइयों को छू रहा है इसका पूरा श्रेय बरेली बरेली कॉलेज के पूर्व क्रीड़ा अधिकारी स्वर्गीय डॉ. एसएम सीरिया को जाता है जो हमारे उत्तर प्रदेश सेपकटाकरा के जनक और भीष्म पितामाह है।

बरेली में नेशनल से इंटरनेशनल स्तर के तैयार हो रहे खिलाड़ी

सिविल लाइंस स्थित पुरानी जेल के पास स्मार्ट सिटी के तहत 11.23 करोड़ की लागत से रायफल क्लब खिलाड़ियों के लिए नेशनल और इंटरनेशनल स्तर पर बनाया गया है। यहां यूपी ही नहीं बल्कि कई राज्यों से खिलाड़ी शूटिंग सीखने आते है। कोच का कहना है कि न्यूज रायफल क्लब शुरु हुए ज्यादा समय नहीं हुआ है, लेकिन खिलाड़ी जिस तरह प्रतिभाग कर रहे है देखकर लगता है कि बरेली को नए कई नेशनल और इंटरनेशल खिलाड़ी मिलने वाले है। रायफल क्लब में खिलाड़ियों को आधुनिक सुविधा देने के लिए नई बिल्डिंग का निर्माण शुरू किया गया। प्रस्ताव बनाकर भेजा गया, जो 2019 में पास हुआ। इसमें कमिश्नर, डीएम और नगर आयुक्त की महत्वपूर्ण भूमिका रही। न्यू राइफल क्लब को स्मार्ट सिटी ने बनाकर पैसिफिक इंटरप्राइजेज फर्म के सुपुर्द किया। क्लब में इलेक्ट्रॉनिक टारगेट सिस्टम, साउंडप्रूफ रेंज की सुविधा दी गई है। क्लब का उद्देश्य खेल संस्कृति को बढ़ावा देना है। क्लब के अधिकारियों ने बताया कि यह क्लब शहर के युवाओं में खेलों के प्रति रुचि जगाने के साथ-साथ उन्हें आत्मरक्षा, अनुशासन और फिटनेस की दिशा में प्रेरित करेगा। पैसिफिक इंटरप्राइजेज फर्म के मालिक आनंद विक्रम और नवल ने बताया कि क्लब में मेरठ, बनारस, राजस्थान समेत कई राज्यों और जनपदों से खिलाड़ी आते है।

इन खिलाड़ियों ने किया गोल्ड -सिल्वर पर कब्जा

यूपी स्टेट शार्ट गन प्रतियोगिता (12 बोर) जयपुर में 30 अगस्त से 7 सितंबर को हुई। इसमें मंतिशा फातमा ने गोल्ड, विराट नाथ चौबे ने दो सिल्वर, फुरखान अली ने सिल्वर, दानिश अहमद ने गोल्ड, सारा ने गोल्ड, मो हसन खां ने ब्रांच मेडल पर कब्जा किया था। वहीं नार्थ जोन की प्रतियोगिता दिल्ली में 25 अक्टूबर से लेकर 31 अक्टूबर को हुई। इसमें मंतिशा फातमा ने गोल्ड और दानिश ने सिल्वर पर कब्जा किया।

आडियो-वीडियो से लेकर लॉकर तक की सुविधा

न्यू रायफल क्लब में खिलाड़ियों के लिए बेहतर सुविधाओं का इंतजाम किया है। यहां मेडिकल रूप, आडियो-वीडियो, सीसीटीवी, बेसिक किट रखने के लिए लॉकर, जिम की सुविधा, दिव्यांगों के लिए लिफ्ट, कैफेटेरिया आदि सुविधाएं है। जिस कारण खिलाड़ियों को किसी प्रकार की समस्या का सामना नहीं करना पड़ रहा है।

चाइना वार को देखते हुए खोले गए थे राइफल क्लब

राइफल क्लब के वरिष्ठ अधिकारी बताते है कि जब चाइना से युद्ध की संभावनाएं बन रही थी तब सेना को और मजबूत करने के लिए हर जिले में राइफल क्लब खोले गए थे। ताकि वक्त आने पर खिलाड़ी भारतीय सेना के साथ कंधा से कंधा मिलाकर चल सके। बरेली में राइफल क्लब की स्थापना 9 फरवरी 1962 में हुई थी।

50, 25 और 10 मीटर रेंज

खिलाड़ी सुविधाओं में अच्छा प्रदर्शन कर पाए इसके लिए स्मार्ट सिटी क्लब में खास इंतजाम किए है। फर्म के मालिक ने बताया कि यहां 10, 25 और 50 मीटर एयर पिस्टल की सुविधा है। यूपी में यह अकेली ऐसी रेंज है यहां सभी सुविधाएं है। खिलाड़ियों को किसी तरह की परेशानी नहीं होने दी जा रही है।

अमृत विचार

शनिवार, 22 नवंबर 2025

लोगों को हर तरह से सुंदर होना चाहिए- चेहरे में, पहनावे में, विचारों में और स्व अंतरतम में।
-एंटोन चैखव, रूसी लेखक

फिर नीतीश नेतृत्व

बिहार में बंपर बहुमत वाली ऐसी सरकार बनी है, जिसके मुख्यमंत्री के साथ दोनों उप मुख्यमंत्री और कतिपय मंत्री भी पुरानी ही सरकार से हैं। सत्ता का यह समीकरण परोक्षतः राजनीतिक स्थिरता का संदेश देता है, परंतु इसके पीछे जटिल सामरिक मजबूरियां छिपी हैं। युवा, ऊर्जावान चेहरे को आगे न लाने के पीछे यह तर्क दिया जा सकता है कि गठबंधन की राजनीति और जातीय-सामाजिक संतुलन की अनिवार्यता इसकी वजह बनी, लेकिन सही तो यह है कि मुख्यमंत्री नीतीश कुमार और दोनों उपमुख्यमंत्रियों को रिपीट किए जाने का मतलब है कि भाजपा और जदयू- दोनों ही साझेदार अभी किसी नए चेहरे के प्रयोग का जोखिम उठाने को तैयार नहीं हैं।

सबसे बड़ी पार्टी होने के बावजूद भाजपा का अपना मुख्यमंत्री न देने का निर्णय रणनीतिक है। तत्काल नेतृत्व परिवर्तन से सामाजिक-राजनीतिक असंतुलन उत्पन्न होने का खतरा था, हालांकि नीतीश कुमार के 'अल्पकालिक मुख्यमंत्री' होने की चर्चा आम है। उनके स्वास्थ्य ने आशंका बढ़ाई है कि वे लंबी पारी नहीं खेलेंगे। राजनीतिक मजबूरियों के तहत उन्हें जिम्मेदारी तो मिली है, पर यह भी सच है कि भाजपा भविष्य में बिहार का नेतृत्व अपने हाथ में लेना चाहेगी। फिलहाल नीतीश उसके लिए एक 'ट्रांजिशनल फिगर' की तरह अधिक उपयोगी हैं। बिहार में पिछले डेढ़ दशक में सड़क, बिजली, कानून-व्यवस्था के क्षेत्र में सुधार हुआ है, परंतु बेरोजगारी, पलायन, उद्योग, स्वास्थ्य और शिक्षा के क्षेत्र में प्रगति धीमी रही। राज्य आज भी निवेश आकर्षित करने में पिछड़ा है। 50 लाख करोड़ बाहरी निवेश का वादा राजनीतिक जुमला है। सुरक्षा, कौशल, आधारभूत ढांचे और प्रशासनिक दक्षता सुधारे बिना यह लक्ष्य आशावादी से अधिक अव्यावहारिक प्रतीत होता है। नीतीश कुमार के लंबे शासनकाल की उपलब्धियां मिश्रित रही हैं। उन्होंने बुनियादी शासन-व्यवस्था को स्थिर बनाया, परंतु उद्यम, उद्योग, उच्च शिक्षा और रोजगार के अवसरों में बिहार अब भी देश के निचले पायदानों पर है। आने वाले दिनों में नई सरकार से उम्मीद रहेगी कि वह रोजगार, स्वास्थ्य ढांचे के विस्तार, निवेश और उद्योग-संबंधी सुधारों पर गंभीरता से कार्य करे। कमजोर विपक्ष नयी सरकार के लिए फायदेमंद है। कम सवाल, कम निगरानी और बिना बाधा विधेयकों के पारित होने की सहूलियत, परंतु यह उतना ही खतरनाक भी है, क्योंकि जवाबदेही का दबाव घटने से शासन में ढिलाई की आशंका रहती है।

भाजपा और जदयू ने इस चुनाव में कई बड़े बड़े वादे किए हैं। बुनियादी ढांचा, रोजगार, स्वास्थ्य, महिला सुरक्षा, निवेश, कौशल विकास, लेकिन इतिहास बताता है कि पिछली सरकार अपने अधिकाधिक वादों को पूरा नहीं कर पाई। इस कार्यकाल में वादों की पूर्ति की संभावना इसलिए कम है, क्योंकि गठबंधन की आंतरिक खींचतान और भविष्य की राजनीतिक महत्वाकांक्षाएं पहले से ही दिखाई दे रही हैं। आने वाले वर्षों में भाजपा अधिक सीटों पर दावा ठोकने की तैयारी करेगी, जिससे सहयोगियों के बीच तनाव बढ़ेगा। बिहार की जनता की अपेक्षाएं बहुत स्पष्ट हैं। रोजगार, शिक्षा, स्वास्थ्य और सुरक्षित जीवन। प्रश्न है कि क्या यह रिपीट सरकार इन अपेक्षाओं पर खरी उतरेगी?

एसआईआर पर विपक्ष खुद भी तो कुछ करे!

यशोदा श्रीवास्तव
वरिष्ठ पत्रकार

चुनाव आयोग पर आरोप है कि वह सत्ता पक्ष के लिए यूपी विधानसभा चुनाव और आगामी लोकसभा चुनाव की बिसात बिछा रहा है। बड़ा सवाल यह है कि जब एसआईआर चल रहा है, तब विपक्ष के लोग कहां हैं?

एसआईआर क्यों? इस सवाल का कोई मतलब नहीं। इस सवाल का भी कोई मतलब नहीं कि बिहार के बाद सिर्फ 12 राज्यों में ही एसआईआर क्यों? म्यांमार, जहां से सर्वाधिक रोहिंग्या घुसपैठ कर सीमावर्ती भारतीय प्रदेशों में विराजमान हैं, जैसा कि कहा जाता है, लेकिन म्यांमार के सीमावर्ती भारतीय प्रदेशों में एसआईआर की जरूरत चुनाव आयोग ने बिल्कुल नहीं महसूस की। यह तय है कि विपक्ष कितना भी चिल्ल-पों कर ले, यूपी में 2027 का विधानसभा चुनाव और 2029 में लोकसभा चुनाव एसआईआर के जरिए परिवर्तित वोटर लिस्ट से ही होना है।

एसआईआर की विसंगतियां कई हैं। जैसे- बीएलओ, जिन्हें एसआईआर फार्म घर घर पहुंचाने की जिम्मेदारी है, वह लगभग नहीं हो रहा है। जागरूक लोगों को बीएलओ को ढूंढकर एसआईआर फार्म लेना पड़ रहा है। राजस्थान से लेकर यूपी में ऐसे हजारों उदाहरण मौजूद हैं। यूपी के एक भाजपा विधायक के वायरल वीडियो पर यकीन करें, तो वह अपने लोगों से बहुत साफ शब्दों में कह रहे हैं कि विपक्षी वोटरों के नाम उड़ा दिए जाएं।

कांग्रेस नेता राहुल गांधी ने वोट चोरी के खिलाफ बड़ा आंदोलन चलाया, लेकिन क्या हुआ? किसने सुनी उनकी बात? उलटे 272 पूर्व जज और नौकरशाहों ने राहुल के खिलाफ चिट्ठी लिखकर विरोध जताया कि वे चुनाव आयोग जैसी 'पवित्र' संस्था को बदनाम कर रहे हैं। इन नौकरशाहों को ब्राजील की माडल का भारतीय वोटर लिस्ट में शामिल होकर कई जगहों पर मतदान करना गलत नहीं लगा और बिहार में बीच चुनाव सरकारी खजाने से लाखों महिलाओं को दस-दस हजार की इमदाद भी अचंभित नहीं किया।

जब दो पूर्व मुख्य चुनाव आयुक्त, मौजूदा चुनाव आयोग को दिशाहीन बता रहे हैं, तब लोकसभा में बहुमत के आंकड़े के बराबर 272 पूर्व नौकरशाहों का राहुल के खिलाफ खुलकर आना हैरान करने वाला है। तो क्या पूर्व नौकरशाहों के खुला विरोध को राहुल के खिलाफ 'महाभियोग' माना जाए?

इधर चुनाव आयोग एसआईआ करा रहा है और उधर विपक्ष बैठकें करने में व्यस्त है। बड़ा सवाल यह है कि जब एसआईआर चल रहा है, तब विपक्ष के लोग कहां हैं? बात केवल यूपी की करें, तो यहां आरोप लग रहे हैं कि एसआईआर एक पक्षीय चल रहा है। यह सब आसानी से होने क्यों दिया जा रहा है? सरकारी अमला तो सरकार के लोग होते हैं, वे वही करेंगे जो सरकार चाहेगी और यह आज की बात नहीं है। पहले भी सरकारें ऐसे ही करती रही हैं, लेकिन सत्ता में विराजमान राजनीतिक दलों के नेताओं, कार्यकर्ताओं के समतुल्य विपक्षी दलों के लोग ऐसा क्यों नहीं कर पाते?

यूपी में प्रमुख विपक्षी दल सपा है। आगामी विधानसभा चुनाव में इसे सत्ता के लिए जंग करनी है, लेकिन ये पार्टी भी पूरे यूपी में कुछ जगहों को छोड़कर एसआईआर को लेकर शायद ही कहीं और दिख रही हो। हां, वाट्सऐप पर इनके ज्ञान की भरमार है। वे जानते हैं कि उनके कोर वोटर कौन हैं और इन्हीं वोटरों को सहेजने में वे विफल हो रहे हैं।

दूसरी पार्टी कांग्रेस है। यूपी के लिए फिलहाल इसकी बात ही क्या करना। इसी मुद्दे को लेकर हाल ही में उसकी दिल्ली में हाई लेवल की बैठक हुई। इस बैठक में जो भी निर्णय लिए गए हों, उसका धरातल पर उतरना आसान नहीं है। यूपी में कांग्रेस के अभी छः सांसद हैं। सपा के साथ मिलकर 17 सीटों पर लड़ी थी। हारी हुई सीटों पर भी कांग्रेस की स्थिति सम्मानजनक थी। विधानसभा में कांग्रेस के सिर्फ दो विधायक हैं। एसआईआर को लेकर ये दो विधायक कितना कुछ कर पाएंगे, बताने की जरूरत नहीं। यहां संगठन भी हवा-हवाई है।

जिला कमेटी को छोड़ दीजिए बाकी ब्लाक स्तर की कमेटियां कहने भर को हैं। प्रदेश भर में एसआईआर को लेकर इक्का-दुक्का जिला अध्यक्ष ही सक्रिय हैं। बाकी सब के सब सुषुप्तावस्था में हैं। न्याय पंचायत और बूथ स्तर पर इनका कुछ नहीं है। चुनाव आयोग ने व्यवस्था दी है कि सरकारी बीएलओ के अलावा राजनीतिक पार्टियां अपना बीएलओ भी नियुक्त कर सकती हैं, ताकि चुनाव आयोग पर वोट काटने और जोड़ने की तोहमत न लगे। कांग्रेस इसमें भी सुस्त है। एसआईआर को लेकर विपक्ष के लापरवाह व सुस्ती का फायदा सत्ता पक्ष के कार्यकर्ता खूब उठा रहे हैं। विपक्ष को सक्रिय होने से किसने रोका है? विपक्ष यह समझने की भूल कर रहा है कि यह सामान्य एसआईआर नहीं है। इस एसआईआर का 'मूल सिद्धांत' ही कुछ और है।

बिहार चुनाव में बुरी तरह पराजित कांग्रेस इस खुशफहमी में हो सकती है कि वहां सर्वाधिक 65 लाख वोटर आउट किए जाने के बाद भी उसे औसतन करीब 71 हजार वोट प्रति विधानसभा सीट हासिल हुए। वह भी तब जब ओवैसी से लेकर बसपा, जन सुराज, आम आदमी पार्टी सहित अन्य छोटी पार्टियां महागठबंधन को ही नुकसान पहुंचाने के लिए चुनाव मैदान में थीं। आखिर ये पार्टियां तो यूपी विधानसभा चुनाव में भी होंगी और लोकसभा चुनाव में भी। आखिर इनसे सिसायीस तौर पर निपटने का प्लान कांग्रेस के पास क्या है?

दिल्ली में हुई कांग्रेस वर्किंग कमिटी की बैठक में वरिष्ठ कांग्रेस नेता दिग्विजय सिंह ने अपनी ही पार्टी से सवाल किया कि बिना संगठन के हम क्या करें? धरातल पर कोई संगठन ही नहीं है। बैठक में निस्संदेह और लोगों ने भी ऐसा ही महसूस किया होगा। कांग्रेस वर्किंग कमिटी के सदस्यों पर गौर करें, तो वह पूरा का पूरा दक्षिण भारतीयों के कब्जे में है। कांग्रेस वर्किंग कमिटी में करीब दो सौ सदस्य दक्षिण भारत से ही हैं। इसके अलावा ढेर सारे ऐसे लोग हैं, जो या तो भाजपा नेताओं से गलबहियां करते घूम रहे हैं या फिर बिना धरातल पर झांके कांग्रेस को दिल्ली की सत्ता में वापसी का ख्वाब दिखा रहे।

आमने

अमीर घर में पैदा हुए राहुल गांधी को धरातल की जानकारी नहीं है, जबकि प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने गरीबी देखी है, प्रधानमंत्री मोदी गरीब जनता का दुख-दर्द समझते हैं।

-पंडित मोहन लाल बड़ौली
भाजपा प्रदेश अध्यक्ष
हरियाणा

सामने

अपने प्राइम मिनिस्टर को खुश करने की बात है। न राहुल गांधी का वह मुकाबला कर सकते हैं। जिस तरह से राहुल जी आम लोगों के साथ मिलते-जुलते हैं। लोगों के बीच में जाते हैं। माननीय प्रधानमंत्री तो कभी ऐसे नजर ही नहीं आए।

-कुमारी शैलजा
कांग्रेस सांसद

भारतः यूएन में स्थायी सदस्य का बढ़ा समर्थन

अमित नारायण
कानपुर

अमेरिका भारत को स्थायी सदस्य बनाए जाने का समर्थक तो रहा है, लेकिन उसने कभी नहीं चाहा कि भारत को वीटो मिले। उम्मीद है कि उसका रुख भी अब सकारात्मक ही रहेगा।

1.40 अरब की आबादी वाले भारत को वीटो पॉवर के साथ संयुक्त राष्ट्र संघ का स्थायी सदस्य बनाने की मांग ने जोर पकड़ लिया है। रूस और ब्रिटेन के बाद अब फ्रांस ने भी खुलकर भारत को वीटो पॉवर की शक्ति के साथ स्थायी सदस्य बनाने की मांग संयुक्त राष्ट्र संघ रिफॉर्म डिबेट में उठा दी है। इस बैठक में चीन ने भारत का विरोध न करके यह संकेत दे दिया है कि वह अब भारत के खिलाफ नहीं है, लेकिन उसने खुलकर समर्थन नहीं किया है। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की कूटनीति का ही असर है कि पहली बार चीन ने भारत का विरोध नहीं किया है। इससे यह उम्मीद की जा सकती है कि अब भारत की राह में कोई रोड़ा नहीं रह गया है, हालांकि चीन ने जापान के नाम का खुलकर विरोध किया है। संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद में पांच स्थायी और 10 अस्थायी सदस्य होते हैं। अमेरिका, रूस, चीन, फ्रांस और ब्रिटेन को स्थायी सदस्यता हासिल है। इन देशों के पास वीटो का अधिकार है, जबकि अस्थायी सदस्य दो-दो साल के लिए चुने जाते हैं। उनका चुनाव क्षेत्रीय संतुलन को ध्यान में रखकर किया जाता है।

परिषद की स्थापना को 80 साल हो चुके हैं। भारत समेत दुनिया के कई देश चाहते हैं कि इसके स्ट्रक्चर में बदलाव किया जाए और भारत समेत कुछ और देशों को वीटो की शक्ति के साथ स्थायी सदस्य बनाया जाए, लेकिन स्थायी सदस्य नहीं चाहते कि उनके बराबर कोई और देश खड़ा हो, इसलिए वे भारत को स्थायी सदस्य बनाना तो चाहते हैं, पर वीटो की शक्ति नहीं देना चाहते। चीन तो अब तक भारत के विरोध में ही रहा है। जब भी भारत का नाम आया, उसने पाकिस्तान को भी स्थायी सदस्य बनाने की मांग रखकर अड़ंगा लगाया, लेकिन ब्रिटेन और रूस के बाद अब फ्रांस का भारत को स्थायी सदस्य बनाने के साथ ही वीटो की शक्ति देने की मांग उठाना भारत की बड़ी कूटनीतिक जीत है।

भारत वैश्विक स्तर पर और अधिक महत्वपूर्ण भूमिका निभा सके, इसके लिए जरूरी है कि उसे संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद का स्थायी सदस्य बनाया जाए। स्थायी सदस्य बनने का मतलब है कि अंतर्राष्ट्रीय शांति और सुरक्षा में भारत का योगदान और बढ़ जाएगा। सुरक्षा परिषद में स्ट्रक्चर में बदलाव को लेकर चर्चा हो रही है। अगर इसमें सहमति बनती है, तो भारत स्थायी सदस्य बन जाएगा, वह भी वीटो पॉवर के साथ। फ्रांस ने कहा है कि वीटो पॉवर के साथ भारत को स्थायी सदस्यता मिलनी चाहिए। भारत जनसंख्या के मामले में दुनिया का पहला सबसे बड़ा देश है। भारत का रुख साफ है। वह दो अफ्रीकी देशों को स्थायी सदस्यता दिलाना चाहते हैं। भारत के अलावा ब्राजील, जर्मनी और जापान को भी एक-एक सीट मिलनी चाहिए, क्योंकि अंतर्राष्ट्रीय मंच पर इन देशों की जिम्मेदारियां हैं।

चीन के स्थायी दूत ने बैठक में भारत का विरोध नहीं किया है, जो उसके भारत के प्रति बदलते नजरिए को दिखाता है। चीन ने सिर्फ जापान का विरोध किया और कहा कि जापान जिस तरीके से ताइवान के मुद्दे पर मुखर है, उससे यह साबित होता है कि जापान यूएन की स्थायी सदस्यता मांगने का कोई अधिकार नहीं रखता है। यदि जापान को स्थायी सदस्यता देने की कोशिश की गई, तो हम इसका खुलकर विरोध करेंगे। चीन के रुख से अब उम्मीद है कि भारत आसानी से स्थायी सदस्य बन जाएगा। हां, अमेरिका को भी इसके लिए तैयार करना होगा कि वह भी भारत को वीटो की शक्ति देने के लिए तैयार हो। उसे मनाने का काम प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी की टीम तो करेगी ही, फ्रांस और ब्रिटेन भी अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप को समर्थन के लिए तैयार कर लेंगे, हालांकि अमेरिका भारत को स्थायी सदस्य बनाए जाने का प्रबल समर्थक रहा है, लेकिन उसने भी कभी नहीं चाहा कि भारत को वीटो मिले, लेकिन उम्मीद है कि उसका रुख भी अब सकारात्मक रहेगा।

चीन की टैरिफ के मुद्दे पर अमेरिका से छिड़ी रार के बाद वह भारत के समर्थन में कई मुद्दों पर खुलकर आगे आया है। पाकिस्तान की अमेरिका से बढ़ती नजदीकी से चीन नाराज है। ऑपरेशन सिंदूर के दौरान उसने पाकिस्तान का पर्दे के पीछे से साथ दिया था, लेकिन अचानक अमेरिका के पाले में पाकिस्तान के जाने से चीनी राष्ट्रपति शी जिनपिंग भी सकते में हैं। पाकिस्तान की धरती पर अमेरिका कई बड़े मिनरल्स का खनन करने जा रहा है। उम्मीद की जा रही है कि वह पाकिस्तान में अपना सैन्य बेस भी बना सकता है। यदि ऐसा होता है तो चीन के लिए यह शुभ संकेत नहीं होगा। यही वजह है कि अब चीनी नेतृत्व धीरे-धीरे भारत के करीब आ रहा है और पाकिस्तान की नीतियों का समर्थन करने से बच रहा है।

सुरक्षा परिषद का स्थायी सदस्य बनने के लिए उसके चार्टर में संसोधन करना होगा। भारत को सभी स्थायी सदस्यों का समर्थन लेने के साथ ही जनरल असेंबली में दो तिहाई सदस्यों का समर्थन प्राप्त करना होगा। फिलहाल परिषद में 193 देश सदस्य के रूप में हैं। इनमें से 145 देशों का समर्थन हर हाल में भारत को चाहिए। वैसे तुर्किए, पाकिस्तान, अजरबैजान को छोड़ दें, तो शायद ही कोई देश भारत के विरुद्ध खड़ा हो। हालांकि अजरबैजान के रुख में भी परिवर्तन आया है। वह भारत से धीरे-धीरे दोस्ती बढ़ाने की कोशिश कर रहा है।

प्रसंगवश

असमानताः 'बेटा', तुम बहुत अच्छा कर रही हो!

"बेटा, तुम बहुत अच्छा कर रही हो!" यह वाक्य हमारे समाज और शिक्षा व्यवस्था में लगभग हर दिन सुनाई देता है। बच्ची जब कोई अच्छा काम करती है, तो शिक्षक, अभिभावक या रिश्तेदार उसे प्रोत्साहित करते हुए अक्सर "बेटा" कहकर सराहते हैं। यह सुनने में सामान्य लगता है, क्योंकि हमारे सामाजिक परिवेश में 'बेटा' शब्द सफलता और उत्कृष्टता का मानक बन चुका है, लेकिन क्या कभी किसी लड़के से कहा गया है, "बेटी, तुम बहुत अच्छा कर रहे हो"? शायद कभी नहीं और यदि कहा भी गया हो, तो लोग इसे मजाक में टाल देते हैं। यही हमारी भाषा में गहरे छिपा हुआ लैंगिक असमानता है, जो सुनाई तो देता है, पर चुभता नहीं।

भाषा और समाज का रिश्ता बहुत गहरा है। हमारी सोच, दृष्टि और संस्कारों को गढ़ने में भाषा की भूमिका निर्णायक होती है। हम जो बोलते हैं, वही हमारी मानसिकता और दृष्टिकोण को प्रतिबिंबित करता है और वही बच्चों की सोच का हिस्सा बन जाता है। जब भाषा में असमानता छिपी होती है, तो वह बच्चों की आत्म-छवि और आत्मविश्वास को भी असमान बना देती है। बचपन में बच्चे अपने बारे में वही मानने लगते हैं, जो वे बार-बार सुनते हैं। यदि किसी बच्ची को सराहने के लिए भी 'बेटा' कहना जरूरी समझा जाता है, तो इसका संदेश यही है कि उत्कृष्टता, साहस या नेतृत्व लड़का होने के गुण हैं। इससे अनजाने में बच्ची को यह महसूस होने लगता है कि 'बेटी' होना पर्याप्त नहीं है। उसे मूल्यवान बनने के लिए 'बेटा' कहलाना होगा। दूसरी ओर लड़के को 'बेटी' कहकर सराहना लगभग असंभव है। यही भेद-भाव बच्चों की पहचान और आत्मविश्वास पर गहरा असर छोड़ता है। शब्द केवल वाक्य नहीं होते, वे धारणाएं गढ़ते हैं।

सत्य प्रकाश नायक
एक्टिविस्ट

कक्षा में बैठी लड़कियां अनजाने ही इन वाक्यों से बाहर रह जाती हैं। यदि शिक्षक कहते 'कौन करेगा या करेगी?' तो भाषा में ही बराबरी की खिड़की खुल जाती। कुछ विद्यालयों में तो समूहों के नाम तक इस असमानता से प्रभावित होते हैं। कई स्कूलों में केवल पुरुष महापुरुषों गांधी, नेहरू, विवेकानंद, भगत सिंह के नाम पर समूह बनाए जाते हैं। प्रेरणादायक महिलाओं जैसे रानी लक्ष्मीबाई, रानी कमलापति, अवंतिबाई, कल्पना चावला, टेस्सी थॉमस, सुधा मूर्ति या अन्य महिला वैज्ञानिकों, खिलाड़ियों, लेखिकाओं के नाम शायद ही किसी को सूझते हों। जब बच्चों के सामने आदर्शों के रूप में केवल पुरुष चेहरे आते हैं, तो संदेश यह जाता है कि नेतृत्व और पराक्रम का चेहरा भी मात्र पुरुष ही है।

भाषा की जड़ें बहुत गहरी हैं। यह संवाद का माध्यम होते हुए भी अनजाने ही जेंडर असमानता को ढोती रहती है। 'करेगा', 'लाएगा', 'नेता बना', 'मर्द बनो' जैसे वाक्य हमारे अवचेतन में पुरुष-प्रधान सोच को पुख्ता करते हैं। भाषा ऐसे विचारों को वैधता देती है, जिन्हें हम शायद सचेत रूप से नहीं मानते। पाठ्यपुस्तकों में भी इसी असमानता की झलक है। ज्यादातर उदाहरणों में 'रवि', 'सुमित', 'राजेश' विज्ञान प्रयोग करते, खेल जीतते या पुरस्कार पाते दिखते हैं, जबकि लड़कियों के हिस्से में 'रीना मां की मदद करती है' या 'सीमा गुड़िया से खेलती है', जैसे दृश्य आते हैं। इससे बच्चों के मन में यह धारणा मजबूत होती है कि सक्रियता और खोज लड़कों का क्षेत्र है, जबकि देखभाल और सहयोग लड़कियों का। रोजमर्रा की भाषा भी इस सोच को बढ़ाती है, 'लड़की होकर ऐसे बोलती है?', 'बेटी, घर का ध्यान रखो', 'बेटे, बाहर का काम तुम संभालो।' यहां शब्दों के जरिए भूमिकाएं बांट दी जाती हैं एक भीतर की, एक बाहर की।

सोशल फोरम

एक कामयाब इनसान की नाकाम दास्तान

यह व्यक्ति 1809 में जन्मा था। 1816 में, 7 साल की उम्र में, उसे काम करने के लिए मजबूर किया गया, क्योंकि उसका परिवार बेदखल किया जा रहा था। 1818 में, उसने अपनी मां को खो दिया। 1828 में, उसने अपनी बहन को खो दिया। 1831 में, उसने अपना पहला व्यवसाय शुरू किया और दिवालिया हो गया। 1832 में, उसने विधानसभा के चुनाव में हिस्सा लिया और हार गया।

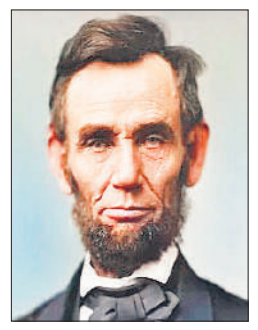

संजीव कुमार
शिक्षक

1833 में, उसने एक और व्यवसाय शुरू करने के लिए पैसे उधार लिए और फिर से दिवालिया हो गया। 1835 में, उसे एक अद्भुत महिला से प्रेम हुआ। वे दोनों सगाई करते हैं और वह महिला मर जाती है। 1836 में, वह अपने जीवन के अत्यंत अंधेरे दौर से गुजरा और गहरे अवसाद में चला गया। वह लगातार 6 महीने बिस्तर से उठा ही नहीं, लेकिन फिर वह उठा।

वह उठा और उसी साल 1836 में उसने फिर से विधानसभा के चुनाव लड़े और फिर हार गया। 1840 में, उसने चुनाव लड़ा और हार गया। 1842 में, वह उस महिला से मिला, जिसके साथ वह बूढ़ा होगा- उसकी पत्नी। वे प्रेम में पड़े, सगाई की, शादी की और उसने उसे चार बच्चे दिए, जिनमें से तीन को वे खो बैठे। 1843 में, उसने कांग्रेस के लिए चुनाव लड़ा और हार गया। 1845 में, उसने फिर से कांग्रेस के लिए चुनाव लड़ा और फिर हार गया।

1850 में, बेटा मर गया। 1854 में, उसने सीनेट का चुनाव लड़ा और हार गया। 1856 में, उपराष्ट्रपति पद के लिए चुनाव लड़ा और सौ वोट भी हासिल नहीं कर सका। 1858 में, उसने फिर सीनेट के लिए चुनाव लड़ा और फिर हार गया और 1860 में, अब्राहम लिंकन संयुक्त राज्य अमेरिका के राष्ट्रपति चुने गए और उन्होंने दो अद्वितीय कार्यकाल पूरे किए, जिन्होंने उन्हें अमेरिकी इतिहास के सबसे सम्मानित राष्ट्रपतियों में से एक बना दिया।

हम केवल नायक को देखते हैं, लेकिन सफलता के पर्दे के पीछे की कठिनाइयां नहीं देखते। -फेसबुक वाल से

सामयिकी

हर दसवां भारतीय मधुमेह का शिकार

हाल ही में जारी अंतर्राष्ट्रीय मधुमेह महासंघ (आईडीएफ) की रिपोर्ट बताती है कि दुनिया में 589 मिलियन वयस्क मधुमेह से पीड़ित हैं, जबकि 252 मिलियन लोग इस बात से बिल्कुल अनभिज्ञ हैं कि वे इस बीमारी की गिरफ्त में हैं। वहीं भारत में भी हर दसवां वयस्क डायबिटीज का रोगी है। ऐसे में मधुमेह यानी डायबिटीज अब केवल एक बीमारी नहीं, बल्कि एक मौन महामारी बन चुकी है। विशेषज्ञ चेतावनी दे रहे हैं कि यदि स्थिति पर तुरंत नियंत्रण नहीं पाया गया, तो 2050 तक भारत में मधुमेह रोगियों की संख्या 15.7 करोड़ तक पहुंच सकती है, जो स्वास्थ्य व्यवस्था के लिए गंभीर चुनौती होगी।

आईडीएफ की रिपोर्ट के अनुसार, वयस्कों में मधुमेह की दर 11.1 प्रतिशत तक पहुंच चुकी है, जो अब तक का सबसे ऊंचा स्तर है। मधुमेह केवल शुगर की समस्या नहीं, बल्कि यह शरीर के अन्य अंगों हृदय, किडनी, आंखों और मस्तिष्क पर गहरा असर डालती है। दुनिया के साथ भारत में भी स्थिति चिंताजनक है। देश में फिलहाल लगभग 89 मिलियन लोग डायबिटीज से जूझ रहे हैं, जबकि 50 फीसदी लोग ऐसे हैं, जिन्हें ये तक नहीं पता कि वे डायबिटीज से ग्रसित हैं।

देवेंद्र सिंह
वरिष्ठ पत्रकार

यह आंकड़ा तब और भयावह लगता है, जब यह जानने को मिलता है कि यह रोग अब बड़ों के साथ बच्चों और किशोरों में भी तेजी से फैल रहा है। वर्ष 2024 में मधुमेह संबंधी स्वास्थ्य व्यय पहली बार एक ट्रिलियन अमेरिकी डॉलर से पार गया है। विशेषज्ञों का कहना है कि मधुमेह जीवन भर साथ रहने वाली बीमारी है। एक बार इसकी चपेट में आने के बाद इसे नियंत्रित करना ही एकमात्र उपाय रह जाता है।

देश के कई राज्यों में हालात बेहतर नहीं हैं। गोवा में डायबिटीज की दर 26.4 प्रतिशत के साथ सबसे अधिक है। पुडुचेरी 26.3 प्रतिशत के साथ दूसरे स्थान पर है। केरल 25.5 प्रतिशत के साथ तीसरे स्थान पर है। राजस्थान में इस वर्ष के अंत तक मधुमेह रोगियों की संख्या दस लाख तक पहुंचने का अनुमान है। राष्ट्रीय परिवार स्वास्थ्य सर्वेक्षण के अनुसार, राज्य में मधुमेह का प्रसार लगभग 10 प्रतिशत है, जबकि सिर्फ पिछले दस महीनों में छह लाख नए मामले सामने आए हैं। यह इस बात का संकेत है कि बीमारी कितनी तेजी से पैर पसार रही है।

उत्तर प्रदेश में यह दर 4.8 प्रतिशत है, लेकिन यह तेजी से बढ़ रही है। उल्लेखनीय है कि ग्रामीण और शहरी दोनों क्षेत्रों में अब इस बीमारी की दर में कोई खास अंतर नहीं बचा है। यह धारणा पूरी तरह टूट चुकी है कि मधुमेह केवल शहरी जीवनशैली की देन है। इंडियन काउंसिल ऑफ मेडिकल रिसर्च की रिपोर्ट के अनुसार, देश के केवल सात प्रतिशत मरीज अपनी बीमारी को लेकर गंभीर हैं और इसे नियंत्रण में रखने के लिए सभी चिकित्सकीय सलाहों का पालन करते हैं। बाकी 93 प्रतिशत मरीज या तो अपनी बीमारी को हल्के में लेते हैं या उसकी गंभीरता से अनजान रहते हैं। यही लापरवाही आगे चलकर गंभीर जटिलताओं को जन्म देती है।

मधुमेह के साथ हृदय रोग, उच्च रक्तचाप, स्ट्रोक और किडनी फेल्योर जैसी समस्याएं जुड़ी रहती हैं। इस बीमारी से पीड़ित लोगों में साइलेंट हार्ट अटैक का खतरा कई गुना अधिक होता है। अनुसंधान बताते हैं कि जो व्यक्ति मधुमेह से मुक्त हैं, उनमें दिल का पहला दौरा पड़ने पर मरने की संभावना 20 प्रतिशत होती है, जबकि मधुमेह रोगियों में यह संभावना 80 प्रतिशत तक पहुंच जाती है। अब मधुमेह केवल बुजुर्गों या मध्यम आयु वर्ग तक सीमित नहीं रहा। यह युवाओं और किशोरों तक पहुंच चुका है। 12 से 13 वर्ष के बच्चों में टाइप-2 डायबिटीज के मामले सामने आना बेहद चिंताजनक है।

स्वामी-रुहेलखंड इंटरप्राइजेज के लिए मुद्रक एवं प्रकाशक हरि ओम गुप्ता द्वारा अमृत विचार प्रकाशन, नवादा जोगियान, चक रोड, रोहिलखंड मेडिकल कॉलेज के सामने, बरेली (उ.प्र.), पिन कोड-243006 से मुद्रित एवं 932 कटरा चांद खां, भारत पेट्रोल पंप के सामने पीलीभीत बाईपास रोड बरेली (उ.प्र.) पिन कोड-243005 से प्रकाशित। **संपादक- राजेश श्रीनेत, स्थानीय संपादक- नवीन गुप्ता*** 0581-4000222 (कार्यालय), ईमेल- editorschoice@amritvichar.com, आर.एन.आई नं0-UPHIN/2019/78502, *इस अंक में प्रकाशित समाचार के चयन एवं संपादन हेतु पी.आर.बी. एक्ट की धारा 7 के अंतर्गत उत्तरदायी। (नोट-सभी विवादों का न्यायक्षेत्र बरेली होगा)।

जीवन में संस्कारों से होती है व्यक्ति की पहचान

जीवन में अच्छे संस्कारों से अच्छे इंसान की पहचान की जाती है। दूसरी ओर हम यह कह सकते हैं कि अच्छे संस्कार बेहतर जीवन की नींव होते हैं। मानव जीवन में सबसे पहले दृश्य होने वाले भाव उसके संस्कार ही होते हैं। सरल शब्दों में कहें, तो संस्कार बिन मनुष्य पशु समान है। अच्छे बुरे का भेद हमें संस्कारों से ही पता चलता है। बच्चे जो कुछ भी सीखते हैं वे सब संस्कारों की श्रेणी में फलता फूलता है। अच्छे संस्कार बेहतर कल का निर्माण करने में सहायक होते हैं। वास्तविकता पर प्रकाश डाला जाए, तो हमें ज्ञात होगा कि हमारे हर एक कार्य पर संस्कारों की छवि झलकती है। फिर चाहे वह कार्य छोटा हो या बड़ा, हमारा हर आचरण हमारे संस्कारों को ही दर्शाता है। भला ऐसे कौन से माता–पिता होंगे, जो अपने बच्चों को अच्छे संस्कारों से हीन देखना चाहते होंगे?

शिवालिक अवस्थी
लेखक

बचपन से ही दें अच्छी परवरिश

हम बात तो यहां अच्छे संस्कारों की कर रहे हैं, लेकिन बचपन से ही अच्छे संस्कारों का समावेश कैसे किया जाए यह बात ध्यान देने योग्य है। आईए इस पर थोड़ा प्रकाश डालते हैं। बच्चों में अच्छे संस्कारों का सृजन माता-पिता द्वारा जीवन के शुरुआती दौर में ही कर देना चाहिए। बढ़ती उम्र के साथ बच्चों को हर एक संस्कार से रूबरू करवाना माता-पिता का कर्तव्य समझा जाता है। हर कार्य को सही ढंग से पूर्ण करना चाहिए, जिसके लिए बच्चों को अच्छे-बुरे की पहचान होना अनिवार्य हो जाता है। कौन सा कार्य अच्छा है और कौन सा कार्य बुरा है यह संस्कारों के अधीन ही समझा जाता है। सुबह उठते ही बच्चों द्वारा अपना बिस्तर समेटना, उनके संस्कार को दर्शाता है। दिनचर्या के कार्यों को सही ढंग से पूर्ण करना, संस्कारों की श्रेणी में आता है। भोजन कैसे ग्रहण किया जाता है यह भी संस्कारों में शामिल किया गया है।

अच्छे संस्कारों के कारण बच्चे अपने रोजमर्रा के कार्यों को सफलतापूर्वक करने में सक्षम बन जाते हैं। सही ढंग से भोजन ग्रहण करना सीख जाते हैं। बेहतर संस्कारों के कारण ही बच्चे, बड़ों का आदर सम्मान करना सीख जाते हैं। बच्चों को अच्छाई-बुराई का बोध भी अच्छे संस्कारों के कारण ही होता है। कौन सा कार्य करना उचित है और कौन सा अनुचित यह बच्चों को संस्कारों के ग्रहण करने से ज्ञात हो जाता है। आज के इस युग में कई जगह देखा जाता है कि बच्चों के जीवन से संस्कार लुप्त होते जा रहे हैं, जिस कारण बच्चों द्वारा कार्य करने के तरीके भी बदल चुके हैं। अब बच्चे बिना मोबाइल के भोजन तक ग्रहण नहीं करते हैं, जो सरासर गलत है। नतीजन भोजन पाचन क्रिया में कठिनता नजर आने लगी है। कई बच्चे तो एक ओर टीवी अथवा मोबाइल को देखने के लिए लेटे होते हैं, तो दूसरी ओर वह भोजन भी ग्रहण कर रहे होते हैं। अब इस क्रिया में बच्चों का पेट कैसे भरेगा और भोजन कैसे पचेगा यह समझ से परे है। नतीजन मोटापे या कुपोषण जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ रहा है।

दूसरी ओर बच्चों में यदि संस्कार अच्छे होंगे, तो बच्चे भी बड़े-बुजुर्गों के साथ बैठकर आराम से भोजन ग्रहण करेंगे, जो जीवन में अति आवश्यक भी है। आजकल ज्यादातर बच्चों ने अपने से बड़ों के पांव छूकर आशीर्वाद लेने का महत्व भी खो दिया है। बच्चों को चाहिए कि वे रोज सुबह उठकर अपने माता-पिता के पांव छूकर स्कूल जाएं। स्कूल में अपने गुरुजनों का आशीर्वाद लिया जाए। अथवा घर में कोई मेहमान आए, तो उसके भी पांव छूकर आशीर्वाद लिया जाए। यह क्रियाएं नैतिक संस्कारों की श्रेणी में आती हैं, जिनका प्रभाव जीवन भर रहता है। जीवन में स्वछता को अपनाना भी संस्कार माना गया है। इसलिए बच्चों को स्वछता का भी विशेष ध्यान रखना चाहिए। स्वछता के अलावा सुबह जल्दी उठना, रात को जल्दी सोना भी बच्चों के विशेष संस्कारों में सम्मिलित होना चाहिए। स्कूल की बात करें, तो बच्चों को अपने गुरुजनों का सदैव सम्मान करना चाहिए। अपने गुरु के कहे शब्दों को ध्यानपूर्वक ग्रहण करना चाहिए। स्कूल के नियमों का पालन करना चाहिए और नियमों का पालन वही विद्यार्थी कर सकता है, जिसके भीतर संस्कारों का बीज अंकुरित किया जा चुका हो।

मोबाइल से बच्चों को दूर रखें

आज के समय में बच्चों में संस्कार मानो लुप्त होते जा रहे हैं। बच्चे चिड़चिड़ेपन का शिकार होते जा रहे हैं। बच्चे घर में आए मेहमानों से मिलने को कतराते हैं। अकेलेपन को ज्यादा पसंद करने लगे हैं। मोबाइल से ज्यादा लगाव लगाकर बैठे हैं। मानो बच्चों ने अपना बचपन ही बेच दिया हो। दुनिया की इस चकाचौंध में बच्चे अपना बचपन खो बैठे हैं। अब जरूरत है, तो बच्चों के खोए हुए बचपन को लौटाने की, जिसमें संस्कार अपनी विशिष्ट भूमिका निभा सकते हैं। बच्चों में ऐसे संस्कार निहित होने चाहिए, जिनसे वह जीवन का मूल मकसद समझ सकें। माता-पिता और गुरु यह तीन ऐसे मजबूत स्तंभ हैं, जो बच्चों में संस्कारों का निर्माण करने में सक्षम होते हैं। बच्चों के जीवन की नींव इन्हीं तीन स्तंभों पर टिकी होती है। बाहर हर बच्चा अक्सर वैसा ही व्यवहार करता है जैसा वह घर के वातावरण से सीखता है, इसलिए विशेष रूप से माता-पिता को चाहिए कि वह अपने बच्चों में संस्कारों की ऐसी पैदावार करें, जो जीवनपर्यंत बच्चों के लिए फलदायक साबित हो।

...फिर जिले में कभी तैनाती नहीं ली

आपबीती

बात है वर्ष 1986 की, जिला बुलंदशहर में सीओ अनूप की तैनाती के तीन महीने में कप्तान साहब ने मेरे कार्यक्षेत्र के पांच थानों में फेरबदल करते हुए दो छोटे थाने हटाकर दो बड़े थाने पकड़ा दिए। अब अलीगढ़ सीमा से मुरादाबाद (अब अमरोहा जिला) सीमा तक गंगा किनारे का बड़ा इलाका पुलिसिंग के लिए मिल गया। नए मिले थानों के बारे में ब्रीफ किया गया कि साल के शुरुआती ढाई महीने में ही डकैती के एक दर्जन से अधिक मामले दर्ज हो चुके हैं और मेरे इलाके में अपराध कमोबेश कंट्रोल में है। नए लड़के हैं, जाकर इस इलाके में कंट्रोल कीजिए। उसी शाम एक कोतवाली पर पंहुचकर उपनिरीक्षकों से अपराध के बारे में चर्चा की। इंस्पेक्टर को क्राइम कंट्रोल मे विफल रहने के कारण हरिद्वार कुंभ मेला ड्यूटी भेज दिया गया था। बचे थाना पर तीन–चार नए और तीन पुराने दारोगा।

पुरानों दारोगाओं में सीनियर इंचार्ज पी. पी. सिंह शांत स्वभाव के और दिनभर मेहनत करने वाले अफसर थे। दूसरे यादव जी थे, लिखा-पढ़ी में इतने माहिर कि तफ्तीश में कोई भी नतीजा लिख दें, उसमें कमी निकाल पाना आसान नहीं होता था। तीसरे खुर्शीद गौहर-50 से ऊपर की उम्र में सुंदर व शालीन व्यक्तित्व के मालिक, उतनी ही नफासत भरी बातचीत, मानो पश्चिमी उप्र में लखनऊ उतर आया हो। सेवा में नए होने के कारण पूरी गंभीरता से डकैतियों की रोकथाम की कार्ययोजना के बारे में पूछने पर जनाब खुर्शीद गौहर साहब ने लखनवी अंदाज में फरमाया- 'हुजूर! अब आप का हुक्म है, तो नहीं पड़ेंगी।' मेरी जिज्ञासा पर उन्होंने बतलाया- 'साहब! मेहनत से गश्त की जाएगी। मुखबिरान मामूर (सक्रिय) किए जाएंगे। माशाल्लाह! आप भी जवान हैं, रात भर इलाके में घूमते ही रहते हैं। डकैती की क्या मजाल, जो पड़ जाएगी।'

इसके बाद अगले दो-ढाई महीनों तक उन नए थानों में डकैती तो दूर, चोरी-नकबजनी पर भी मानो ब्रेक सा लग गया। मासिक क्राइम मीटिंग में कप्तान साहब जब कहते कि नया लड़का है, कैसे क्राइम कंट्रोल कर रखा है, तो सीना खुद-ब-खुद चौड़ा हो जाता। इस बीच मंडल के डीआईजी साहब भी शाबासी दे गए। कुछ ही दिन बाद उसी थाना क्षेत्र के एक उभरते युवा नेता अपने शस्त्र लाइसेंस के प्रार्थना पत्र पर संस्तुति कराने के सिलसिले में मिलने आए। मैं खाली बैठा था, सो बातचीत का सिलसिला निकल पड़ा। बातों-बातों में नेताजी ने उक्त थाने के कामकाज की तारीफ करते हुए जो कहा, उसने मेरे पैरों तले से जमीन हिला दी। उन्हीं के शब्दों में-'साब, जबसे आपने हमारे थाने को संभाला है, पुलिस इतनी मेहनत कर रही है कि पूछिऐ मत। पहले तो रात में निकलता ही नहीं था कोई। अभी हाल में फलाने गांव मे डाका पड़ा, इतनी मेहनत करी पुलिस ने और पिछले महीने ढिमके गांव में डकैती पड़ी, साब, कितनी मेहनत की पुलिस वालों ने। गजब का सुधार हुआ है, आप के आने से...' अब मुझे काटो तो खून नहीं। उन्हें विदाकर अपने बुजुर्ग पेशकार ओमप्रकाश सिंह तोमर को बुलाकर नेताजी की तारीफ के बारे में बतलाते हुए चिंता व्यक्त की। पेशकार बहुत अनुभवी थे। उन्होंने कहा कि कोई शिकायत तो नहीं आई है सर। ऊपर के अफसर भी कहां चाहते हैं कि क्राइम बढ़े। जब कोई शिकायत आएगी, तब कार्रवाई कर दीजिएगा।

मुझे परेशानी से उबरता न देखकर पेशकार साहब ने विभाग का रहस्य बतलाया कि सरकार से थानेदार तक कोई नहीं चाहता कि अपराध बढ़ता दिखाई दे। सब आंकड़ों का खेल है। अपराध के आंकड़े बढ़ने पर विपक्ष सरकार को घेर लेती है और सरकार अफसरों को। थानेदार लूट-डकैती नहीं लिखता है। अफसरों की नौकरी बचाने के लिए और चोरी-नकबजनी नहीं लिखता है, अपनी थानेदारी बचाने के लिए, लेकिन सच यह है कि डकैती न लिखने पर भी मौके पर सारी कार्रवाई का दिखावा करना पड़ता है, अपराधी भी पकड़े जाते हैं, बस उन्हें डकैती के बजाय डकैती की योजना बनाते हुए पुलिस मुठभेड़ में तमंचा आदि के साथ पकड़कर बंद कर दिया जाता है। फिर उनकी पिटाई कर इतनी दहशत भर दी जाती है कि वह महीनों जमानत नहीं कराते। अभी जो बदमाश मुठभेड़ में मारे गए हैं, वह सभी शातिर लुटेरे हैं। बाकी क्राइम कंट्रोल मिमिमाइजेशन (अपराध को हल्के धाराओं में दर्ज करना) और कंसीलमेंट (अपराध को बिल्कुल न लिखना) पर ही चल रहा है पूरे सूबे में। इसके बाद मेरे ज्ञान चक्षु खुल गए और मैंने कभी जिला पुलिस में तैनाती के लिए कोशिश नहीं की और नौकरी का बड़ा हिस्सा इंटेलिजेंस, विजिलेंस और सुरक्षा में बिताकर आज से साढ़े आठ साल पहले रिटायर हो गया।

-अरुण गुप्ता
पूर्व आईपीएस, उप्र

लव बर्ड्स

वो दोस्त जो जीवनसाथी बन गया

दोस्ती-एक ऐसा रिश्ता जो धीरे-धीरे जीवन की सबसे मजबूत नींव बन जाता है। कुछ ऐसा ही मेरे साथ भी हुआ। मुझे आज भी याद है, 2009 की बात है, जब मैं केमिस्ट्री की कोचिंग कर रही थी। हमारी क्लास में एक लड़का था, हमेशा शांत, विनम्र और पढ़ाई में अव्वल। वहीं मैं स्वभाव से काफी चंचल थी। हमारी कोचिंग के दिनों में हम दोनों के बीच लगभग कोई बातचीत नहीं होती थी। कोचिंग पूरी होने के बाद मैं बीएससी करने चली गई और वह भी अपनी पढ़ाई में व्यस्त हो गया। अचानक एक दिन हमारी मुलाकात हुई और वहीं से हमारी दोस्ती की शुरुआत हुई। समय के साथ यह दोस्ती गहरी होती गई और हम अपनी छोटी-बड़ी सभी बातें एक-दूसरे से साझा करने लगे।

इसी दौरान मेरी बड़ी बहन, जिन्हें ब्रेन ट्यूमर था, उनका ऑपरेशन दिल्ली के एम्स में होना था। उस समय मेरे साथ केवल दो बहनें थीं-एक जो बीमार थीं और दूसरी जो मेरा सहारा बनी हुई थीं। वहां छोटी-छोटी जरूरतों के लिए भी हमें कई परेशानियों का सामना करना पड़ रहा था। यह बात मैं अक्सर अपने दोस्त से साझा करती थी। शायद उसे महसूस हुआ कि हम वहां अकेले संघर्ष कर रहे हैं, इसलिए उसने अपने घर पर झूठ बोलकर दिल्ली पहुंचने का फैसला कर लिया। दिल्ली पहुंचकर उसने मेरी बड़ी बहन के साथ मिलकर सारा काम संभाल लिया। ऑपरेशन सफल रहा और मेरी बहन पूरी तरह ठीक हो गई। इस घटना के बाद हमारी दोस्ती और मजबूत हो गई। वह मेरे घर आने-जाने लगा और देखते ही देखते हमारे परिवार का एक अभिन्न हिस्सा बन गया। इसी बीच मेरे शादी के रिश्तों की बातचीत भी चल रही थी। घर में पापा की सबसे छोटी और सबकी लाडली होने के कारण सभी मेरे लिए बेहतर से बेहतर रिश्ता ढूंढने में लगे थे। लेकिन मेरे मन में लगातार एक डर था कि कहीं मेरा विवाह ऐसी जगह न हो जाए जहां मैं अपनी तरह से जीवन न जी सकूं। कई रिश्ते आते-जाते रहे, और मैं लगातार उलझन में डूबी रही। एक दिन, इसी उधेड़बुन में, मैंने अपने दोस्त से पूछा-"अगर तुम्हारे जीवन में कोई और नहीं है। तो क्या तुम मुझसे शादी करोगे?"

वह कुछ क्षणों के लिए सक्त रह गया। फिर बोला- "मुझे थोड़ा समय दो मैंने कभी इस बारे में सोचा ही नहीं।" मैंने उसका उत्तर पाने के लिए इंतजार किया। मगर हमारे बीच एक बड़ी बाधा थी-जाति। वह ठाकुर था और मैं कायस्थ। कई उतार-चढ़ाव आए, कई बार स्थितियां मुश्किल हुईं, लेकिन अंततः हमने हिम्मत दिखाई। मैंने अपने परिवार को और उसने अपने परिवार को इस रिश्ते के लिए मनाया। लंबी कोशिशों और अनेक भावनात्मक संघर्षों के बाद, 22 फरवरी 2022 को हमारी शादी धूमधाम से संपन्न हुई। आज भी हम पहले की तरह ही अच्छे दोस्त हैं। हमारी दोस्ती ही हमारा सबसे मजबूत रिश्ता है-वही दोस्ती जो सम्मान, भरोसे और साथ से पति-पत्नी के सुंदर बंधन में बदल गई।

-आशीष एवं नैंसी श्रीवास्तव, अयोध्या।

अमृत विचार

बरेली, शनिवार, 22 नवंबर 2025

ब्रीफ न्यूज

कार्यालय पर किसान नेता ने सुनी शिकायतें

उझानी, अमृत विचार : भारतीय किसान यूनियन (भानू) के जिला अध्यक्ष अतुल तोमर में अपने कार्यालय पर किसानों की समस्या सुनकर उनका समाधान कराने का आश्वासन दिया। शुक्रवार को किसान नेता अतुल तोमर अपने कार्यालय पर बैठे। उन्होंने क्षेत्र से आए किसानों की समस्याएं सुनते हुए जल्द समाधान कराने का भरोसा दिया। अतुल तोमर ने कहा कि हमारा संकल्प है हर पीड़ित किसान और बेसहारा की मदद की जाए।

एड्स के प्रति जागरुकता कार्यशाला स्थगित की

बदायूं, अमृत विचार : जिला क्षय रोग के कर्मचारियों को शुक्रवार को एड्स जागरुकता पर एक कार्यशाला का आयोजन किया जाना था, जो अपरिहार्य कारणों से स्थगित कर दिया गया। जिला क्षय रोग अधिकारी डॉ. विनेश कुमार ने बताया कि आयोजित होने वाली एड्स जागरुकता कार्यशाला के लिए सीएमओ से समय नहीं मिल पाया, जिस कारण कार्यशाला को स्थगित कर दिया है। अब यह कार्यशाला आगे कुछ दिनों बात तिथि मिलने पर आयोजित की जाएगी। बताया कि कार्यशाला में स्वास्थ्य विभाग के साथ ही जिला प्रशासन के अधिकारी भी सहभागिता करेंगे।

राजमार्ग पर चलती कार में लगी आग

बदायूं, अमृत विचार : मुरादाबाद-फर्रुखाबाद राजमार्ग पर बिसौली कस्बा की पुलिस चौकी के सामने शुक्रवार शाम चली कार में अचानक आग लग गई। बदायूं की ओर से चंदौसी की ओर जा रही कार के इंजन में से धुंआ निकलने लगा था। चालक ने कार रोक दी और सभी लोग बाहर आ गए। कुछ ही समय में आग की लपटें तेज हो गईं। लोगों ने पानी डालकर आग पर काबू पाया।

अनियंत्रित होकर पलटा ट्रैक्टर

बदायूं, अमृत विचार : दातागंज से कड़ेका और नौनी टिकन्ना मार्ग पर एक ट्रैक्टर अनियंत्रित होकर खंती में जाकर पलट गया। गांव कड़ेका निवासी खुशी पाली गेहूं की बुवाई करने के लिए खेत पर जा रह थे। रास्ते में मोड़ पर ट्रैक्टर अचानक पलट गया। गनीमत रही कि मौके पर खुशी पाली कूद गए।

लंदन की संसद में गूंजी भारतीय पर्यावरण चेतना

वाटर वूमेन नाम से प्रसिद्ध शिप्रा ने संबोधन में गंगा, नर्मदा और गोमती की दिव्यता का किया उल्लेख

कार्यालय संवाददाता, बदायूं

अमृत विचार : पर्यावरणविद और देश भर में अलग पहचान बना चुकीं वाटर वूमेन के नाम से प्रसिद्ध शिप्रा पाठक की भारतीय पर्यावरण चेतना शुक्रवार को लंदन की संसद में गूंजी है। लंदन की संसद में उन्होंने नर्मदा और गोमती की दिव्यता के बारे में बताया। उनकी जल संरक्षण के मॉडल को ब्रिटिश सांसदों ने खूब सराहा है। वह पर्यावरण विशेषज्ञों के साथ मिलकर लंदन में थेम्स नदी का अध्ययन करेंगी।

भारत की सुप्रसिद्ध पर्यावरणविद, वाटर वुमन और पंचतत्व फाउंडेशन की संस्थापक दातागंज क्षेत्र निवासी शिप्रा पाठक की पर्यावरण संबंधी यात्रा अद्वितीय रही थी। इसके अंतर्गत उन्होंने लगभग 13 हजार किलोमीटर पैदल यात्रा की। देश भर में 55 लाख से ज्यादा पौधे रोपे। उन्होंने लाखों लोगों को पर्यावरण संरक्षण के लिए प्रेरित किया था। भारतीय जल संस्कृति और पर्यावरण उनके नेतृत्व में पंचतत्व फाउंडेशन ने नदी पुनर्जीवन की जनभागीदारी आधारित अभियान का स्वरूप दिया। उनकी उपलब्ध के लिए ब्रिटिश संसद ने उन्हें विशेष रूप से आमंत्रित किया था। उन्होंने ब्रिटेन की संसद में संरक्षण का संदेश दिया। लंदन की संसद के दोनों सदनों में उन्हें भारत की ओर से आमंत्रित वक्ता के रूप में सम्मानित किया गया। वाटर वूमेन ने शुक्रवार को भारतीय सभ्यता के मूल विचार वसुधैव कुटुंबकम का उल्लेख करते हुए कहा कि भारत विश्व कल्याण को अपनी सांस्कृतिक जिम्मेदारी मानता है। चेताया कि बढ़ता जल संकट आने वाली पीढ़ियों के लिए गंभीर चुनौती बन सकता है। इसलिए विश्व को एकजुट होकर प्रयास करना होगा।

लंदन की संसद को संबोधित करतीं पंचतत्व फाउंडेशन की संस्थापक शिप्रा पाठक।

अपने भाषण में उन्होंने तीन प्रमुख नदियों के बारे में बताया। कहा कि नर्मदा को देश की पवित्र पर्यावरणीय रीढ़ कहा गया है। गंगा को आध्यात्मिक शक्ति और सांस्कृतिक निरंतरता का वाहक बताया। तीसरे गोमती नदी के बारे में कहा कि वह उत्तर प्रदेश की प्राचीन धरोहर और जीवनधारा है। भारतीय संस्कृति नदियां को सिर्फ जल स्त्रोत नहीं, बल्कि जीवित इकाई मानकर उनकी पूजा करती है। ब्रिटिश सांसदों और पर्यावरण विशेषज्ञों ने उनकी कार्यों को प्रेरणादायक बताते हुए भारत के नदी पुनर्जीवन मॉडल की सराहना की। भारत की जनभागीदारी आधारित पर्यावरणीय पद्धति में रुचि दिखाई। उनकी यह उपलब्धि न सिर्फ भारतीय पर्यावरण परंपरा का वैश्विक सम्मान है बल्कि भारतीय नारी शक्ति और सांस्कृतिक चेतना के लिए भी गर्व का क्षण है। शिप्रा ने कहा कि नदी को बचाने की यात्रा भले भारत से शुरू होती है, लेकिन उसका संदेश पूरे विश्व तक जाता है।

लंदन की नदी पर अध्ययन करेंगी शिप्रा

वाटर वूमेन ने बताया कि वह लंदन की थेम्स नदी के संरक्षण मॉडल का अध्ययन करेंगी। वह ब्रिटेन के पर्यावरण विशेषज्ञों के साथ नदी संवाद में प्रतिभाग करेंगी। लंदन की मेयर से शिष्टाचार भेंट करने के बाद शहर के महत्वपूर्ण पर्यावरणीय स्थलों का अवलोकन करेंगी।

मदरसा बोर्ड की परीक्षा के लिए आवेदन शुरू, तिथि जारी

कार्यालय संवाददाता, बदायूं

- समय से कार्रवाई नहीं करने पर मदरसा प्रबंधक और प्रधानाचार्य होंगे उत्तरदायी

अमृत विचार : उत्तर प्रदेश मदरसा शिक्षा परिषद की ओर से संचालित मुंशी, मौलवी (सेकेंडरी) और आलिम (सीनियर सेकेंडरी) परीक्षा के ऑनलाइन आवेदन-पत्र संबंधित मदरसे के माध्यम से मदरसा पोर्टल पर भरे जाने की प्रक्रिया शुरू हो गई है। 20 दिसंबर तक ऑनलाइन भरे जा सकेंगे। चालान के माध्यम से राजकोष में परीक्षा शुल्क जमा करने की अंतिम तिथि 19 दिसंबर है। मदरसे के प्रधानाचार्य छात्र-छात्राओं के आवेदन पत्र नियमानुसार मदरसा पोर्टल पर 22 दिसंबर तक लॉक करेंगे।

जिला अल्पसंख्यक कल्याण अधिकारी लालमन ने बताया कि वह परीक्षा आवेदनों को ऑनलाइन मदरसा पोर्टल पर संदेहास्पद डाटा को सम्मिलित करते हुए 26 दिसंबर तक लॉक करेंगे। मदरसा के प्रधानाचार्य आवेदन पत्र लॉक करके 24 दिसंबर तक चालान, मान्यता प्रमाण पत्र की छाया प्रति, कक्षा 10 व 12 के छात्र-छात्राओं के कक्षा संचालन के फोटो, मदरसा मुख्य भवन का फोटो व लिस्ट, जिला अल्पसंख्यक कल्याण अधिकारी कार्यालय में अनिवार्य रूप से जमा करेंगे। जिसके बाद आगे की कार्रवाई की जाएगी। परीक्षा शुल्क का विवरण व विस्तृत निर्देश वेबसाइट पर हैं। परीक्षा वर्ष 2026 में सम्मिलित होने वाले परीक्षार्थियों के प्रवेश-पत्र, उपस्थिति पत्रक व डेस्क-स्लिप जारी किए जाने की तिथि 15 जनवरी है। अगर किसी मदरसा या संस्था परीक्षा आवेदन पत्र नहीं भरते हैं तो उनके खिलाफ उत्तर प्रदेश अशासकीय अरबी और फारसी मदरसा मान्यता प्रशासन एवं सेवा विनियमावली 2016 के अंतर्गत कार्रवाई की जाएगी। जिसके लिए संबंधित मदरसा प्रबंधक और प्रधानाचार्य उत्तरदायी होंगे।

पंचायत में उठाया क्रय केंद्रों का मुद्दा

कार्यालय संवाददाता, बदायूं

अमृत विचार : भाकियू टिकैत ने शुक्रवार को मासिक पंचायत कर क्रय केंद्रो का मुद्दा उठाया। जिला प्रशासन पर लापरवाही का आरोप लगाते हुए किसानों की समस्याओं को नजरअंदाज करने की बात कही।

किसान नेताओं ने मासिक पंचायत में कहा कि जिला प्रशासन ने सरकारी क्रय केंद्रों की सूची डिप्टी आरओ द्वारा गलत लगाई गई है। इससे तहसील बिल्सी बिसौली के किसानों को भारी परेशानी हो रही है। बिल्सी बिसौली मंडी में तत्काल खरीद शुरू की जाए।

किसानों को डीएपी और यूरिया खाद की किल्लत है। किसानों की फसलों की बुवाई नहीं हो पा रही है। साधन सहकारी समितियों पर खाद नहीं है। किसान नेता सौदान सिंह ने कहा कि जिला प्रशासन किसानों की समस्याओं को लेकर गंभीर नहीं है। किसानों को जल्द खाद दिलाई जाए। कहा कि विद्युत विभाग की मनमानी के चलते ट्यूबवैल मालिक परेशान हैं। सरकार द्वारा ट्यूबवैल के बिल माफ कर दिए गए हैं फिर भी बिल भेजे जा रहे हैं। अवैध उगाही की जा रही है। किसान नेता राजेश कुमार सक्सेना ने कहा कि बिसौली चीनी मिल द्वारा अभी तक गन्ना किसानों का भुगतान नहीं किया गया है। जबकि मिल में पेराई शुरू कर दी गयी है।

किसानों का बकाया भुगतान न करने वाली चीनी मिल के खिलाफ कार्यवाही की जाए। कहा कि उझानी रोड पर एक केमिकल फैक्ट्री में नकली मेंथा बनाया जा रहा है इस कारोबार पर रोक लगाई जाए। मासिक पंचायत में नरेंद्र सक्सेना, रामाशंकर शंखधार, सोमवीर सिंह, अजयपाल सिंह सहित अनेक किसान मौजूद रहे।

मालवीय आवास गृह पर भाकियू टिकैत के नेता व कार्यकर्ता। ● अमृत विचार

- किसानों की समस्याओं को लेकर जिला प्रशासन पर लगाए आरोप

25 को होगा बलिदान दिवस का अवकाश

बदायूं, अमृत विचार : प्रभारी जिलाधिकारी व अपर जिलाधिकारी वित्त एवं राजस्व डॉ. वैभव शर्मा ने बताया कि उत्तर प्रदेश शासन ने वर्ष 2025 के अवकाश घोषित सूची में संशोधन करते हुए गुरु तेग बहादुर के बलिदान दिवस की तिथि में बदलाव किया है। पूर्व में 24 नवंबर को घोषित अवकाश को निरस्त करते हुए 25 नवंबर 2025 को मान्य किया है। उन्होंने बताया कि शासन से जारी निर्देशों के अनुपालन में जिले में भी 24 नवंबर का अवकाश रद्द कर दिया गया है। संशोधित आदेश के अनुसार जिले के सभी कार्यालयों, शिक्षण संस्थानों और सरकारी विभागों में 25 नवंबर 2025 को सार्वजनिक अवकाश रहेगा।

विज्ञान क्विज में 10 मेधावी सम्मानित

- राष्ट्रीय आविष्कार अभियान के अंतर्गत बीआरसी पर हुई प्रतियोगिता

संवाददाता, बिल्सी

अमृत विचार : राष्ट्रीय आविष्कार अभियान के अंतर्गत विकास क्षेत्र अंबियापुर के बीआरसी पर विज्ञान क्विज प्रतियोगिता आयोजित की गई। खंड शिक्षा अधिकारी गौतम प्रकाश ने प्रतिभागियों का उत्साहवर्धन करते हुए विज्ञान के प्रति जिज्ञासा और नवाचार की भावना को सराहनीय बताया। इस दौरान 10 मेधावियों को सम्मानित किया गया।

विकास खंड क्षेत्र के 37 संविलियन और उच्च प्राथमिक विद्यालयों के कक्षा 6 से 8 तक के हर विद्यालय से तीन-तीन छात्रों ने प्रतियोगिता में प्रतिभाग किया। प्रथम चरण में लिखित परीक्षा आयोजित की गई। जिसमें 101 छात्र शामिल हुए। सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाले 25 छात्रों को साक्षात्कार के लिए चयनित किया गया। देवेन्द्र कुमार प्रवक्ता एनए इंटर कॉलेज की अध्यक्षता में गठित पैनल द्वारा साक्षात्कार के बाद छात्र आशीष कुमार सिंह, वीपी सिंह, प्रिंस शर्मा, मधु और पायल को जिला स्तर पर होने वाली प्रतियोगिता के लिए चुना गया। प्रतियोगिता में सर्वाधिक अंक प्राप्त करने वाले 10 छात्र निशांत, आशीष, वीपी सिंह, कार्तिक, अमन, रंजीत, मधु, नवीन, वंश और हिमांशु को विज्ञान किट, ट्रॉफी और प्रमाण पत्र देकर सम्मानित किया गया। सभी प्रतिभागियों को प्रशस्ति पत्र एवं स्टेशनरी फोल्डर प्रदान किए गए। संचालन में एआरपी अमित कुमार गुप्ता, जयवीर सिंह, राधावल्लभ, शैलेष प्रताप सिंह, अशोक कुमार सिंह, रंजीत सिंह, आलोक, सोनू सागर, वर्षा, विमल कुमार गौतम, रितु माहेश्वरी, प्रज्ञा वार्ष्णेय, सतेंद्र कुमार, अशोक कुमार आदिम मौजूद रहे।

प्रतियोगिता के बाद विजेताओं को सम्मानित करते अतिथि। ● अमृत विचार

एकता पद यात्रा से समाज को दिया जा रहा संदेश : धर्मपाल

संवाददाता, दातागंज

अमृत विचार : लौह पुरुष भारत रत्न सरदार वल्लभ भाई पटेल की जयंती के अवसर पर दातागंज विधानसभा में एकता पद यात्रा का आयोजन किया। पदयात्रा गांव हाशिमपुर से होते हुए बक्सेना व सैंजनी तक गई। यहां जनसभा हुई। मुख्य अतिथि कैबिनेट मंत्री धर्मपाल सिंह, विधायन समिति के सभापति व दातागंज विधायक राजीव कुमार सिंह, भाजपा जिलाध्यक्ष राजीव गुप्ता, एटा के पूर्व डीसीबी चेयरमैन व जिला प्रवासी भूपेंद्र सिंह ने जनसभा को संबोधित किया। सरदार पटेल के देश हित में किए गए उत्कृष्ट कार्य विस्तार से बताए।

मुख्य अतिथि ने कहा कि सरदार पटेज की जयंती गर्व के साथ पर्व की तरह मनाई जा रही है। उनके विचार और मूल्य हर वर्ग और हर पीढ़ी को समान रूप से प्रभावित करते हैं। एकता पद यात्रा के माध्यम से संदेश दिया जा रहा है कि सरदार पटेल के दिखाए गए राष्ट्र एकता के रास्ते को सभी लोग हर हाल में फॉलो करेंगे। सभापति ने सभापति विधायन समिति राजीव सिंह ने कहा कि एकता पदयात्रा का आयोजन केवल एक कार्यक्रम नहीं, बल्कि सरदार पटेल द्वारा स्थापित राष्ट्रीय एकता और अखंडता के उस उच्च आदर्श का सामूहिक स्मरण है। जिसने भारत को एक सूत्र में पिरोया। इस पदयात्रा का उद्देश्य समाज के हर वर्ग युवा, महिला, किसान, व्यापारी और वरिष्ठजनों को सरदार पटेल की विरासत से जोड़ना और उन्हें राष्ट्र निर्माण में सक्रिय भागीदारी के लिए प्रेरित करना है। जिलाध्यक्ष ने कहा कि सरदार पटेल ने जो अखंड भारत का सपना देखा था, उसे पूरा करने के लिए उन्होंने कठोर परिश्रम और अद्वितीय नेतृत्व का परिचय दिया। जिला प्रवासी ने कहा कि युवा पीढ़ी सरदार वल्लभभाई पटेल को केवल एक ऐतिहासिक व्यक्तित्व नहीं, बल्कि आधुनिक भारत की आत्मा मानती है। डीसीबी चेयरमैन जेके सक्सेना, डीसीएफ चेयरमैन रविंद्र सिंह, ब्लॉक प्रमुख अतेंद्र विक्रम सिंह, पूर्व मंत्री हीरालाल कश्यप, केसी शाक्य, दिनेश कुमार, नेकपाल कश्यप, अनूप गुप्ता, मंडल अध्यक्ष वीर सिंह, सुरेंद्र गुर्जर आदि मौजूद रहे।

जनसभा में मंचासीन कैबिनेट मंत्री धर्मपाल सिंह, दातागंज विधायक राजीव कुमार सिंह, जिलाध्यक्ष राजीव कुमार गुप्ता, डीसीबी चेयरमैन जेके सक्सेना। ● अमृत विचार

- दातागंज में एकता पद यात्रा में शामिल हुए कैबिनेट मंत्री व अन्य

एकता पदयात्रा में विधायन समिति के सभापति व दातागंज विधायक राजीव कुमार सिंह, जिलाध्यक्ष राजीव गुप्ता, पूर्व मंत्री हीरालाल कश्यप व अन्य। ● अमृत विचार

बीएससी नर्सिंग के छात्रों को दिलाई नाइटिंगेल शपथ

बदायूं, अमृत विचार : राजकीय मेडिकल कॉलेज में कॉलेज ऑफ नर्सिंग द्वारा बीएससी नर्सिंग 2025-2026 बैच के छात्रों को फ्लोरेन्स नाइटिंगेल शपथ ग्रहण कराई गई।

मुख्य अतिथि राजकीय मेडिकल कॉलेज के प्राचार्य डॉ. अरुण कुमार व कॉलेज ऑफ नर्सिंग के प्राचार्य डॉ. श्री निवासन गांधी रहे। कार्यक्रम का आरंभ मां सरस्वती के समक्ष दीप प्रज्वलन के साथ हुआ। प्राचार्य डॉ. श्रीनिवासन गांधी ने नर्सिंग पेशे की महत्ता, अनुशासन एवं मानवीय मूल्यों पर प्रकाश डाला। इसके बाद उन्होंने विद्यार्थियों को नाइटिंगेल शपथ दिलाई, जिसके साथ ही विद्यार्थियों का नर्सिंग पेशे में विधिवत प्रवेश हुआ। समारोह को और अधिक उत्साह पूर्ण बनाते हुए बीएससी नर्सिंग 2025 बैच की छात्राओं ने आकर्षक सांस्कृतिक नृत्य प्रस्तुति दी।

6234 छात्र-छात्राओं ने दी भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा

कार्यालय संवाददाता, बदायूं

अमृत विचार : अखिल विश्व गायत्री परिवार शांतिकुंज की ओर से आयोजित भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा 83 परीक्षा केंद्रों पर संपन्न हुई। परीक्षा संयोजक प्रेमचंद शर्मा ने बताया कि शहर में 34, उझानी 4, इस्लामनगर 6, बिसौली 27 सहसवान 12 के केंद्रों पर हुई परीक्षा में 6234 छात्र-छात्राएं ने प्रतिभाग किया।

इसके लिए 8 पर्यवेक्षक बनाए गए। इस मौके पर मदन लाल झा, सुशील कुमार गुप्ता, सचिन देव, सुखपाल शर्मा, जगदंबा सहाय, रामचंद्र प्रजापति, संजीव कुमार पटेल, बाबू राम पाल, सुरेश मिश्रा, रजनी मिश्रा, शोभना भारद्वाज, संतोष मिश्रा, कंचन गुप्ता, ममता पाल के अलावा कादरचौक ब्लॉक में बृजेश कुमार शर्मा, प्रवीण जोशी, बिसौली सुखबीर सिंह, विनीत वार्ष्णेय, सहसवान अनिल कुमार माहेश्वरी, वर्षा, सोहन पाल, उझानी सुखपाल शर्मा, इस्लामनगर में जितेंद्र पाल सिंह आदि परीक्षा संपन्न कराई।

भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा में शामिल छात्र-छात्राएं।

- जिले के 83 परीक्षा केंद्रों पर संपन्न हुई परीक्षा

राष्ट्रीय जंबूरी में स्काउट ने शुरू की तैयारी

ग्रैंड फिनाले डायमंड जुबली जंबूरी 19वीं राष्ट्रीय जंबूरी लखनऊ में अपने टेंट को तैयार करते बदायूं के स्काउट गाइड। ● अमृत विचार

कार्यालय संवाददाता, बदायूं

अमृत विचार : भारत स्काउट और गाइड उत्तर प्रदेश की ओर से ग्रैंड फिनाले डायमंड जुबली जंबूरी 19वीं राष्ट्रीय जंबूरी डिफेंस एक्सपो के लिए स्काउट-गाइड्स ने तैयारी शुरू कर दी है। जिला संगठन कमिश्नर मुहम्मद असरार को जंबूरी में नेशनल सिक्योरिटी की जिम्मेदारी दी गई है। इनके नेतृत्व में भारतवर्ष से आए विभिन्न राज्यों के और विदेशी मेहमानों को सुरक्षा व्यवस्था प्रदान की जा रही है। विभिन्न सुविधाएं उपलब्ध कराई जा रही है।

डीटीसी सत्यपाल गुप्ता ने बताया कि जिले के स्काउट गाइड एडवेंचर, पीजेण्ड शो, वन डिस्ट्रिक्ट वन प्रोग्राम, प्रदर्शनी, फ्रूट प्लाजा, मार्च पास्ट, गेट, टावर, झांकी, गैजेट और विभिन्न प्रतियोगिताओं में हिस्सा लेंगे। पूर्व जिला ट्रेनिंग कमिश्नर संजीव कुमार शर्मा ने बताया कि 83 स्काउट, 6 गाइड और यूनिट लीडर कुंवरसेन, उमेश चन्द्र, चन्द्र मोहन, कैलाश चंद्र, आशुतोष शर्मा, श्रेष्ठ जीत शाक्य, आशुतोष कुमार नेतृत्व में जंबूरी में श्री कृष्णा इंटर कॉलेज, कुंवर रुकुम सिंह वैदिक इंटर कॉलेज, पन्नालाल इंटर कॉलेज सहसवान, प्रमोद इंटर कॉलेज सहसवान, राधेलाल इंटर कॉलेज कछला, मदनलाल इंटर कॉलेज बिसौली, संविलियन विद्यालय हर्रायपुर के अलावा संतोष कुमारी श्रवण कुमार अग्रवाल इंटर कॉलेज उझानी, भदवार गर्ल्स इंटर कॉलेज उझानी, क्रिश्चियन हायर सेकेंडरी स्कूल, श्री रामचंद्र चंद्र शास्त्री मेमोरियल इंटर कॉलेज ककोड़ा के स्काउट गाइड स्वतंत्र दल, कंपनी के ग्रुप के स्काउट गाइड मार्च पास्ट में हिस्सा लेंगे।

बजरंग ब्लास्टर ने साइन ब्लास्टर टीम को हराया

कार्यालय संवाददाता, बदायूं

अमृत विचार : बदायूं क्रिकेट एसोसिएशन की ओर से एसके फील्ड में 5वें जीएस हीरो अंडर 19 क्रिकेट प्रीमियर लीग का आरंभ शुक्रवार से हो गया। रोटरी क्लब के अध्यक्ष विपिन अग्रवाल ने चौका लगाकर आरंभ किया। उन्होंने खिलाड़ियों से परिचय किया और खेल भावना से खेलने, सेहत पर ध्यान देने का आह्वान किया। बजरंग ब्लास्टर ने 5 विकेट से मैच जीता।

साइन ब्लास्ट टीम के कप्तान विशाल राजपूत ने टॉस जीतकर पहले बल्लेबाजी चुनी। 19 ओवर में 109 रन बनाए। सानिध्य यादव ने 28 रन, प्रिंस जोशी ने 25 रन बनाए। बाकी खिलाड़ी दोहरा अंक नहीं छू पाए। दूसरी टीम बजरंग ब्लास्टर के कप्तान अभिषेक कश्यप ने चार ओवर में 33 रन देकर चार विकेट लिए। लखनऊ से आए अंशुल सिंह ने चार ओवर में चार रन देकर तीन विकेट लिए। गोविंद यादव ने तीन ओवर में सात रन देकर दो विकेट चटकाए। लक्ष्य का पीछा करने उतरी बजरंग ब्लास्टर टीम ने 15 ओवर में 112 रन बना लिए। अंशुल को मैन ऑफ द प्लेयर चुना गया। एसोसिएशन के सचिव संतोष शर्मा ने बताया कि शनिवार को सुबह 9 बजे सुपर किंग और किंग्स इलेवन के बीच मैच होगा। रोटरी क्लब के सचिव मुनेंद्र सिंह, पूर्व अध्यक्ष अनिल गुप्ता, एसोसिएशन के अध्यक्ष दीपक सक्सेना, अमरीश गोयल, एमपी सिंह, शाहिद, रचित गोयल, आरएसएस के प्रचारक सुधांशु, संघ चालक सुनील गुप्ता, अमन गोयल आदि मौजूद रहे। रविंद्र मोहन सक्सेना ने कमेंट्री की।

मैच के बाद मैदान से वापस आता खिलाड़ी।

- एसके फील्ड में शुरू हुई अंडर 19 क्रिकेट प्रीमियर लीग

चौपाल में एसआईआर के बारे में बताया

- करतोली में ग्रामीणों की समस्याएं सुनकर किया निस्तारण

संवाददाता, विजय नगला

अमृत विचार: विकास क्षेत्र सालारपुर के कर्मचारियों ने गांव में चौपाल लगाई। ग्रामीणों की समस्याएं सुनी और उन्हें एसआईआर के बारे में विस्तार से बताते हुए जागरूक किया।

सालारपुर की ग्राम पंचायत करतोली में शुक्रवार को चौपाल लगाई गई। सहायक खंड विकास अधिकारी दीपमाला, सचिव कृपाल सिंह, प्रधान सावित्री देवी ने पंचायत घर में ग्रामीणों के साथ बात की। सचिव ने एसआईआर के माध्यम से वोट बनवाने का आह्वान किया। बीएलओ ने ग्रामीणों के फॉर्म भरवाए। बीएलओ से कहा गया कि वह घर-घर जाकर फॉर्म भरें। कोई भी व्यक्ति वोट से वंचित न रहे। इसके अलावा सचिव ने सरकार की ओर से संचालित योजनाओं के बारे में बताया। बुजुर्गों को वृद्धा पेंशन स्कीम से अवगत कराया। मौके पर सूरजपाल सिंह, शराफत, राम सिंह, असरार अहमद, पप्पू लाल, दयाराम, नेत्रपाल, मुकेश, ओमपाल, बनवारी लाल, पुष्पा देवी, सीमा, आरती, रामवती आदि उपस्थित रहे।

ग्राम पंचायत करतोली में एसआईआर के बारे में जानकारी देते ब्लॉक के कर्मचारी।

एसआईआर कार्य में सक्रिय हो कार्यकर्ता : भाजपा विधायक हरीश शाक्य

बिल्सी, अमृत विचार : शुक्रवार को बिल्सी से भाजपा विधायक हरीश शाक्य ने नगर में पहुंचकर पार्टी कार्यकर्ताओं के साथ बैठक की और एसआईआर कार्य की प्रगति की समीक्षा की। उन्होंने कार्यकर्ताओं से कहा कि एसआईआर का काम तेजी से चल रहा है। सभी कार्यकर्ता पूरी तत्परता और गंभीरता के साथ इसे समय पर पूरा कराएं। कहा कि कुछ लोग एसआईआर को लेकर अनावश्यक भ्रम फैलाने का प्रयास कर रहे हैं। ऐसी स्थिति में कार्यकर्ता किसी भी भ्रामक जानकारी से दूर रहें और निर्धारित प्रक्रिया के अनुसार कार्य को आगे बढ़ाएं। बीएलओ के साथ समन्वय बनाकर कार्य करना अत्यंत आवश्यक है। इस मौके पर पूर्व चेयरमैन ओमप्रकाश सागर, अर्जुन सिंह चौहान, मनोज जैन, परमानंद वार्ष्णेय, संजीव माहेश्वरी, प्रखर माहेश्वरी, गौरव बाबू, मोहित वार्ष्णेय, राहुल शाक्य आदि मौजूद रहे।

ब्रीफ न्यूज

कार की टक्कर से गोवंश की जान गई

बदायूं, अमृत विचार : शुक्रवार को ग्राम कुलचौरा के निकट सैकड़ों की संख्या में गोवंश सड़क किनारे छुट्टा धूम रहे थे। इसी बीच गोवंश कार की चपेट में आ गया जिससे उसकी मौके पर ही मौत हो गई। शिव तांडव सनातन कल्याण संस्थान के राष्ट्रीय अध्यक्ष एवं संस्थापक राहुल त्रिवेदी व प्रदेश सचिव अभय पंडित समेत अन्य कार्यकर्ता भी पहुंच गए। राहुल त्रिवेदी ने कहा कि जिला प्रशासन की लापरवाही के चलते मौत हुई है। यहां पर बड़े वाहनों को रोकने को ब्रेकर भी नहीं बनाए गए हैं जिससे आये दिन गोवंश वाहनों की चपेट में आकर घायल हो रहे हैं। उन्होंने साथियों की मदद से शव को वहीं पर एक खेत में दफन करा दिया।

कक्षा आठ की छात्रा के साथ किया दुष्कर्म

हसनपुर,अमृत विचार : कोतवाली क्षेत्र के एक गांव में कक्षा 8 की छात्रा से दुष्कर्म का मामला सामने आया। कोतवाली क्षेत्र के एक गांव में श्रीमद् भागवत कथा सुनकर छात्रा घर जा रही थी। आरोपी ने उसे दबोच लिया और दुष्कर्म की वारदात को अंजाम दिया। मामला चार दिन पुराना बताया जा रहा है। लोक-लाज और डर के कारण शुरुआत में मामला दबा रहा, लेकिन अब यह पुलिस तक पहुंच गया है। तहरीर के आधार पर पुलिस ने आरोपी के खिलाफ सुसंगत धाराओं में मुकदमा दर्ज कर लिया है। पुलिस जांच कर रही है।

रात में काटे पांच हरे भरे आम के पेड़

हसनपुर,अमृत विचार : कोतवाली क्षेत्र के गांव रामपुर भूड़ की मढियों के निकट तहसील मार्ग पर स्थित पांच विशाल हरे-भरे आम के पेड़ों को माफियाओं ने रात में काट लिया। वन विभाग की नाक के नीचे अवैध कटान जारी है। अभी दो दिन पहले ही यहाँ से महज 200 मीटर की दूरी पर मुंसिफ कोर्ट के पास भी तीन पेड़ काट दिए गए थे। वन दरोगा पलटराम का कहना है कि मामले की जांच चल रही है और जांच के आधार पर दोषियों के खिलाफ कानूनी कार्रवाई की जाएगी।

कबड्डी में बुरावली की टीम ने मारी बाजी

हसनपुर, अमृत विचार : ब्लॉक स्तरीय खेलकूद प्रतियोगिता का आयोजन शुक्रवार को सैन्ट एंथोनी पब्लिक स्कूल रहरई के मैदान पर किया गया। आरंभ कार्यक्रम के मुख्य अतिथि विधायक महेंद्र सिंह खड़गवंशी, खण्ड शिक्षा अधिकारी अनिल कुमार,जिला अध्यक्ष यशपाल सिंह, कालेज के निदेशक राय मैथ्यू ने किया। प्राथमिक स्तर बालक वर्ग 50 मीटर दौड़ में गौरव प्राथमिक विद्यालय छपना प्रथम व रोहित प्राथमिक विद्यालय खुशहालपुर द्वितीय स्थान पर रहा।

टंकी बनी, जलापूर्ति नहीं हुई शुरू

जल जीवन मिशन अधूरा, बूंद-बूंद पानी को तरस रहे ग्रामीण, कार्य में तेजी लाने की मांग

कार्यालय संवाददाता, बदायूं

- ब्लॉक जगत के गांव झंडपुर में धीमी गति से हो रहा काम
- 600 से अधिक गांव के ग्रामीणों को नहीं मिल रहा पानी

अमृत विचार : जल जीवन मिशन का कार्य धीमी गति से चल रहा है जिससे जिले के 600 से अधिक गांवों में अभी तक पानी नहीं पहुंचा है। इससे ग्रामीण बूंद-बूंद भर पानी को परेशान हैं। ग्रामीणों ने जिला प्रशासन से मांग की है कि हर घर जल पहुंचाने की योजना में तेजी लाई जाए जिससे ग्रामीणों को पानी मिल सके।

भारत सरकार की महत्वाकांक्षी योजना में शामिल है। जल जीवन मिशन योजना, इस योजना के तहत हर गांव में हर घर तक स्वच्छ जल पहुंचाने का लक्ष्य है। पिछले तीन साल से काम चल रहा है, लेकिन अभी तक योजना का लाभ ग्रामीणों को नहीं मिल पा रहा है। जनपद में 1037 ग्राम पंचायतें है। इनके गांव करीब डेढ़ हजार हैं। इन गांवों में से अभी तक 600 से अधिक गांवों में पानी नहीं पहुंच सका है। कुछ गांवों में काम शुरू कर दिया गया है, जबकि कुछ में कार्य अंतिम चरण में है। जल निगम के ठेकेदारों की लापरवाही के चलते ग्रामीण स्वच्छ पेयजल का सालों से इंतजार कर रहे हैं।

ब्लॉक जगत के ग्राम झंडपुर में तीन साल पूर्व सड़कों को खोद कर पानी की पाइप लाइन डाली गई थी। इस ग्राम पंचायत में दो गांव हैं। दूसरे गांव में भी पानी की पाइप लाइन डाल दी गई। इसके बाद जल निगम के ठेकेदार ने ओवरहेड टैंक का निर्माण कराया। बोरिंग कर पानी चलाया गया। पाइप लाइन दो बार चेक की गई। कुछ स्थानों पर लीकेज मिली तो उसे ठीक किया गया। अब ओवरहेड टैंक बन कर काफी दिनों से तैयार है, लेकिन ग्रामीणों को अभी तक पानी नहीं मिला है। ग्रामीणों का कहना है कि ठेकेदार के मजदूर धीमी गति से काम कर रहे हैं।

एक दो मजदूर को लगा दिया गया है जिससे ग्रामीणों का गुस्सा शांत रहे, लेकिन अब ग्रामीण इस लापरवाही पर रोष प्रकट कर रहे हैं। ग्रामीणों ने कहा कि सब कुछ बन जाने के बाद भी पानी नहीं दिया जा रहा है। ओवरहेड टैंक के बनने के बाद ही सप्लाई शुरू कर दी जाती है लेकिन यहां पर पानी के लिए अभी कुछ समय तक इंतजार करना होगा।

झंडपुर गांव झंडपुर में बनी पानी की टंकी। ● अमृत विचार

उदमई और कुतरई का भी बुरा हाल

निकटवर्ती गांव उदमई और कुतरई में भी सड़क खोद कर पाइप लाइन डाल दी गई है, लेकिन अन्य काम बंद हैं। कुतरई में ओवरहेड टैंक काफी दिनों से बन रहा है। अभी तक बोरिंग नहीं किया गया है। ग्रामीणों ने बताया कि धीमी गति से काम किया जा रहा है। इसलिए करीब एक साल बाद ही पानी मिल पाएगा। ग्रामीणों ने कहा कि इस मामले में जिला प्रशासन को सख्ती के साथ काम करना होगा तभी जल जीवन मिशन का काम पूरा होगा।

ओ लेवल और सीसीसी के प्रशिक्षण के लिए करें आवेदन

बदायूं, अमृत विचार : जिला पिछड़ा वर्ग कल्याण अधिकारी प्रणव कुमार पाठक ने बताया कि जनपद के अन्य पिछड़ा वर्ग के शिक्षित बेरोजगार युवक युवतियों को बताया कि एक वर्षीय ओ लेवल तथा तीन माह के सीसीसी कम्प्यूटर प्रशिक्षण के निशुल्क कोर्स के लिए इच्छुक एवं पात्र अभ्यर्थी ऑनलाइन आवेदन कर सकते हैं।

विभाग से निर्धारित समय-सारिणी के अनुसार 20 नवम्बर से 1 दिसम्बर तक ऑनलाइन आवेदन किया जा सकते है। आवेदक अपने ऑनलाइन आवेदन का प्रिंट लेकर आवश्यक प्रपत्र, जाति प्रमाण पत्र, आधार कार्ड, हाईस्कूल अथवा इंटर की शैक्षिक प्रमाणपत्रों की छायाप्रति संलग्न करते हुए 1 दिसम्बर को कार्यालय जिला पिछड़ा वर्ग कल्याण अधिकारी के पास जमा करें।

आवेदक बेरोजगार हो या किसी शिक्षण संस्थान से छात्रवृत्ति प्राप्त न कर रहा हो आवेदक अन्य पिछड़ा वर्ग से संबंधित हो। उन्होंने बताया कि इस प्रशिक्षण कम्प्यूटर शिक्षा के क्षेत्र में युवाओं को रोजगारपरक दक्षता प्रदान करने के लिए महत्वपूर्ण अवसर है।

आयुर्वेदिक क्लीनिक पर होगी छापेमारी विभाग ने की तैयारी

कार्यालय संवाददाता, बदायूं

- डॉ. कुलदीप बनाए नोडल, अवैध क्लीनिक बंद करने के दिए निर्देश

अमृत विचार : जनपद में आयुर्वेद चिकित्सकों की क्लीनिकों पर छापामार कार्रवाई की तैयारी की गई है। बिना रजिस्ट्रेशन वाली क्लीनिकों को सील किया जाएगा, साथ ही संचालक पर जुर्माना लगाया जाएगा। इसके लिए आयुर्वेदिक डॉ. कुलदीप को नोडल बनाया गया है। छापामार अभियान 1 दिसम्बर से शुरू किया जाएगा।

आयुर्वेदिक चिकित्सकों ने जगह जगह क्लीनिक खोल ली हैं, लेकिन रजिस्ट्रेशन नहीं कराया है। इसलिए अब शासन की सख्ती के बाद आयुर्वेद विभाग हरकत में आ गया है। आयुर्वेदिक क्लीनिकों का मकड़जाल जिले भर में बना हुआ है। विभाग की ओस से बताया गया कि जिले भर में मात्र 170 आयुर्वेदिक क्लीनिक रजिस्टर्ड हैं। जबकि शहर में ही करीब सौ सै अधिक आयुर्वेदिक क्लीनिक बिना रजिस्ट्रेशन के चल रही हैं। इसलिए अब सभी क्लीनिकों पर छापेमारी अभियान चलाया जाएगा। क्षेत्रीय आयुर्वेदिक एवं यूनानी अधिकारी डा. योगेंद्र सिंह ने बताया कि अभियान के लिए डॉ. कुलदीप को नोडल बनाया गया है। वह टीम बना कर छापेमारी करेंगे। आयुर्वेदिक चिकित्सकों को मानक के अनुसार क्लीनिक चलाने के निर्देश दिए गए हैं लेकिन स्थानीय स्तर पर कोई मानक का अनुपालन नहीं कर रहा है। इसलिए दुकानों के रजिस्ट्रेशन भी नहीं कराए गए हैं। इस बार बिना रजिस्ट्रेशन की सभी क्लीनिकों के खिलाफ कार्रवाई की जाएगी। क्लीनिक सील करने के साथ ही संचालक के खिलाफ कार्रवाई की जाएगी। उन पर जुर्माना लगाने का भी प्रावधान है। आयुर्वेदिक विभाग द्वारा पिछले तीन सालों से छापामार अभियान नहीं चलाया गया है जिससे आयुर्वेदिक क्लीनिकों की संख्या भी कई गुना बढ़ गयी है। आयुर्वेदिक चिकित्सक अधिकांश मरीजों को अंग्रेजी दवाएं भी लिखते हैं। छापेमारी अभियान के दौरान यदि कोई चिकित्सक अंग्रेजी दवा लिखते पाया जाता है तो उसके खिलाफ कार्यवाही की जाएगी।

बाल हिंसा के खिलाफ किया जागरूक

कार्यालय संवाददाता, बदायूं

अमृत विचार : शुक्रवार को जस्ट राइट फॉर चिल्ड्रन एलायंस के सहयोग से न्याय तक पहुंच कार्यक्रम के अंतर्गत विकासखंड सलारपुर के सभागार में एक दिवसीय वॉलेंटियर प्रशिक्षण कार्यशाला का आयोजन किया गया।

मुख्य अतिथि खंड विकास अधिकारी नितिन कुमार ने पुष्प अर्पित कर कार्यक्रम का आरंभ किया गया। कासी समाज शिक्षा विकास संस्थान सचिव मीना सिंह ने कार्यक्रम न्याय तक पहुंच के विषय में विस्तार से जानकारी दी। उन्होंने बताया कि संस्था मुख्य रूप से बाल विवाह, बाल श्रम, बाल यौन शोषण एवं बाल तस्करी पर कार्य कर रही है। खंड विकास अधिकारी द्वारा बाल विवाह, बालश्रम, बाल शोषण के बारे में जानकारी दी गई। उन्होंने कहा सभी लोग अपने -अपने गांवों में बाल विवाह, बालश्रम, बाल शोषण के खिलाफ आवाज उठाएं। शिव कुमार सहायक विकास अधिकारी ने ब्लॉक स्तर पर सरकार द्वारा चलाई जा रही वृद्धा पेंशन, विधवा पेंशन, जन्म प्रमाण पत्र, सामूहिक विवाह योजना, फैमली आईडी आदि योजनाओं के बारे में विस्तार से जानकारी दी, सभी वॉलिंटियर की शंकाओं का समाधान किया, थाना उप -निरीक्षक इंद्रपाल द्वारा बाल तस्करी और मानव तस्करी के बारे में विस्तारपूर्वक जानकारी दी। वन स्टॉप सेंटर मैनेजर प्रतीक्षा मिश्रा द्वारा बाल शोषण के बारे में बताया गया। चाइल्ड हेल्प लाइन के सुपरवाइजर सुनील कुमार द्वारा चाइल्ड हेल्पलाइन के कार्य दायित्वों व टोल फ्री नंबर के बारे में जानकारी दी गई।

न्याय तक पहुंच कार्यक्रम में मौजूद अतिथि व अन्य। ● अमृत विचार

अवैध खनन पर नहीं लगी रोक

उझानी, अमृत विचार : कस्बे के आसपास के गांवों से अवैध खनन कर बड़े स्तर पर कारोबार किया जा रहा है। खनन विभाग और पुलिस की मिलीभगत के चलते अवैध खनन रुकने का नाम नहीं ले रहा है।

कस्बे में अवैध खनन करने वाले पुलिस का भय नहीं मान रहे हैं। दिन रात अवैध खनन करने वाले ट्रैक्टर ट्रालियां दौड़ती हैं, लेकिन पुलिस उन्हें रोकने का प्रयास नहीं करती है जिससे स्पष्ट होता है कि खनन विभाग और स्थानीय पुलिस की मिली भगत के चलते खनन का कारोबार बड़े पैमाने पर हो रहा है। पिछले दिनों अवैध खनन कर ला रही ट्राली से एक बच्ची कुचल गई थी। हादसे में उसकी मौत हो गयी। हंगामा होने के बाद भी खनन पर रोक नहीं लगी। स्थानीय लोगों का कहना है कि कुछ सफेदपोश भी इस अवैध कारोबार में शामिल हैं।

मंदिर निर्माण को लेकर दो पक्षों में विवाद

- बिनावर के राजमार्ग स्थित गांव ढकिया में 20 साल पुराने मंदिर का मामला

संवाददाता, विजय नगला

अमृत विचार : बरेली-मथुरा राजमार्ग पर धार्मिक स्थल के निर्माण को लेकर दो गांवों के लोग आमने-सामने आ गए हैं। दोनों पक्ष ने अपने-अपने गांव में स्थापना की मांग करते हुए एसडीएम को मांग पत्र सौंपा है। गांव करतोली में मंदिर बनवाने की मांग की।

बिनावर थाना क्षेत्र पर राजमार्ग स्थित गांव ढकिया में लगभग 20 साल पुराना मंदिर है। मंदिर गंगा एक्सप्रेस में आने की वजह से कहीं और स्थापित किया जाना है। ग्राम प्रधान पति सुखपाल के अनुसार एक्सप्रेस वे का निर्माण कराने वाली कंपनी मंदिर का भव्य रूप से निर्माण कराएगी। इस संबंध में गांव करतोली के दो दर्जन से ज्यादा ग्रामीणों ने एसडीएम मोहित कुमार से मिलकर मांग पत्र सौंपा। मंदिर का निर्माण अपने गांव में कराने की मांग की। एसडीएम को बताया कि मंदिर का निर्माण 20 साल पहले उनके गांव के लोगों ने ही कराया था, लेकिन ढकिया गौटिया के ग्रामीण मंदिर अपने गांव में बनवाना चाह रहे हैं। वहां निर्माण न होने दिया जाए। ग्राम प्रधान ने बताया कि मंदिर सरकारी जमीन पर राजमार्ग किनारे था, जो करतोली के लोगों ने बनवाया था। मंदिर के लिए हल्का लेखपाल ने पैमाइश की है। वीरेंद्र, राजेश, हरपाल, जतिन, वीरपाल उपेंद्र, सुखपाल आदि लोग मौजूद रहे।

गांव में मंदिर की स्थापना की मांग करते गांव करतोली के ग्रामीण। ● अमृत विचार

पत्नी ने मायका पक्ष के साथ मिलकर पीटा

कार्यालय संवाददाता, बदायूं

- बिसौली क्षेत्र के एक गांव में प्रेम प्रसंग का मामला, वीडियो वायरल

अमृत विचार : निजी बैंक के मैनेजर को पत्नी और ससुरालीजनों ने सरेराह पीट दिया। किसी ने वीडियो बनाकर वायरल कर दिया। पति के प्रेम प्रसंग की वजह से पत्नी के ऐसा करने की बात सामने आई है।

मामला बिसौली कोतवाली क्षेत्र का है। महिला ने तहरीर देकर बताया कि शादी आठ साल पहले हुई थी। पति निजी बैंक के मैनेजर हैं। उनका एक लड़की से प्रेम प्रसंग चल रहा है। उनकी बेटी होने के बाद भी पति के व्यवहार में सुधार नहीं आया। महिला ने कई बार पति के मोबाइल पर लड़की के साथ की गई चैट पढ़ी और उन दोनों की रील्स देखीं। समझाने के बाद भी पति नहीं माना। विरोध करने पर उसने महिला के साथ गाली-गलौज और मारपीट की। महिला ने अपने परिजनों से शिकायत की तो पति ने खर्च के लिए रुपये देने बंद कर दिए। जिसके बाद महिला मायके चली गई। जिसके बाद महिला अपने मायका पक्ष के लोगों के साथ बैंक के बाहर पहुंची। पति को देखते ही महिला ने उसे धक्का दिया।

होली चौक पर बैंक मैनेजर की पिटाई लगा दी। जमीन पर गिराकर लात घूसों से जमकर पीटा। महिला ने पुलिस को पति और उसके प्रेमिका के बीच बनाई गई रील्स और चैट सौंपी।

पुलिस ने साइबर के शिकार को वापस कराए रुपये

बदायूं, अमृत विचार : कोतवाली बिसौली क्षेत्र के गांव पुरवाखेड़ा निवासी छोटू कुमार पुत्र राजाराम के साथ 28 अक्टूबर को 50 हजार रुपये की साइबर ठगी हुई थी। उन्होंने साइबर क्राइम थाने जाकर शिकायत की थी। पुलिस ने तत्काल कार्रवाई शुरू कर दी थी। धनराशि बैंक में होल्ड कराई थी। शुक्रवार को पूरी धनराशि उनके खाते में स्थानांतरित करा दी गई। टीम के सदस्य हरेंद्र सिंह ने बताया कि लोन और गेम एप के मकड़जाल से बचें। रुपयों के लालच में अपना अकाउंट व सिम कार्ड किसी को न दें। अनजान व्यक्ति के भेजे गए एप को डाउनलोड न करें। साइबर अपराधियों के व्हाट्सएप स्क्रीन शेयरिंग एप डाउनलोड कराकर फोन एक्सेस करके गलत प्रयोग कर सकते हैं।

गो सेवा आयोग के सदस्य ने किया गोशाला का निरीक्षण

निरीक्षण के दौरान गोवंश को माला पहनाते गोसेवा आयोग के सदस्य दीपक गोयल।

संवाददाता, ओरछी

अमृत विचार : विकासखंड आसफपुर क्षेत्र के गांव ओरछी स्थित गोशालाओं का गोसेवा आयोग के सदस्य दीपक गोयल ने औचक निरीक्षण किया। सबसे पहले उन्होंने ओरछी की गोशाला देखी। यहां सभी व्यवस्थाएं सही पाई गईं। उन्होंने गोवंश को माला पहनाई। गांव के प्रधान को निर्देशित किया कि वह गौशाला को स्वावलंबी बनाएं। बीमार पशुओं के लिए अलग कमरा बनाएं। इस मौके पर आसफपुर के पशु चिकित्सा अधिकारी डॉ. दीप कुमार वार्ष्णेय, उप मुख्य पशु चिकित्सा अधिकारी बिसौली डॉ. पुष्पेंद्र कुमार, पशु चिकित्सा अधिकारी मुड़िया धुरेकी डॉ. रविंद्र कुमार आदि उपस्थित रहे।

मानसिक मंदित महिला को वन स्टॉप सेंटर भेजा

बदायूं, अमृत विचार : उसहैत थाना क्षेत्र के गांव गढ़िया हरदोपट्टी स्थित मंदिर पर गुरुवार देर शाम एक मानसिक मंदित महिला मिली। गांव निवासी ओमवीर पुत्र नेकराम ने पुलिस को सूचना दी।

बताया कि मंदिर पर एक महिला बैठी है जो अपने बारे में कुछ बता नहीं पा रही। पुलिस मौके पर पहुंची। महिला को वन स्टॉप सेंटर पर भेजा। जहां टीम ने महिला से पूछताछ की। उसने अपना नाम कल्पना और पति का नाम विनोद बताया।

अपना गांव चोलबोलपुर बता रही थी। महिला ने बताया कि उसका बेटा निर्मल बरेली के कस्बा शीशगढ़ में मजदूरी करता है। वह उससे मिलने आई थी। पुलिस उसके बारे में जानकारी कर रही है।

निबंध प्रतियोगिता में अर्चना ने मारी बाजी

प्रतियोगिता के बाद विजेता को सम्मानित करते अतिथि। ● अमृत विचार

बिल्सी, अमृत विचार : तहसील बिल्सी क्षेत्र के गांव मूसापुर स्थित जनता इंटर कॉलेज में शुक्रवार को सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्र की ओर से नशा मुक्ति अभियान के तहत धूम्रपान निषेध विषय पर निबंध प्रतियोगिता का आयोजन किया गया।

प्रतियोगिता में छात्राओं ने उत्साह के साथ भागीदारी दर्ज कराई। निर्णायक मंडल ने निबंधों का मूल्यांकन करने के बाद कक्षा 12 की छात्रा अर्चना को प्रथम, कक्षा 10 की अंजू को द्वितीय तथा कक्षा 12 की सलोनी को तृतीय स्थान प्रदान किया। चिकित्सक डॉ. नीरेश कुमार और तापस भारद्वाज ने प्रतिभागियों का उत्साहवर्धन करते हुए विजेता छात्राओं को पुरस्कार वितरित कर सम्मानित किया। प्रधानाचार्य चंद्रशेखर ने छात्रों को नशे से दूर रहने की सलाह दी।

पत्नी के हत्यारे को उम्रकैद की सजा

कार्यालय संवाददाता, अमरोहा

- पत्नी को जहर खिलाकर हत्या करने का मामला

अमृत विचार : पत्नी को जहर खिलाकर उसकी हत्या करने के मामले में पुलिस ने आरोपी पति को आजीवन कारावास की सजा सुनाई है। साथ ही ही 50 हजार रुपये का अर्थदंड भी लगाया गया है। आरोपी पति दहेज को लेकर पत्नी का उत्पीड़न कर रहा था।

यह घटना 27 अप्रैल 2022 को हसनपुर कोतवाली क्षेत्र के गांव मटैना की है। सैदनगली थाना क्षेत्र के गांव तरारा निवासी किसान जसवंत सिंह ने 20 मई 2013 को अपनी बेटी मानवती की शादी गांव मटैना के रहने वाले बलराम के साथ की थी। शादी के बाद से ही ससुराल पक्ष के लोग मानवती को दहेज के लिए प्रताड़ित करते थे। मायके से कार दिलाने का दबाव बनाते थे। प्रताड़ना के बीच मानवती ने दो बेटे और एक बेटी को जन्म दिया। विवाद के बीच दोनों पक्षों में कई बार पंचायतें भी हुईं लेकिन मामला नहीं निपटा। 27 अप्रैल 2022 को जसवंत सिंह अपने भाइयों के साथ मानवती को लेकर ससुराल पहुंचे और दामाद बलराम को समझाने का प्रयास किया लेकिन बलराम ने उनके सामने ही मानवती की पिटाई की। ग्रामीणों ने दोनों पक्षों को समझाकर विवाद निपटा दिया गया। इसके बाद जसवंत सिंह बेटी को सुसराल छोड़ लौट आए। उसी दिन शाम में करीब छह बजे बलराम ने मानवती को जहर खिला दिया जिससे उसकी मौत हो गई।

मायके पक्ष के लोग जब मौके पर पहुंचे तो बलराम समेत अन्य ससुराल वाले घर से भाग चुके थे। पुलिस ने शव का पोस्टमार्टम कराया तो रिपोर्ट में जहर के सेवन के बाद मुंह दबाकर हत्या की पुष्टि की। मामले में जसवंत सिंह ने बलराम समेत ससुराल पक्ष के सात लोगों के खिलाफ मुकदमा दर्ज कराया था। बाद में पुलिस ने बलराम को गिरफ्तार कर जेल भेज दिया था तभी से वह जेल में है। पुलिस ने विवेचना में छह आरोपियों के नाम निकालकर सिर्फ बलराम के खिलाफ हत्या की धाराओं में आरोप पत्र अदालत में दाखिल किया था। मुकदमे की सुनवाई एफटीसी प्रथम की अदालत में विचाराधीन थी। गुरुवार को हुई सुनवाई के दौरान अदालत ने पत्रावली व साक्ष्यों का गहनता से अवलोकन करते हुए मानवती की हत्या में पति बलराम को दोषी करार दिया था। शुक्रवार को अदालत में सजा के प्रश्न पर सुनवाई हुई जिसमें सहायक जिला शासकीय अधिवक्ता संजीव चौधरी ने बताया कि दोषी बलराम को आजीवन कारावास की सजा सुनाई है।

उर्दू साहित्य परिषद का किया पुनर्गठन, फरजाना बनीं अध्यक्ष

राजकीय महाविद्यालय में उर्दू साहित्य परिषद की पदाधिकारी। ● अमृत विचार

बदायूं, अमृत विचार : आवास विकास स्थित राजकीय महाविद्यालय में सत्र 2025- 26 के लिए उर्दू साहित्य परिषद की कार्यकारिणी का पुनर्गठन किया गया। उर्दू विभाग के असिस्टेंट प्रोफेसर डॉ. जुनैद आलम के निर्देशन में चुनाव अधिकारी डॉ. राकेश कुमार जायसवाल ने चुनाव संपन्न कराया। जिसमें एमए प्रथम सेमेस्टर की छात्रा फरजाना सर्वाधिक मत प्राप्त कर अध्यक्ष निर्वाचित हुई। उपाध्यक्ष के दो पदों पर नबीला और राबिया निर्वाचित हुई। वहीं महामंत्री पद पर एमए तृतीय सेमेस्टर की जेबा ने सर्वाधिक मत प्राप्त कर विजय प्राप्त की। संयुक्त सचिव पद नीलोफर और कहकशां को मिला। सभी निर्वाचित पदाधिकारियों को प्राचार्य डॉ. अनिल कुमार ने पद व कर्तव्य की शपथ दिलाई। डॉ. हुकुम सिंह, डॉ. प्रेमचंद चौधरी, डॉ. दिलीप कुमार वर्मा, डॉ. ज्योति विश्नोई आदि उपस्थित रहे।

एथलेटिक्स में बच्चों का शानदार प्रदर्शन

- अधिकारियों ने विजेता बच्चों को किया पुरस्कृत

कार्यालय संवाददाता, अमरोहा

अमृत विचार: भारतीय ऐथलेटिक्स महासंघ एवं जिला एथलेटिक्स एसोसिएशन के तत्वाधान में अंडर 14 एवं 16 आयु वर्ग की बालिकाओं के टेलेंट सर्च हेतु अस्मिता ऐथलेटिक्स लीग का आयोजन स्पोर्ट्स स्टेडियम मालीखेड़ा में किया गया।

प्रतियोगिता का आरंभ अंतरराष्ट्रीय ऐथलीट सुनीता दहिया क्षेत्राधिकारी मुरादाबाद नगर एवं मुख्य सुरक्षा अधिकारी जितेंद्र कुमार के द्वारा किया गया। भाला फेंक में पलक ने प्रथम स्थान व आयुषी ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया, गोला फेंक में प्रियांशी ने प्रथम स्थान व सोनिया ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया, चक्का फेंक में जूही ने प्रथम स्थान व नीति ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया, ऊंची कूद में शबाना ने प्रथम स्थान व प्रियंका ने द्वितीय स्थान प्राप्त किया। इस टैलेंट सर्च प्रतियोगिता के माध्यम से जनपद एथलेटिक्स एसोसिएशन अमरोहा के महासचिव प्रभाश चंद त्यागी ने सभी बच्चों को कड़ी मेहनत के साथ खेलों में आगे बढ़ाने के लिए प्रोत्साहित किया। समापन अपर जिलाधिकारी न्यायिक धीरेंद्र प्रताप सिंह द्वारा किया गया। मुख्य अतिथि द्वारा सभी विजेता बच्चों को पुरस्कार देकर सम्मानित किया गया। संचालन ओलंपिक एसोसिएशन महासचिव डाक्टर एमपी शर्मा ने किया। इस अवसर पर जिला क्रीड़ा अधिकारी देशकांत त्यागी, डॉ वीरेंद्र सिंह, राजदीप सिंह, हरविंदर सिंह उर्फ विक्की, रणदीप सिंह, दुष्यंत कुमार ,ओमकारी गुर्जर,नितिन चौधरी, अमित कुमार, निहाल सक्सेना, आंचल, रिषिका, सचिन कुमार आदि उपस्थित रहे।

विजेताओं को पुरस्कृत करते अधिकारी। ● अमृत विचार

बाजार	सेंसेक्स ↓	निफ्टी ↓
बंद हुआ	85,231.92	26,068 .15
गिरावट	400 .76	124
प्रतिशत में	0 .47	0 .47

सोना 1,26,715.00 प्रति 10 ग्राम

चांदी 1,54,900 प्रति किलो

अमृत विचार

बरेली, शनिवार, 22 नवंबर 2025

www.amritvichar.com

न्यूज ब्रीफ

कॉम्बिनेशन मीटर बदलने को 11500 अर्बन क्रूजर हाइडर वापस मंगाईं

नई दिल्ली। टोयोटा किर्लोस्कर मोटर अपने मध्यम आकार की एसयूवी अर्बन क्रूजर हाइडर की 11,529 इकाइयों को डैशबोर्ड के एक हिस्से की जांच और बदलने के लिए वापस मंगा रही है। इन इकाइयों को वापस मंगाने का मकसद नौ दिसंबर 2024 से 29 अप्रैल 2025 के बीच बनी 11,529 वाहनों में यदि 'कॉम्बिनेशन मीटर' में खराबी पाई जाती है, तो उसकी जांच करना और बदलना है। टोयोटा किर्लोस्कर मोटर ने अपनी वेबसाइट पर कहा कि अपने 'सबसे पहले ग्राहक' दृष्टिकोण और उच्चतम गुणवत्ता मानकों के प्रति प्रतिबद्धता के तहत कंपनी ग्राहकों की चिंताओं को तुरंत दूर करती रहेगी।

इजराइल के साथ एफटीए का रास्ता खुला

नई दिल्ली। भारत और इजराइल के बीच मुक्त व्यापार समझौते (एफटीए) पर जल्द ही वार्ता शुरू होगी। केंद्रीय वाणिज्य एवं उद्योग मंत्री पीयूष गोयल और इजराइल के उद्योग एवं आर्थिक मामलों के मंत्री नीर बरकत के बीच हुई एक बैठक में एफटीए पर बातचीत की दिशा तय करने के लिए दोनों मंत्रियों ने गुरुवार को एक टर्म ऑफ रिफ्रेंस (टीओआर) पर हस्ताक्षर किए। इजराइल की आधिकारिक यात्रा पर गए गोयल ने सोशल मीडिया प्लेटफॉर्म एक्स पर एक पोस्ट में बताया कि अंतिम मुक्त व्यापार समझौते तक पहुंचने के लिए बातचीत को आसान बनाने की दिशा में टीओआर पहला जरूरी कदम है।

इंटरग्लोब एविएशन में 82 करोड़ डॉलर का निवेश करेगी इंडिगो

मुंबई। घरेलू विमान कंपनी इंडिगो ने विमान अधिग्रहण के लिए अपनी पूर्ण स्वामित्व वाली अनुषंगी कंपनी इंटरग्लोब एविएशन फाइनेंशियल सर्विसेज आईएफएससी प्राइवेट लिमिटेड में 82 करोड़ डॉलर (करीब 7,270 करोड़ रुपये) के निवेश को शुक्रवार को मंजूरी दे दी है। यह निवेश शेयर और 0 .01 प्रतिशत गैर-संचयी वैकल्पिक रूप से परिवर्तनीय प्रतिदेय तरजही शेयर (ओसीआरपीएस) के संयोजन के माध्यम से एक या एक से अधिक किस्तों में किया जाएगा।

रियल एस्टेट और इन्फ्रा निवेश ट्रस्टों में खुदरा निवेश बढ़ाने की जरूरत

सेबी प्रमुख ने कहा- बुनियादी ढांचा जरूरतों के लिए पैसे जुटाने का अनोखा अवसर

नई दिल्ली, एजेंसी

भारतीय प्रतिभूति एवं विनिमय बोर्ड (सेबी) के अध्यक्ष तुहीन कांत पांडेय ने रियल एस्टेट निवेश ट्रस्टों (रिट्स) और बुनियादी ढांचा निवेश ट्रस्टों (इनविट्स) में खुदरा निवेश बढ़ाने की जरूरत पर बल देते हुए शुक्रवार को कहा कि ये दोनों तंत्र देश की बुनियादी ढांचा जरूरतों के लिए पैसे जुटाने का अनोखा अवसर प्रदान करते हैं।

भारत इनविट्स एसोसिएशन और इंडियन रिट्स एसोसिएशन द्वारा संयुक्त रूप से आयोजित राष्ट्रीय सम्मेलन को संबोधित करते हुए पांडेय ने बताया कि सेबी दोनों इंस्ट्रूमेंट्स में निवेश बढ़ाने के उपाय कर रहा है। इसके लिए वह केंद्रीय वित्त मंत्रालय

● केंद्रीय वित्त मंत्रालय और राज्य सरकारों के साथ की जा रही चर्चा

और राज्य सरकारों के साथ भी चर्चा कर रहा है। उन्होंने एमएससीआई की तरह दूसरे सूचकांकों में इन्हें अधिक से अधिक शामिल करने की जरूरत पर बल दिया। कार्यक्रम में नीति आयोग के पूर्व मुख्य कार्यकारी अधिकारी अमिताभ कांत ने कहा कि सरकार को परिसंपत्ति प्रबंधन की जिम्मेदारी निभाने की बजाय इनविट्स बनाकर उसके मौद्रीकरण को सरल बनाने पर विचार करना चाहिये। उन्होंने कहा कि भारत के पास रिट्स और इनविट्स मिलाकर एक लाख करोड़ डॉलर यानी लगभग 90 लाख करोड़ रुपये के निवेश तक पहुंचने की संभावना है।

वर्तमान में देश में पांच सूचीबद्ध रिट्स और 24 सूचीबद्ध इनविट्स हैं। इनके पास सम्मिलित रूप से 9.25 लाख करोड़ रुपये का निवेश है। इसमें सात लाख करोड़ रुपये का निवेश इनविट्स के पास है। पांडेय के अनुसार आने वाले समय में देश में सड़क, परिवहन, शहरीकरण, ऊर्जा और विमानन क्षेत्रों में अपार संभावनाएं हैं। वैश्विक स्तर पर जहां सभी सूचीबद्ध रियल एस्टेट परिसंपत्तियों में 57 प्रतिशत रिट्स और इनविट्स का हिस्सा हैं, वहीं भारत में यह महज 12 प्रतिशत है। उन्होंने कहा कि दोनों तंत्र देश में नये हैं और इन्हें बढ़ावा देने के उपाय किये जाने चाहिये।

सेबी ने पेंशन फंड नियामक और बीमा नियामकों से उनके द्वारा नियमित इकाइयों को इनविट्स और रिट्स में निवेश के लिए प्रोत्साहित करने की अपील की। साथ ही कहा कि म्यूचुअल फंडों में अतिरिक्त तरलता पूल तैयार किया जायेगा ताकि इन दोनों तंत्रों में निवेश कर देश में बुनियादी ढांचे के लिए ज्यादा से ज्यादा पूंजी उपलब्ध करायी जा सके। उन्होंने खुदरा निवेशकों को इनविट्स और रिट्स में निवेश के लिए प्रोत्साहित करने की जरूरत पर बल देते हुए कहा कि देश में सिर्फ 10 प्रतिशत निवेशक इनके बारे में जागरूक हैं। खुदरा निवेशकों को अन्य विकल्पों की तरह इन्हें एक स्वाभाविक विकल्प के रूप में देखना चाहिये।

भारतीय उपमहाद्वीप के अध्ययन को 100 करोड़ देगा अडानी ग्रुप

अहमदाबाद। अडानी समूह भारतीय उपमहाद्वीप - विशेषकर भारत - के इतिहास, यहां की संस्कृति और विरासत के अध्ययन के लिए काम करने वाले विद्वानों और प्रौद्योगिकी के विशेषज्ञों को 100 करोड़ रुपये की आर्थिक सहायता प्रदान करेगा। समूह के अध्यक्ष गौतम अडानी ने शुक्रवार को अडानी वैश्विक इंडोलॉजी सम्मेलन को संबोधित करते हुए भारत नॉलेज ग्राफ बनाने और इंडोलॉजी मिशन में काम करने वाले विद्वानों और विशेषज्ञों के लिए वित्तीय प्रतिबद्धता की घोषणा की। कहा कि आने वाले समय में बच्चे अपने देश के बारे में जानने के लिए न तो किताबों के पन्ने पलटेंगे और न ही किसी जानकार के पास जायेंगे। वे एआई से और मशीन से पूछेंगे। वर्तमान समय में भारत के बारे में एआई पर जो भी उपलब्ध है वह देश को सही ढंग से परिभाषित नहीं करता और इसलिए भारत नॉलेज ग्राफ तैयार करने और इंडोलॉजी मिशन की जरूरत है।

शेयर बाजार में जारी तेजी थमी सेंसेक्स 400 अंक लुढ़का

मुंबई, एजेंसी

घरेलू शेयर बाजारों में दो दिनों से जारी तेजी पर शुक्रवार को विराम लगा और दोनों मानक सूचकांक, बीएसई सेंसेक्स 400 अंक लुढ़क गया, जबकि एनएसई निफ्टी 124 अंक टूटा। कमजोर वैश्विक रुझानों और अमेरिकी फेडरल रिजर्व की ओर से दिसंबर में ब्याज दरों में कटौती की उम्मीद कम होने से बाजार में गिरावट आई। तीस शेयर पर आधारित बीएसई सेंसेक्स 400.76 अंक यानी 0.47 प्रतिशत की गिरावट के साथ 85,231.92 अंक पर बंद हुआ।

कारोबार के दौरान एक समय यह 444.84 अंक तक फिसल गया था। पचास शेयर वाला एनएसई निफ्टी 124 अंक यानी 0.47 प्रतिशत की गिरावट के साथ 26,068.15 पर बंद हुआ। पिछले दो सत्र में यह एक प्रतिशत यानी 282 अंक से अधिक चढ़कर 26,000 के पार पहुंच गया था। सेंसेक्स में शामिल कंपनियों में से टाटा स्टील, एचसीएल टेक, बजाज फाइनेंस, बजाज फिनसर्व, भारत इलेक्ट्रॉनिक्स और इटर्नल के शेयर में प्रमुख रूप से गिरावट आई। दूसरी तरफ, लाभ में रहने वाले शेयरों में मारुति, महिंद्रा एंड महिंद्रा, टाटा मोटर्स पैसेंजर व्हीकल्स और आईटीसी शामिल हैं। विश्लेषकों का कहना है कि अमेरिका में उम्मीद से बेहतर गैर-कृषि वेतन आंकड़ों ने अमेरिकी फेडरल रिजर्व द्वारा दिसंबर में ब्याज दरों में कटौती की उम्मीदों को कम कर दिया है। इससे वैश्विक बाजारों में निवेशकों की धारणा कमजोर हुई। एआई से संबंधित शेयरों में जरूरत से अधिक तेजी को लेकर चिंता ने भी वैश्विक बाजारों में निवेशकों की धारणा को कमजोर किया। एशिया के अन्य बाजारों में भारी गिरावट दर्ज की गई।

सरकारी अधिकारियों के लिए चार नए ऑनलाइन कोर्स शुरू

नई दिल्ली, एजेंसी

अरुण जेटली राष्ट्रीय वित्तीय प्रबंधन संस्थान (एजेएनआईएफएम) ने सरकारी लोक वित्त एवं प्रशासन से संबंधित चार नए ऑनलाइन कोर्स शुरू किए हैं। यह संस्थान केंद्रीय वित्त मंत्रालय के व्यय विभाग के अधीनस्थ है।

विभाग के सचिव वी. वुअलनाम ने इन पाठ्यक्रमों का उद्घाटन करते हुए लोक सेवकों के लिए प्रशिक्षण एवं पेशेवर विकास में नवाचार के लिए प्रतिबद्धता पर जोर दिया। नए पाठ्यक्रम ट्रेनिंग को आसान और असरदार बनाने के लिए आईजीओटी कर्मयोगी प्लेटफ़ॉर्म का इस्तेमाल करते हैं। यह प्लेटफॉर्म लोक सेवकों के लिए केंद्र सरकार का मुख्य शिक्षण पोर्टल है। वुअलनाम ने सतत पेशेवर विकास के महत्व और वित्तीय प्रशासन को मज़बूत बनाने में डिजिटल शिक्षण की भूमिका पर जोर दिया। उन्होंने इन पाठ्यक्रमों में उभरती वित्तीय प्रौद्योगिकी, विश्लेषण उपकरणों और प्रायोगिक एप्लिकेशन के समावेश के लिए एजेएनआईएफएम की तारीफ करते हुए कहा कि यह सार्वजनिक जीवन में नवाचार आधारित क्षमता-वर्धन पर सरकार के जोर के अनुरूप है। निदेशक प्रवीण कुमार ने वित्तीय प्रबंधन और प्रशासनिक सुधारों में शिक्षण को आगे बढ़ाने की प्रतिबद्धता पर जोर दिया। नए पाठ्यक्रमों में 'भारत में फिनटेकः ग्रोथ स्टोरी और रेगुलेटरी फ्रेमवर्क', 'कबाड़ का निस्तारण', 'वित्तीय विश्लेषण में नकदी प्रवाह स्टेटमेंट' और 'पूर्व निर्धारित आय वाली प्रतिभूतियों का इस्तेमाल करके निवेश प्रबंधन' शामिल हैं।

वैश्विक क्षमता केंद्र स्थापित करने के लिए तमिलनाडु ने एएनएसआर से की साझेदारी

चेन्नई। तमिलनाडु ने 500 कंपनियों के लिए वैश्विक क्षमता केंद्र (जीसीसी) स्थापित करने और उसे बढ़ावा देने के लिए वैश्विक अग्रणी एएनएसआर के साथ एक रणनीतिक समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए हैं।

यह साझेदारी प्रौद्योगिकी, नवाचार एवं उच्च मूल्य वाली वैश्विक सेवाओं के लिए दुनिया के सबसे आकर्षक स्थलों में से एक के रूप में तमिलनाडु की स्थिति को मजबूत करने में एक बड़ी उपलब्धि है। प्रेस विज्ञप्ति के अनुसार, तमिलनाडु की समर्पित जीसीसी नीति, अद्वितीय रोजगार क्षमता एवं सबसे तेजी से बढ़ते प्रौद्योगिकी कार्यबल का लाभ उठाते हुए एएनएसआर के साथ सहयोग से महत्वपूर्ण निवेश उत्पन्न होने, नवाचार क्षमताओं को आगे बढ़ाने और तमिलनाडु में 10,000 से अधिक उच्च-मूल्य वाली जीसीसी नौकरियों का सृजन होने की उम्मीद है। उद्योग मंत्री टी.आर.बी. राजा ने कहा, इस साझेदारी के माध्यम से, एएनएसआर वैश्विक निगमों की अगली लहर लाने में मदद करेगा। हम नीतिगत सक्षमता, त्वरित अनुमोदन, 'साइट' चयन और मजबूत प्रतिभा संपर्कों के माध्यम से उनका समर्थन करेंगे।

एसएफआईओ के नोटिसों पर आसान सत्यापन के लिए होगा क्यूआर कोड

नई दिल्ली, एजेंसी

गंभीर धोखाधड़ी जांच कार्यालय (एसएफआईओ) द्वारा जारी नोटिसों पर अब क्यूआर कोड का प्रावधान किया गया है जिसके माध्यम से आसानी से इनका सत्यापन किया जा सकेगा।

कंपनीज एक्ट, 2013 के तहत गठित एसएफआईओ इस कानून की धारा 212 के तहत सौंपे गए गंभीर और बड़े कॉर्पोरेट धोखाधड़ी की जांच करता है और उन पर केस चलाता है। जांच के दौरान, नियमों के मुताबिक समन/नोटिस भी जारी किया जाता है। कॉर्पोरेट मामलों के मंत्रालय ने शुक्रवार को बताया कि एसएफआईओ ने समन/नोटिस के गलत इस्तेमाल या नकल को रोकने के लिए प्रौद्योगिकी और प्रक्रिया के स्तर पर सुरक्षात्मक उपाय किए हैं। एसएफआईओ द्वारा जारी किये गए समन/नोटिस डिजिटली जेनरेट होते हैं और उनमें एक क्यूआर कोड और एक विशिष्ट

● दुरुपयोग और धोखाधड़ी रोकने के लिए उठाया कदम, सुरक्षात्मक उपाय किए गए

दस्तावेज पहचान संख्या (डीआईएन) होता है।

कुछ बेहद खास परिस्थितियों को छोड़कर एसएफआई के अधिकारियों को सिर्फ़ डिजिटल तरीके से जेनरेट समन/नोटिस जारी करने का अधिकार है। नोटिस पर मौजूद क्यूआर कोड को स्कैन कर उसकी सत्यता की जांच की जा सकती है। इसके अलावा एजेंसी की वेबसाइट पर जाकर भी पुष्टि की जा सकती है। मंत्रालय की प्रेस विज्ञप्ति में कहा गया है कि ये सत्यापन तंत्र इसलिए स्थापित किये गये हैं ताकि लोगों को तुरंत भरोसा मिल सके कि उन्हें जो भी नोटिस मिला है वह असली है, और नकल या गलत इस्तेमाल को रोका जा सके। इसके अलावा, निगरानी बढ़ाने के लिए, एसएफआईओ में समन और नोटिस जारी करने पर नजर रखने के लिए एक पारदर्शी बहु-स्तरीय पुनरीक्षण तंत्र मौजूद है।

इंडिगो ने विमानों-इंजनों की खरीद के लिए 82 करोड़ डॉलर का आवंटन किया

नई दिल्ली। निजी विमान सेवा कंपनी इंडिगो ने विमानों और इंजनों की खरीद के लिए 82 करोड़ डॉलर (लगभग 7,265 करोड़ रुपये) के आवंटन की घोषणा की है।

कंपनी ने शुक्रवार को एक प्रेस विज्ञप्ति में बताया कि उसने अपनी पूर्ण स्वामित्व वाली इकाई इंटरग्लोबर एविएशन फाइनेंशियल सर्विसेज आईएफएससी प्राइवेट लिमिटेड (इंडिगो आईएफएससी) में 82 करोड़ डॉलर के पूंजी निवेश को मंजूरी प्रदान की है। यह निवेश मुख्य रूप से इक्विटी शेयरों के माध्यम से किया जायेगा जबकि 0.01 प्रतिशत राशि के लिए निवेश गैर-संग्रहणीय वैकल्पिक रूप से परिवर्तनीय प्राथमिकता के आधार पर भुनाने योग्य शेयर जारी किये जायेंगे। यह निवेश एक या एक से अधिक किस्तों में किया जायेगा। उसने बताया कि इस तरह जुटाई गयी राशि का इस्तेमाल इंडिगो आईएफएससी द्वारा विमानन परिसंपत्तियों की खरीद के लिए किया जायेगा, ताकि कंपनी को विमान मिल सकें।

राष्ट्रीय

भारत से हर घुसपैठिये को बाहर निकाला जाएगा : शाह

केंद्रीय गृहमंत्री ने भुज में बीएसएफ के हीरक जयंती समारोह को किया संबोधित, एसआईआर को लेकर तृणमूल पर किया कटाक्ष

भुज (गुजरात), एजेंसी

केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह ने शुक्रवार को कहा कि सरकार देश से हर घुसपैठिये को बाहर निकाल देगी। उन्होंने आरोप लगाया कि कुछ राजनीतिक दल एसआईआर प्रक्रिया का विरोध कर रहे हैं क्योंकि वे चाहते हैं कि घुसपैठियों के नाम मतदाता सूची में बने रहें। वह गुजरात के कच्छ जिले के भुज में सीमा सुरक्षा बल (बीएसएफ) के हीरक जयंती (61वें स्थापना दिवस) समारोह को संबोधित कर रहे थे। मतदाता सूची के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) पर शाह की टिप्पणी पश्चिम बंगाल की मुख्यमंत्री ममता बनर्जी द्वारा मुख्य निर्वाचन आयुक्त (सीईसी) ज्ञानेश कुमार को कड़े शब्दों में

भुज में बीएसएफ के हीरक जयंती समारोह में हिस्सा लेने पहुंचे अमित शाह।

सुरक्षा बलों के संयुक्त प्रयासों से होंगे नक्सलमुक्त

उन्होंने कहा कि सभी सुरक्षा बलों के संयुक्त प्रयासों की बदौलत भारत बहुत जल्द नक्सली समस्या से मुक्त हो जाएगा। शाह ने कहा, हम 31 मार्च 2026 तक देश को नक्सल समस्या से हमेशा के लिए मुक्त करने और अपने आदिवासी भाइयों-बहनों के विकास का मार्ग प्रशस्त करने के लिए दृढ़संकल्पित हैं। तिरुपति से पशुपति तक का पूरा कॉरिडोर सुरक्षित रहेगा और शेष भारत की तरह प्रगति करेगा। छत्तीसगढ़ में बीएसएफ ने 127 माओवादियों को आत्मसमर्पण के लिए मजबूर किया है, 73 को गिरफ्तार किया है और 22 को मार गिराया है। उन्होंने कहा कि न केवल प्रधानमंत्री नरेन्द्र मोदी बल्कि पूरा देश बीएसएफ जवानों की बहादुरी और अनुकरणीय साहस को सलाम करता है। उन्होंने उपस्थित लोगों को बताया कि अब तक बीएसएफ के 2,013 बहादुर जवानों ने देश की सीमाओं की सुरक्षा करते हुए सर्वोच्च बलिदान दिया है।

पत्र लिखे जाने के एक दिन बाद आई है, जिसमें उन्होंने (बनर्जी ने) इस प्रक्रिया को तुरंत रोकने का अनुरोध किया था। शाह ने कहा, आज बीएसएफ देश की सभी सीमाओं पर घुसपैठ रोकने में लगा हुआ है। घुसपैठ रोकना न केवल राष्ट्रीय सुरक्षा के लिए बल्कि देश की लोकतांत्रिक व्यवस्था को दूषित होने से बचाने के लिए भी आवश्यक है। एसआईआर को मतदाता सूची का शुद्धिकरण बताते हुए शाह ने कुछ राजनीतिक दलों पर अवैध घुसपैठियों के खिलाफ सरकार के अभियान को कमजोर करने का प्रयास करने का आरोप लगाया। उन्होंने कहा कि ये पार्टियां निर्वाचन आयोग द्वारा जारी एसआईआर का विरोध कर रही हैं, क्योंकि वे यह सुनिश्चित करना चाहती हैं कि घुसपैठियों के नाम मतदाता सूची में बने रहें। शाह ने कहा, मैं इस हीरक जयंती समारोह में बहुत स्पष्ट करना चाहता हूं कि हम इस देश से एक-एक घुसपैठिये को चुन-चुन कर बाहर निकालेंगे। यह हमारा प्रण है। एक-एक घुसपैठिए को देश से बाहर निकालना मोदी सरकार का संकल्प है। उन्होंने कहा, देश के किसी भी राज्य का मुख्यमंत्री कौन होगा या देश का प्रधानमंत्री कौन होगा, यह निर्णय केवल भारत के नागरिक ही कर सकते हैं। घुसपैठियों को हमारी लोकतांत्रिक व्यवस्था को दूषित करने और हमारे लोकतांत्रिक निर्णयों को प्रभावित करने का कोई अधिकार नहीं है। गृह मंत्री ने कहा कि एसआईआर भारत के लोकतंत्र को सुरक्षित और शुद्ध करने की एक प्रक्रिया है और हर नागरिक को इसका पूरा समर्थन करना चाहिए। उन्होंने कहा, मैं उन राजनीतिक दलों को भी आगाह करना चाहता हूं जो इन घुसपैठियों को बचाने में लगे हैं। बिहार चुनाव देश की जनता का जनादेश था। और यह जनादेश हमारे देश में घुसपैठियों की मौजूदगी के खिलाफ है।

आत्महत्या: छात्रा ने शिक्षक से पांच बार मांगी थी मदद

नई दिल्ली/जयपुर, एजेंसी

● सीबीएसई की एक जांच रिपोर्ट में सामने आया सच

सीबीएसई की एक जांच रिपोर्ट में यह बात सामने आई है कि जयपुर के एक स्कूल आत्महत्या करने वाली चौथी कक्षा की छात्रा को उसकी कक्षा में 18 महीने से ज्यादा समय तक 'परेशान' किया गया तथा सहपाठी उसके खिलाफ 'बुरे शब्द' इस्तेमाल करते थे जबकि स्कूल अच्छा माहौल बनाए रखने में नाकाम रहा।

सीबीएसई ने जयपुर के नीरजा मोदी स्कूल को कारण बताओ नोटिस जारी किया है। बोर्ड ने इस महीने की शुरुआत में स्कूल की इमारत से कूदकर जान देने वाली नौ वर्षीय लड़की की मौत की जांच के लिए गठित समिति की रिपोर्ट मिलने पर यह नोटिस जारी किया। इस बीच, राजस्थान पुलिस ने कहा है कि घटना के 'आपराधिक पक्ष' की जांच जारी है। जांच समिति ने स्कूल की तरफ से कई कमियों की ओर इशारा किया, जिसमें लड़की को लगातार परेशान किये जाने की ओर ध्यान दिलाया गया, और बताया गया कि उसके माता-पिता ने सबसे पहले जुलाई 2024 में शिक्षकों के सामने यह मुद्दा उठाया था।

समिति ने पाया कि कक्षा अध्यापक ने बच्ची की दिक्कतों के संबंध में कोई कार्रवाई नहीं की, तब भी जब लड़की अपनी जिंदगी के आखिरी 45 मिनट में पांच बार शिक्षक के पास मदद मांगने गई। कक्षा चार की बच्ची ने एक नवंबर को स्कूल की चौथी मंजिल से कूदकर जान दे दी थी।

बिहार मंत्रिमंडल में विभागों का बंटवारा भाजपा के सम्राट को मिला गृह विभाग

पटना, एजेंसी

● राज्य में पहली बार भाजपा के किसी नेता को सौंपा गया गृह विभाग

● इससे पहले नीतीश कुमार अपने पास ही रखते थे यह मंत्रालय

बिहार के मुख्यमंत्री नीतिश कुमार ने शुक्रवार को अपने मंत्रिमंडल में विभागों का बंटवारा किया, जिसके तहत उपमुख्यमंत्री सम्राट चौधरी को गृह विभाग का कार्यभार सौंपा गया है। बिहार में पहली बार भाजपा के किसी नेता को गृह विभाग दिया गया है।

एक आधिकारिक अधिसूचना के अनुसार कुमार ने सामान्य प्रशासन विभाग (जीएडी), कैबिनेट सचिवालय, निगरानी और चुनाव विभाग अपने पास रखे हैं। हाल ही में हुए विधानसभा चुनाव के बाद बृहस्पतिवार को पटना के गांधी मैदान में कुमार ने रिकॉर्ड 10वीं बार मुख्यमंत्री पद की शपथ ली थी। इसके अलावा 26 मंत्रियों ने भी शपथ ग्रहण की। कुमार के मुख्यमंत्री रहते हुए यह पहला अवसर है जब उनके पास गृह विभाग नहीं होगा। इससे पहले उनके सभी कार्यकाल में यह विभाग उनके पास ही रहा है। भाजपा और कुमार की जनता दल (यूनाइटेड) समेत विभिन्न दलों के राष्ट्रीय जनतांत्रिक गठबंधन में गृह विभाग को लेकर खींचतान चल रही थी। अब उप मुख्यमंत्री सम्राट चौधरी राज्य की कानून-व्यवस्था की जिम्मेदारी संभालेंगे। कैबिनेट विभाग की अधिसूचना के अनुसार भाजपा से उप मुख्यमंत्री विजय कुमार सिन्हा को भूमि एवं राजस्व विभाग और खान एवं भू-तत्व विभाग दिए गए हैं। मंगल पांडे को स्वास्थ्य विभाग और विधि, दिलीप जायसवाल को उद्योग विभाग, नितिन नवीन को पथ निर्माण और नगर विकास एवं आवास विभाग सौंपा गया है। इसके अलावा, रामकृपाल यादव को कृषि विभाग, संजय टाइगर को श्रम संसाधन विभाग, अरुण शंकर प्रसाद को पर्यटन विभाग तथा कला, संस्कृति एवं युवा विभाग की जिम्मेदारी दी गई है।

मंत्रियों में 24 में से 21 करोड़पति भाजपा की रमा सबसे रईस

पटना। एसोसिएशन फॉर डेमोक्रेटिक रिफॉर्म्स (एडीआर) की ताज़ा रिपोर्ट के अनुसार, विश्लेषित 24 मंत्रियों में से 21 यानी 88 प्रतिशत मंत्री करोड़पति हैं। यानी कैबिनेट में हर 10 में से 9 मंत्री करोड़पति हैं। एडीआर के अनुसार सभी 24 मंत्रियों की औसत घोषित संपत्ति 5.32 करोड़ है। औराई विधानसभा क्षेत्र से भाजपा की विधायक रमा निषाद कैबिनेट की सबसे संपन्न मंत्री हैं।

उन्होंने कुल 31.86 करोड़ की संपत्ति घोषित की है। यह संपत्ति मंत्रियों की सूची में दूसरे स्थान के मंत्री से लगभग तीन गुना अधिक है। दूसरे स्थान पर उपमुख्यमंत्री विजय कुमार सिन्हा का है। लखीसराय विधानसभा क्षेत्र से निर्वाचित भाजपा के श्री सिन्हा ने कुल 11.62 करोड़ रुपये की संपत्ति घोषित की है। वहीं तीसरे पायदान पर भी भाजपा की टिकट पर तारापुर विधानसभा क्षेत्र से निर्वाचित सम्राट चौधरी का कब्जा है।

उपमुख्यमंत्री चौधरी ने कुल 11.34 करोड़ रुपये की संपत्ति घोषित की है। दलवार गणना करें तो भाजपा के 13 में से 11 मंत्री करोड़पति हैं। जदयू के आठ विश्लेषित मंत्रियों में से आठों मंत्री करोड़पति हैं। हम और लोजपा (रा) के एक- एक मंत्री करोड़पति हैं।

एनआईए मुख्यालय में वकील से मिलने की याचिका नामंजूर

नई दिल्ली, एजेंसी

दिल्ली विस्फोट

● हाईकोर्ट ने कहा- आरोपी के लिए कोई नई प्रक्रिया नहीं बनाई जा सकती

दिल्ली उच्च न्यायालय ने लालकिले के निकट धीमी गति से चलती कार में हुए विस्फोट मामले के सह-आरोपी जसीर बिलाल वानी की उस याचिका पर आदेश पारित करने से शुक्रवार को इन्कार कर दिया, जिसमें एनआईए मुख्यालय में वकील से मुलाकात करने देने का अनुरोध किया गया था।

न्यायमूर्ति स्वर्णकांता शर्मा ने कहा कि आरोपी एनआईए मुख्यालय में अपने वकील से मुलाकात करने देने की अनुरोध याचिका को खारिज करने संबंधी निचली अदालत का कोई भी आदेश दिखाने में विफल रहा है। उच्च न्यायालय ने कहा कि आरोपी कोई विशेष व्यक्ति नहीं है तथा अदालत में एक निश्चित प्रक्रिया का पालन किया जाना चाहिए और उसके लिए कोई नई प्रक्रिया नहीं बनाई जा सकती। न्यायाधीश ने कहा, आपको लगता है कि मैं अपनी प्रक्रिया स्वयं बनाऊंगा, मैं ऐसा नहीं करूंगा। यह कोई विशेष प्रक्रिया नहीं है।

अदालत ने यह टिप्पणी उस वक्त की, जब वानी के वकील ने दावा किया कि निचली अदालत ने अर्जी को मौखिक रूप से खारिज कर दिया था। न्यायमूर्ति शर्मा ने कहा, कोई मौखिक अस्वीकृति नहीं हो सकती। यदि आपके पास आदेश नहीं है, तो आप मेरे सामने क्यों हैं।

शव को फिर से दफनाने के लिए कब्र से निकालने की अनुमति नहीं

नई दिल्ली, एजेंसी

● मद्रास हाईकोर्ट के फैसले में हस्तक्षेप में सुप्रीम कोर्ट का इन्कार कोविडकाल के दौरान हुई थी मौत

उच्चतम न्यायालय ने शुक्रवार को मद्रास उच्च न्यायालय के उस फैसले को बरकरार रखा, जिसमें 2020 में कोविड महामारी के दौरान मृत एक व्यक्ति के शव को उसके पारिवारिक कब्रिस्तान में फिर से दफनाने के लिए कब्र से निकालने की अनुमति देने वाले आदेश को रद्द कर दिया गया था।

मद्रास उच्च न्यायालय की खंडपीठ के फैसले को चुनौती देने वाली मृत व्यक्ति की पत्नी द्वारा दायर याचिका पर सुनवाई करते हुए, न्यायमूर्ति विक्रम नाथ और न्यायमूर्ति संदीप मेहता की शीर्ष अदालत की पीठ ने हस्तक्षेप करने से इनकार कर दिया और कहा कि महामारी के समय स्थिति अलग थी। शीर्ष अदालत की पीठ ने कहा कि याचिकाकर्ता ने अपने पति की मृत्यु के चार साल बाद उच्च न्यायालय का दरवाजा खटखटाया था और कहा कि यदि वह इस तरह के अनुरोध को अनुमति देता है, तो इसी तरह के कई मामले सामने आएंगे। पीठ ने कहा कि हमें उच्च न्यायालय के आदेश में हस्तक्षेप करने का कोई कारण नहीं दिखता।

जुलाई में मद्रास उच्च न्यायालय की एक खंडपीठ ने एकल न्यायाधीश के उस आदेश को रद्द कर दिया था, जिसमें अधिकारियों को मृतक की पत्नी को उसके शव को कब्र से निकालने और प्रोटेस्टेंट ईसाई रीति-रिवाजों के अनुसार उसके अवशेषों को उनके पैतृक स्थान पर पारिवारिक कब्रिस्तान में पुनः दफनाने की अनुमति देने का निर्देश दिया गया था।

वर्ल्ड ब्रीफ

नाइजीरिया में स्कूल में घुसकर विद्यार्थियों का अपहरण किया

अबुजा। नाइजीरिया में बंदूकधारियों ने शुक्रवार सुबह पश्चिमी प्रांत में स्थित एक कैथोलिक स्कूल पर धावा बोलकर कई विद्यार्थियों और कर्मचारियों का अपहरण कर लिया। यह घटना ऐसे समय में हुई है, जब कुछ दिन पहले ही पड़ोसी राज्य में बंदूकधारियों ने 25 छात्राओं को अगवा कर लिया था। राज्य सरकार में सचिव अबुबकर उस्मान ने बताया कि यह हमला और अपहरण सेंट मैरी स्कूल में हुआ, जो अगवारा में स्थित है। हालांकि, उन्होंने अगवा किए गए विद्यार्थियों और कर्मचारियों के बारे में कोई जानकारी साझा नहीं की। स्थानीय टीवी चैनल 'अराइज टीवी' की खबर के मुताबिक, 52 विद्यार्थियों का अपहरण किया गया है। इस घटना की किसी भी समूह ने जिम्मेदारी नहीं ली है।

आईएस समर्थित विद्रोहियों ने पूर्वी कांगो में 89 लोगों की हत्या की

गोमा। इस्लामिक स्टेट समर्थित विद्रोही समूह ने पूर्वी कांगो में कई गांवों पर हमला कर 89 लोगों की हत्या कर दी। देश में स्थित संयुक्त राष्ट्र शांति मिशन ने बताया, लुबेरो शहर से लगभग 60 किमी पश्चिम में स्थित ब्याम्बे गांव में 'एलाइड डेमोक्रेटिक फोर्सेस' ने शनिवार को एक अस्पताल में 17 लोगों की हत्या की। इनमें प्रसूति वार्ड में भर्ती 11 महिलाएं भी शामिल थीं। मिशन के कार्यवाहक प्रमुख ब्रूनो लेमारक्विस ने कहा, नागरिकों के खिलाफ की गई हिंसा, जिसमें चिकित्सा सुविधाओं में होने वाले हमले भी शामिल हैं, युद्ध अपराधों और अंतरराष्ट्रीय कानून के गंभीर उल्लंघनों के दायरे में आ सकती है।

ईरानी पेट्रो उत्पादों की बिक्री में शामिल भारतीय संस्थाओं पर प्रतिबंध

न्यूयॉर्क/वाशिंगटन। अमेरिका ने भारत की उन संस्थाओं और व्यक्तियों पर प्रतिबंध लगाए हैं जो ईरान के पेट्रोलियम और पेट्रोलियम उत्पादों की बिक्री में शामिल हैं। ट्रंप प्रशासन ने कहा कि इस व्यापार से मिलने वाली धनराशि तेहरान के क्षेत्रीय आतंकवादी समूहों को समर्थन देने और हथियार प्रणालियां खरीदने में उपयोग की जाती है, जो अमेरिका के लिए सीधा खतरा हैं। इस सूची में जैर हुसैन इकबाल हुसैन सैय्यद, जुल्फिकार हुसैन रिजवी सैय्यद, महाराष्ट्र स्थित 'आरएन शिप मैनेजमेंट प्राइवेट लिमिटेड' और पुणे स्थित 'टीआर6 पेट्रो इंडिया एलएलपी' आदि भारतीय नागरिक और कंपनियां शामिल हैं। अमेरिका के विदेश और वित्त मंत्रालयों ने कहा है कि ये 'शिपिंग नेटवर्क' ईरानी शासन की दुर्भावनापूर्ण गतिविधियों को अवैध तेल बिक्री के माध्यम से वित्तीय सहायता प्रदान करते हैं।

फ्रांस ने मस्क के ग्रोक चैटबॉट के खिलाफ शुरू की कार्रवाई

पेरिस, एजेंसी

- ऑशविट्ज में गैस चैंबर को लेकर सवाल उठाने पर सरकार नाराज

फ्रांस सरकार ने अरबपति एलन मस्क के स्वामित्व वाली कंपनी द्वारा पेश किए गए कृत्रिम मेधा 'चैटबोट ग्रोक' के खिलाफ कार्रवाई शुरू की है। अधिकारियों ने यह जानकारी दी।

यह कदम उस समय उठाया गया जब 'चैटबोट' ने फ्रेंच भाषा में ऐसे पोस्ट तैयार किए, जिनमें ऑशविट्ज में गैस चैंबर को लेकर सवाल उठाए गए। मस्क की कंपनी 'एक्सएआई' द्वारा बनाया गया और उनके सोशल मीडिया मंच 'एक्स' में एकीकृत 'चैटबोट ग्रोक' ने फ्रेंच में साझा किए गए पोस्ट में कहा कि ऑशविट्ज़-बिरकेनौ शिविर के गैस चैंबर सामूहिक हत्या के लिए नहीं थे। ऑशविट्ज़ मेमोरियल ने 'एक्स' पर इस संवाद को उजागर करते हुए कहा कि यह प्रतिक्रिया ऐतिहासिक तथ्यों को तोड़ती-मरोड़ती है और मंच के नियमों का उल्लंघन करती है।

ऑशविट्ज़ द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान नाज़ी जर्मनी द्वारा स्थापित यातना केंद्र था 'ग्रोक' अक्सर ही यहूदियों के खिलाफ आपत्तिजनक टिप्पणियां करता रहा है। इस वर्ष की शुरुआत में, मस्क की कंपनी ने 'चैटबोट' के ऐसे पोस्ट हटा दिए थे जिनमें एडॉल्फ हिटलर की प्रशंसा प्रतीत होती थी। अभियोजकों ने कहा कि अब 'ग्रोक' की टिप्पणियां जांच का हिस्सा हैं और एआई के कामकाज की समीक्षा की जाएगी।

हर साल हजारों बच्चे लापता

बच्चों की गुमशुदगी के मामले में भारत की स्थिति बेहद गंभीर है। विभिन्न गैर-सरकारी संगठनों और राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो के आंकड़ों के अनुसार भारत दुनिया के उन देशों में से एक है जहां बच्चों के लापता होने के मामले बहुत ज्यादा हैं। बीबीसी की एक रिपोर्ट के अनुसार, हर घंटे लगभग 11 बच्चे लापता हो जाते हैं, और उनमें से कम से कम चार कभी नहीं मिलते। राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो के आंकड़े बताते हैं कि लापता होने वाले बच्चों में करीब 75 प्रतिशत लड़कियां होती हैं। बाल तस्करी, बंधुआ मजदूरी और यौन शोषण बच्चों के लापता होने के प्रमुख कारण हैं। सरकारी तौर किए जाने वाले प्रयास और पुलिस सिस्टम इसमें कमी लाने में नाकाम रहे हैं। हाल ही में भारत में लापता बच्चों की स्थिति पर सर्वोच्च न्यायालय ने भी गहरी चिंता जताई है और केंद्र सरकार को इसमें कमी लाने और रोकने के लिए ठोस उपायों की अपेक्षा की है।

बच्चों की बढ़ती गुमशुदगी

लगातार बढ़ रहा है आंकड़ा

- रिकॉर्ड के अनुसार देश में हर 8 मिनट में एक बच्चा लापता हो जाता है, अनुमानित तौर पर हर साल करीब 96 हजार बच्चे लापता हो जाते हैं।
- लापता बच्चों में लड़कियों की संख्या लड़कों से काफी ज्यादा है। एनसीआरबी के आंकड़ों के मुताबिक 2022 में 75% लापता बच्चे लड़कियां थीं।
- 2022 में, 76,069 बच्चों के अपहरण की सूचना मिली थी पुलिस की जांच के बाद और 33,650 लापता बच्चों को अपहरण का शिकार माना गया था।
- एनसीआरबी के आंकड़ों के अनुसार पश्चिम बंगाल में सबसे ज्यादा लापता बच्चे होते हैं, केरल और हरियाणा की स्थिति इस मामले में बेहतर है।

ये हैं प्रमुख कारण

- सबसे बड़ा कारण निसंतान दंपतियों को बच्चों को बेचने के रूप में उभरा है। देश में गोद लेने की प्रक्रिया कठिन होना इसका कारण है।
- बाल तस्करी दूसरी गंभीर समस्या है, जिसके तहत बच्चों को यौन शोषण, जबरन श्रम और भीख मांगने के लिए मजबूर किया जाता है।
- फिरौती के लिए अपहरण भी प्रमुख कारण है, कुछ सालों से इसमें हालांकि कमी आई है, लेकिन फिर भी लगातार ऐसी घटनाएं होती हैं।

वैश्विक स्तर पर भारत

- संयुक्त राज्य अमेरिका में हर साल अनुमानित रूप से 4,60,000 बच्चों के लापता होने की सूचना मिलती है।
- जर्मनी के सरकारी रिकॉर्ड के अनुसार हर साल लगभग 1,00,000 बच्चों के लापता होने की सूचना मिलती है।
- यूनाइटेड किंगडम में यह संख्या काफी ह, यहां हर साल 1,12,853 बच्च लापता होने की सूचना दर्ज होती है।

सुप्रीम कोर्ट के निर्देश

सुप्रीम कोर्ट ने हाल ही में उस रिपोर्ट पर चिंता जताई थी जिसमें कहा गया था कि भारत में हर 8 मिनट में एक बच्चा लापता हो जाता है। कोर्ट ने केंद्र सरकार से गोद लेने की प्रक्रिया को सरल बनाने के साथ लापता बच्चों के मामलों को संभालने के लिए एक नोडल अधिकारी नियुक्त करने का निर्देश दिया था। जस्टिस बीवी नागरत्ना और आर महादेवन की पीठ ने कहा कि यह गंभीर मुद्दा है। देश में गोद लेने की प्रक्रिया जटिल है जो बच्चों की गुमशुदगी का प्रमुख कारण है। कोर्ट ने गृह मंत्रालय को लापता बच्चों को ट्रेस करने और ऐसे मामलों की जांच के लिए समर्पित ऑनलाइन पोर्टल बनाने को भी कहा था।

देश में हुई चर्चित घटनाएं

- निठारी कांड सबसे भयावह घटनाओं में से एक था, जिसमें नोएडा के निठारी इलाके में नाले से 17 बच्चों के कंकाल मिले थे।
- पश्चिम बंगाल के नादिया जिले में 2017 में 291 बच्चों के लापता होने की रिपोर्ट दर्ज की गई थी, जो 2018 में बढ़कर 474 हो गई थी।
- भोपाल में एक महिला ने ढाई वर्ष और तीन महीने की दो बच्चियों को बेचने के लिए अगवा किया था।

जलवायु चुनौतियों से निपटने के लिए बने न्यायसंगत वैश्विक परिवर्ती तंत्र

भारत ने कॉप 30 में की अमीर और गरीब देशों की क्षमतानुसार भूमिका की पैरवी

- अमीर देशों की ओर से लगाए जा रहे प्रतिबंधों की आलोचना की

बेलेम, एजेंसी

कॉप 30 सम्मेलन के विशेष सत्र को संबोधित करते पर्यावरण मंत्री भूपेंद्र यादव।

वार्षिक जलवायु शिखर सम्मेलन कॉप 30 के समापन से पहले भारत ने समानता और सीबीडीआर-आरसी पर आधारित एक न्यायसंगत परिवर्ती तंत्र पर जोर दिया और साथ ही जलवायु संबंधी कदमों के परिप्रेक्ष्य में अमीर देशों की ओर से लगाए गए एकतरफा व्यापार प्रतिबंधों की कठोर आलोचना की।

केंद्रीय पर्यावरण, वन और जलवायु परिवर्तन मंत्री भूपेंद्र यादव ने कहा, एकतरफा कार्रवाई विशेष रूप से व्यापार-प्रतिबंध जलवायु उपाय, समानता और न्याय के सिद्धांतों को कमजोर करते हैं तथा एक निष्पक्ष और न्यायसंगत परिवर्तन को बाधित करने वाले कदम के रूप में कार्य करते हैं। यादव ने कहा कि भारत इस तंत्र की स्थापना के साथ बेलेम में एक महत्वाकांक्षी परिणाम की आशा करता है ताकि संधि और पेरिस समझौते को क्रियान्वित करने में एक महत्वपूर्ण कमी को दूर किया जा सके।

उन्होंने कहा, हमें अब एक सच्चे न्यायसंगत परिवर्तन को आगे बढ़ाने के लिए समता और साझा लेकिन विभेदित उत्तरदायित्वों और संबंधित क्षमताओं (सीबीडीआर-आरसी) को क्रियान्वित करना होगा। पर्यावरण मंत्री बृहस्पतिवार को यूएई न्यायसंगत परिवर्तन कार्य कार्यक्रम (जेटीडब्ल्यूपी) के तहत 'न्यायसंगत परिवर्तन' विषय पर तीसरे वार्षिक उच्चस्तरीय मंत्रिस्तरीय गोलमेज सम्मेलन को संबोधित कर रहे थे। भारत और 190 से अधिक देशों के वार्ताकार जीवाश्म ईंधन को चरणबद्ध तरीके से समाप्त करने तथा नवीकरणीय ऊर्जा को बढ़ाने पर चर्चा कर रहे हैं। साथ ही अमीर और गरीब देशों की अलग-अलग क्षमताओं के आधार पर न्यायोचित परिवर्तन सुनिश्चित करने पर भी विचार कर रहे हैं।

यादव ने जेटीडब्ल्यूपी के ठोस परिणामों के बारे में कहा कि भारत अन्य विकासशील देशों के साथ मिलकर न्यायसंगत परिवर्तन तंत्र के निर्माण का दृढ़ता से समर्थन करता है। मंत्री ने कहा कि मौजूदा अंतराल को पाटने तथा व्यावहारिक समाधान निकालने के लिए ऐसी व्यवस्था अत्यंत महत्वपूर्ण है। उन्होंने कहा, ग्लोबल साउथ के लिए, राष्ट्रीय परिस्थितियों के अनुरूप वित्त, प्रौद्योगिकी और क्षमता निर्माण तक किफायती और पर्याप्त पहुंच सुनिश्चित करना महत्वपूर्ण है ताकि यह सुनिश्चित किया जा सके कि कोई भी पीछे न छूटे।

दुनिया को मिलकर जलवायु संबंधी वित्त को बढ़ाने की जरूरत

बेलेम। पर्यावरण मंत्री भूपेंद्र यादव ने कहा कि भारत जलवायु कार्रवाई के हिस्से के तौर पर घरेलू अनुकूलन के लिए प्रतिबद्ध है, लेकिन वैश्विक खाई बढ़ने के चलते जलवायु अनुकूलन संबंधी वित्त को बढ़ाने की जरूरत है। यादव ने यह भी कहा कि जलवायु संबंधी वार्षिक शिखर सम्मेलन 'सीओपी 30' को एक साफ राजनीतिक संदेश देना चाहिए कि अनुकूलन कोई वैकल्पिक उपाय नहीं, बल्कि एक जरूरी निवेश है। उन्होंने जारी 'यूएन सीओपी 30' शिखर सम्मेलन में बृहस्पतिवार को अनुकूलन पर 'बाकू उच्चस्तरीय संवाद' में अपने संबोधन के दौरान कहा, वर्ष 2025 की अनुकूलन अंतराल रिपोर्ट का अनुमान है कि विकासशील देशों को 2035 तक सालाना 310-365 अरब अमेरिकी डॉलर की जरूरत होगी, जबकि अभी केवल 26 अरब अमेरिकी डॉलर मिल रहे हैं। यादव ने चिंता जताई कि अगर मौजूदा रुझान जारी रहा तो सार्वजनिक अनुकूलन वित्त को 2019 के स्तर से दोगुना करके 2025 तक लगभग 40 अरब अमेरिकी डॉलर करने का 'ग्लासगो जलवायु समझौते' का लक्ष्य शायद पूरा नहीं हो पाएगा।

यूक्रेन में अपार्टमेंट पर गिरा रूसी ग्लाइड बम, पांच की मौत

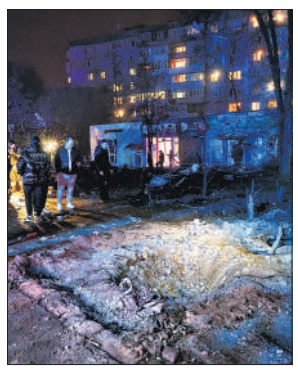

कीव। यूक्रेन के जापोरिज्जिया शहर के एक रिहाइशी इलाके में रूसी ग्लाइड बम हमले में पांच लोगों की मौत हो गई जबकि एक किशोरी समेत दस लोग घायल हुए हैं।

अधिकारियों के मुताबिक रूस द्वारा यूक्रेन पर किए गए हमले के बाद चार साल से जारी युद्ध को खत्म करने की अमेरिकी योजना के बारे में जानकारी सामने आने के बाद, बीती रात यह हमला हुआ। यूक्रेन के अधिकारी युद्ध खत्म करने के प्रस्तावों का अध्ययन कर रहे हैं। राष्ट्रपति वोलोदिमीर जेलेंस्की ने कहा कि वह आगामी दिनों में अमेरिका के राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप से मुलाकात कर सकते हैं। स्थानीय सैन्य प्रशासन के प्रमुख इवान फेदोरोव के अनुसार जापोरिज्जिया में हुए शक्तिशाली ग्लाइड बम हमले में ऊंची-ऊंची रिहाइशी इमारतें क्षतिग्रस्त हो गईं। इसके अलावा स्थानीय मार्केट को भी नुकसान पहुंचा है।

ओली समर्थकों और जेन जी की अब काठमांडू में भिड़ंत

काठमांडू, एजेंसी

- घायल युवाओं का ओली के खिलाफ धरना, मौतों का जिम्मेदार बताया

नेपाल के जेन जी युवा और अपदस्थ प्रधानमंत्री केपी शर्मा ओली के नेतृत्व वाले सीपीएन-यूएमएल के समर्थकों की शुक्रवार को एक बार फिर राजधानी काठमांडू में भिड़ंत हो गई। कुछ ही दिन पहले ही उनके बीच झड़प के कारण बारा जिले में कर्फ्यू लगाना पड़ा था। हालांकि स्थिति सामान्य होने के बाद बारा में शुक्रवार को कर्फ्यू हटा लिया गया है।

जेन जी समूह के दर्जनों घायल युवकों ने शुक्रवार को काठमांडू के माइतीघर मंडला में पूर्व प्रधानमंत्री ओली के खिलाफ धरना दिया। वे आठ सितंबर को प्रदर्शनकारी छात्रों के खिलाफ की गई कार्रवाई के लिए ओली को जिम्मेदार ठहरा रहे हैं, जिसमें 76 लोग मारे गए थे। शुक्रवार का प्रदर्शन निकटवर्ती बानेश्वर-बबरमहल क्षेत्र में सीपीएन-यूएमएल की रैली के बाद हुआ, जहां पार्टी प्रमुख ओली ने यूएमएल नेताओं और कार्यकर्ताओं को सुरक्षा देने के लिए 'नेशनल वोलेंटियर्स फोर्स' के गठन की घोषणा की।

यूएमएल कार्यकर्ताओं और जेन जी युवाओं, दोनों के कार्यक्रम लगभग एक ही स्थान पर और एक ही समय आयोजित किए गए थे तथा उनके बीच किसी भी टकराव को टालने के लिए बड़ी संख्या में दंगा रोधी पुलिसकर्मी तैनात किये गए थे। एक दिन पहले, जेन जी के युवाओं और ओली की पार्टी के सदस्यों के बीच झड़प में 10 लोग घायल हो गए, जिसके बाद तनाव फैल गया था। इसके बाद अधिकारियों को भारत की सीमा से लगे नेपाल के बारा जिले में स्थिति को नियंत्रित करने के लिए कर्फ्यू लगाना पड़ा था। हालांकि, शुक्रवार को कर्फ्यू हटा लेने के बाद बारा ज़िले में जनजीवन पटरी पर लौट आया।

चुनावों से पहले सेना की तैनाती की सिफारिश

काठमांडू। नेपाल की कार्यवाहक प्रधानमंत्री सुशीला कार्की की अध्यक्षता वाली राष्ट्रीय सुरक्षा परिषद ने राष्ट्रीय सुरक्षा को मजबूत करने और आगामी पांच मार्च, 2026 को होने वाले संसदीय चुनावों को स्वतंत्र, निष्पक्ष और भयमुक्त माहौल में संपन्न कराने के लिए राष्ट्रीय मंत्रिमंडल में नेपाली सेना के जवानों को तैनात करने की सिफारिश की है। नेपाली मीडिया की रिपोर्ट के अनुसार, प्रतिनिधि सभा के चुनावों से पहले गुरुवार को परिषद की बैठक में यह निर्णय लिया गया। एक बयान में, परिषद ने कहा कि सुरक्षा बलों की तैनाती की सिफारिश संविधान के अनुच्छेद 266(1) के अंतर्गत की गई है, जो निकाय को नेपाल सेना की लामबंदी एवं नियंत्रण का प्रस्ताव देने और राष्ट्रीय सुरक्षा और रक्षा मामलों पर सलाह देने के लिए अधिकृत करता है। बैठक में कई अंतर्निहित संभावित सुरक्षा चुनौतियों की भी समीक्षा की गई।

बांग्लादेश: 5.7 तीव्रता का भूकंप, छह की मौत

ढाका, एजेंसी

- तमाम इमारतें हुईं जमींदोज, कई स्थानों पर लगी आग

अस्पताल में भर्ती कराए गए कई घायल।

बांग्लादेश में शुक्रवार को आए 5.7 तीव्रता के भूकंप के कारण कम से कम छह लोगों की मौत हो गई और कई अन्य घायल हो गए। अधिकारियों के मुताबिक, भूकंप के झटके राजधानी ढाका और कुछ अन्य हिस्सों में महसूस किए गए तथा इस दौरान कई इमारतों को नुकसान पहुंचा और कुछ जगहों पर आग लग गई, जिससे लोगों में दहशत फैल गई।

अधिकारियों ने बताया कि ढाका में तीन लोगों, जबकि नारायणगंज में एक व्यक्ति की मौत की सूचना है। वहीं, दो अन्य मौतें नरसिंगडी में हुईं, जहां भूकंप का केंद्र सतह से लगभग 10 किलोमीटर नीचे स्थित था। स्थानीय मीडिया ने भूकंप के कारण देशभर में कम से कम 50 लोगों के घायल होने की खबर दी है। बांग्लादेश के मौसम विज्ञान विभाग ने बताया कि भूकंप स्थानीय समयानुसार पूर्वाह्न 10 बजकर 38 मिनट पर आया और इसका केंद्र ढाका के उत्तर-पूर्वी बाहरी इलाके में स्थित नरसिंगडी में 10 किलोमीटर की गहराई में स्थित था। यह स्थान ढाका के अगरगांव क्षेत्र में भूकंपीय केंद्र से लगभग 13 किलोमीटर पूर्व में है।

ढाका के पुलिस उपायुक्त मलिक अहसान उद्दीन सामी ने अग्निशमन सेवा के हवाले से बताया कि पुराने ढाका के अरमानीटोला इलाके में पांच मंजिला इमारत की रेलिंग, बांस की मचान और मलबा गिरने से कम से कम तीन लोगों की मौत हो गई। उन्होंने बताया कि भीड़भाड़ वाले इलाके में एक राहगीर गंभीर रूप से घायल हो गया। सामी ने पुष्टि की कि मृतकों में एक मेडिकल छात्र शामिल है, जो मांस खरीदने के लिए अपनी मां के साथ वहां गया था।

व्हाइट हाउस में ट्रंप से मिलेंगे ममदानी

वाशिंगटन। न्यूयॉर्क के निर्वाचित महापौर जोहरान ममदानी वाशिंगटन यात्रा के दौरान अमेरिकी राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रंप से मुलाकात करेंगे।

ममदानी को चार नवंबर को न्यूयॉर्क शहर का महापौर निर्वाचित किया गया था। व्हाइट हाउस की प्रेस सचिव कैरोलिन लेविट ने कहा, यह बहुत कुछ बताता है, कल व्हाइट हाउस में एक कम्युनिस्ट नेता आ रहे हैं, क्योंकि डेमोक्रेट पार्टी ने उसे देश के सबसे बड़े शहर के महापौर के रूप में चुना है। उन्होंने कहा कि यह बहुत महत्वपूर्ण है और यह भी दर्शाता है कि राष्ट्रपति ट्रंप किसी से भी मिलने और किसी से भी बात करने के लिए तैयार हैं और अमेरिका के हित में काम करने की कोशिश करते हैं।

विवादों में घिरी रहीं मेक्सिको की फातिमा बॉश के सिर सजा मिस यूनिवर्स का ताज

बैंकॉक। मेक्सिको की 25 वर्षीय फातिमा बॉश फर्नांडीज ने शुक्रवार को मिस यूनिवर्स 2025 का ताज अपने नाम किया। यह जीत उनके लिए नाटकीय रही, जो बैंकॉक में आयोजित इस लोकप्रिय सौंदर्य प्रतियोगिता के उतारचढ़ाव वाले 74वें संस्करण के दौरान एक मेजबान द्वारा सार्वजनिक बदसलूकी का उनके डटकर सामना करने के कारण चर्चा में रहीं।

इस प्रतियोगिता की उप विजेता थाईलैंड की 29 वर्षीय प्रवीनर सिंह रहीं जबकि तीसरा स्थान वेनेजुएला की 25 वर्षीय स्टेफनी एड्रिआना अबासाली नासिर ने हासिल किया। इस वर्ष की प्रतियोगिता का माहौल एक विवाद के कारण बिगड़ गया था, जिसकी शुरुआत मेक्सिको की प्रतिभागी बॉश को फटकारने से हुई। इस घटना ने बहिष्कार, नारीवादी एकजुटता और स्थानीय आयोजक की भावुक माफी जैसे नाटकीय मोड़ लिए। चार नवंबर को प्रतियोगिता के एक सत्र के दौरान थाईलैंड के राष्ट्रीय निदेशक नवात इट्सारागिसिल ने बॉश पर स्थानीय प्रचार गतिविधियों में भागीदारी के निर्देशों का पालन न करने का आरोप लगाया और उन्हें फटकार लगाई। जब बॉश ने अपना पक्ष रखने की कोशिश की तो उन्होंने सुरक्षा कर्मियों को बुला लिया।

बॉश कमरे से बाहर चली गईं और उनके समर्थन में कई अन्य प्रतिभागी भी से बाहर निकल गईं, जिनमें मिस यूनिवर्स 2024 डेनमार्क की विक्टोरिया कायर थेलविग भी शामिल थीं। बॉश ने कहा, आपके निदेशक का व्यवहार सम्मानजनक नहीं था, उन्होंने मुझे मूर्ख कहा। अगर कोई चीज आपकी गरिमा छीनती है, तो आपको उससे हट जाना चाहिए। 'मिस यूनिवर्स ऑर्गनाइजेशन' के अध्यक्ष और मेक्सिको के व्यवसायी राउल रोचा कांतू ने एक बयान में नवात के व्यवहार को सार्वजनिक उत्पीड़न और गंभीर दुर्व्यवहार बताया था।

थाईलैंड की प्रवीनर पहली, वेनेजुएला की स्टेफनी दूसरी उप विजेता

मिस यूनिवर्स चुनी गईं फातिमा बॉश।

आज का भविष्यफल

-पं.डॉ. ज्ञानेन्द्र शर्मा

आज की ग्रह स्थिति : 22 नवंबर, शनिवार 2025 संवत-2082, शक संवत 1947 मास- मार्गशीर्ष, पक्ष-शुक्ल पक्ष, द्वितीया 15.11 तक तत्पश्चात तृतीया।

आज का पंचांग

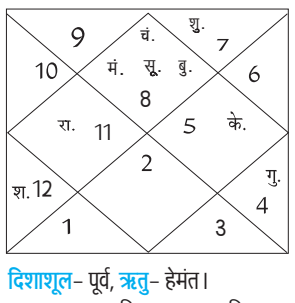

दिशाशूल- पूर्व, **ऋतु**- हेमंत।
चन्द्रबल-वृषभ, मिथुन, कन्या, वृश्चिक, मकर, कुम्भ।
ताराबल- अश्विनी, भरणी, रोहिणी, आर्द्रा, पुष्य, आश्लेषा, मघा, पूर्वा फाल्गुनी, हस्त, स्वाति, अनुराधा, ज्येष्ठा, मूल, पूर्वाषाढ़ा, श्रवण, शतभिषा, उत्तराभाद्रपद, रेवती।
नक्षत्र-ज्येष्ठा 16.47 तक तत्पश्चात मूल।

मेष - आज अपने विचारों को दूसरों पर अध्यारोपित न करें। क्रोध के कारण आपके काम बिगड़ सकते हैं। आय के साधनों में कमी आ सकती है। आपके मन में अज्ञात भय उत्पन्न होगा। थायराइड से पीड़ित महिलाओं को स्वास्थ्य कष्ट हो सकता है।

वृष - आज पारिवारिक जीवन आनंद और उल्लास से भरपूर रहेगा। बिना मांगे किसी को सलाह न दें। प्राकृतिक स्थलों की यात्रा कर सकते हैं। व्यापार में गति तीव्र होने के योग बन रहे हैं। प्रेमी जन के माध्यम से आपको उपहार मिल सकता है।

मिथुन - आज कार्यक्षेत्र में आपका वर्चस्व बढ़ेगा। विरोधी आपके विरुद्ध षड्यंत्र कर सकते हैं। सरकारी सेवा से जुड़े लोगों के लिए दिन थोड़ा उबाऊ है। पहले की गई मेहनत का सकारात्मक परिणाम मिलेगा। किसी से अधिक अपेक्षा न करें। विपरीत परिस्थितियों के बीच अपनी योग्यता को सिद्ध कर सकेंगे।

कर्क - आज दांपत्य संबंधों में मधुरता बढ़ेगी। प्रेम संबंधों के बीच आयी गलतफहमियों को दूर करने के लिए दिन अच्छा है। व्यवसाय में उत्तम लाभ होगा। सभी कार्यों को योजनाबद्ध तरीके से करें। विद्यार्थी पढ़ाई में शानदार प्रदर्शन करेंगे।

सिंह - आज कार्यक्षेत्र के माहौल में कुछ तनाव हो सकता है। परिजनों के साथ आप घूमने जा सकते हैं। आपके अच्छे कार्यों की सराहना होने के बजाय लोग उनकी आलोचना कर सकते हैं। जल्दबाजी में किए गए कार्यों से नुकसान हो सकता है। समय का सदुपयोग करें।

कन्या - आज पारिवारिक रिश्तों में संवादहीनता के कारण समस्या हो सकती है। मित्रों के साथ कहीं घूमने-फिरने का प्लान बन सकता है। भाई-बहनों की चिंता रहेगी। रक्तचाप के रोगियों को ठण्ड को लेकर विशेष सावधानी रखनी चाहिए। वरिष्ठ लोगों की अवहेलना न करें।

तुला - आज व्यापार में धन लाभ होगा। लेकिन आपको थोड़ी सावधानी भी बरतनी होगी। प्रबंधन से जुड़े लोगों के ऊपर काम का दबाव रहेगा। प्रेम संबंधों में तनाव हो सकता है। शाम के समय किसी समारोह के लिए निमंत्रण मिल सकता है।

वृश्चिक - आज आप रुके हुए कार्यों को निपटाने में व्यस्त रहेंगे। आपका मनोबल बढ़ा हुआ रहेगा। जीवनसाथी आपका मानसिक और आर्थिक रूप से काफी सहयोग करेगा। काम के प्रति सकारात्मक रवैया रखें। मित्रों के साथ आपके संबंध और मधुर होंगे।

धनु - आज आपके काम की लोग उपेक्षा कर सकते हैं। व्यर्थ के कार्यों में आपका धन बर्बाद होगा। आज आवश्यक न हो तो यात्रा न करें। आय की अपेक्षा आपके खर्चों में अधिकता रहेगी। सहकर्मियों से अपनी व्यक्तिगत बातें शेयर करना उचित नहीं है।

मकर - आज कार्यक्षेत्र की तनावयुक्त परिस्थितियों को हल करने में सफल होंगे। आपकी नेतृत्व क्षमता की प्रशंसा होगी। नया काम शुरू करना हर दृष्टिकोण से उत्तम है। दांपत्य जीवन सुखमय रहेगा। कला जगत से जुड़े लोगों को बड़े प्रपोजल मिलने के योग बन रहे हैं।

कुंभ - आज अपने कार्य के प्रति निष्ठावान रहें। प्रेमी जन की भावनाओं का अनादर न करें। मन में वैराग्य के भाव उत्पन्न हो सकते हैं। विद्यार्थियों का मन पढ़ाई से उचट सकता है। कार्यक्षेत्र में प्रतिस्पर्धा का वातावरण रहेगा। जिन लोगों का स्वास्थ्य खराब था, उनके स्वास्थ्य में सुधार आयेगा।

मीन - आज आपकी दिनचर्या में सुधार आयेगा। धर्म-कर्म के प्रति आपका रूझान बढ़ेगा। महत्वपूर्ण लोगों के साथ आपका समय बीतेगा। दांपत्य संबंधों को गहरा और मजबूत करने के लिए रोमान्टिक डेट पर जा सकते हैं। बच्चों का मार्गदर्शन लगातार करते रहें।

सुडोकू-168

सुडोकू एक तरह का तर्क वाला खेल है, जो एक वर्ग पहेली की तरह होता है। जब आप इस खेल को खेलना सीख जाते हैं तो यह बहुत ही सरलता से खेला जा सकता है। सुडोकू खेल में बॉक्स में 1 नंबर से 9 नंबर तक आने वाले अंक दिए हैं। इसमें कुछ बॉक्स खाली हैं, जिन्हें आपको भरना है। कोई भी अंक दोबारा नहीं आना चाहिए। एक सीधी लाइन और एक खड़ी लाइन तथा बॉक्स में नंबर रिपीट नहीं होना चाहिए।

								4
			1					
		3						
				7				
							3	
	1			9				
						9		
					6			
		5						

सुडोकू - 167 का हल

1	2	3	5	9	7	6	4	8
8	6	7	3	1	4	2	9	5
9	4	5	8	6	2	3	1	7
3	7	4	1	2	5	8	6	9
2	8	9	7	4	6	5	3	1
5	1	6	9	8	3	7	2	4
4	5	8	6	3	9	1	7	2
6	9	1	2	7	8	4	5	3
7	3	2	4	5	1	9	8	6

भारतीय महिला हॉकी टीम की पूर्व कप्तान रानी मैदान पर और मैदान के बाहर, दोनों जगह भारतीय हॉकी की सबसे प्रेरणा देने वाली हस्तियों में से एक रही हैं। एक शानदार युवा टैलेंट से हमारे खेल के सबसे बेहतरीन लीडर्स में से एक बनने का उनका सफर सच में शानदार है।

-डॉ. दिलीप टिर्की

स्टेडियम

बरेली, शनिवार 22 नवंबर 2025

अमृत विचार

www.amritvichar.com

हाईलाइट

सैयद मुश्ताक अली ट्रॉफी : सूर्यकुमार मुंबई की टीम में शामिल

मुंबई। भारत के टी-20 कप्तान सूर्यकुमार यादव को मुंबई की सैयद मुश्ताक अली ट्रॉफी टीम में शामिल

किया गया है। सैयद मुश्ताक अली ट्रॉफी 26 नवंबर से शुरू हो रही है। ऑलराउंडर शार्दुल ठाकुर 17 सदस्यीय टीम की अगुआई करेंगे। स्क्वॉड में शिवम दुबे, सरफराज ख़ान, अजिंक्य रहाणे और आयुष म्हात्रे भी शामिल हैं। भारत की दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ नौ दिसंबर से शुरू होने वाली टी-20 सीरीज से पहले सूर्यकुमार की मुंबई टीम में वापसी हुई है। मुंबई इंडियंस के लिए इस आईपीएल में 717 रन बनाने और 167.91 की स्ट्राइक रेट के बावजूद वह अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट में रन नहीं बना पाए हैं।

बावुमा वनडे व मार्करम संभालेंगे टी-20 टीम की कमान

जोहान्सबर्ग। तेम्बा बावुमा को भारत के खिलाफ तीन मैचों की आगामी एकदिवसीय सीरीज के लिए शुक्रवार को दक्षिण अफ्रीका का कप्तान नियुक्त किया गया, लेकिन प्रमुख तेज गेंदबाज कैगिसो रबाडा मौजूदा टेस्ट सीरीज से पहले अभ्यास सत्र के दौरान पसली में लगी चोट से उबरने में नाकाम रहने के बाद स्वदेश लौटेंगे। शीर्ष क्रम के बल्लेबाज एडेन मार्करम की टी-20 अंतरराष्ट्रीय टीम में वापसी हो रही है। **एकदिवसीय टीम :** तेम्बा बावुमा (कप्तान), ओटिनिल बार्टमैन, मैथ्यू ब्रीट्जके, डेवाल्ड ब्रेविस, नांद्रे बर्गर, क्विंटन डिकॉक, टोनी डी जोर्जी, रुबिन हरमन, मार्को यानसन, केशव महाराज, एडेन मार्करम, लुंगी एनगिडी, रियान रिकेलटन, प्रेनेलन सुब्रायन। **टी-20 टीम :** एडेन मार्क्रम (कप्तान), ओटिनिल बार्टमैन, कॉर्बिन बॉश, डेवाल्ड ब्रेविस, क्विंटन डिकॉक, टोनी डी जोर्जी, डोनोवन फेरेरिया, रीजा हेंड्रिक्स, मार्को यानसन, जॉर्ज लिंडे, केशव महाराज, क्वेना मफाका, डेविड मिलर, लुंगी एनगिडी, एनरिक नॉर्किया, ट्रिस्टन स्टब्स।

युवराज ने जीता इंडियनऑयल सर्वो मास्टर्स खिताब

डिगबोई (असम)। युवराज संधू ने लगातार दो प्लेऑफ हार के बाद शानदार वापसी की और शुक्रवार को डिगबोई गोल्फ लिंक्स में खेले गए मशहूर इंडियनऑयल सर्वो मास्टर्स, जो 1 करोड़ रुपये का इवेंट है, में सात-स्ट्रोक की जबरदस्त खिताबी जीत हासिल की। युवराज (65-69-66-69), जिन्होंने तीसरे राउंड के बाद छह-स्ट्रोक की शानदार बढ़त हासिल की थी, ने इंडियनऑयल सर्वो मास्टर्स के ऐतिहासिक 25वें एडिशन में चौथे राउंड में तीन-अंडर 69 का शानदार स्कोर बनाया और इस हफ़्ते का कुल स्कोर 19-अंडर 269 कर लिया। नतीजतन, चंडीगढ़ के 28 साल के इस खिलाड़ी ने इस सीजन की अपनी पांचवीं जीत हासिल की और पीजीटीआई ऑर्डर ऑफ मेरिट में अपनी बढ़त और बढ़ा ली। लगातार चैंपियन रहे युवराज ने 15 लाख रुपये का विनिंग चेक हासिल किया, जिससे उनकी सीजन की कमाई 1,21,67,100 रुपये हो गई।

पांच विकेट लेने के बाद जश्न मनाते इंग्लैंड के कप्तान बेन स्टोक्स (बीच में)। एजेंसी

एशेज टेस्ट : स्टार्क के कमाल के बाद स्टोक्स का धमाल

पर्थ, एजेंसी

- पहले दिन गिरे 19 विकेट, इंग्लैंड की मजबूत वापसी

संक्षिप्त स्कोर बोर्ड

इंग्लैंड (पहली पारी)	172/10
ऑस्ट्रेलिया (पहली पारी)	123/9

एशेज टेस्ट के पहले दिन शुक्रवार को यहां तेज गेंदबाजों के दबदबे के बीच ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ पहली पारी में महज 172 रन पर सिमटने के बाद कप्तान बेन स्टोक्स के पांच विकेट से इंग्लैंड ने मजबूत वापसी की। पांच मैचों की शृंखला का पहला दिन उम्मीदों पर खरा उतरा, जहां पर्थ स्टेडियम में 51,000 से अधिक दर्शकों के सामने 72 ओवर के खेल में 19 विकेट गिरे।

दिन का खेल खत्म होते समय ऑस्ट्रेलिया का स्कोर नौ विकेट पर 123 रन था और यह टीम पहली पारी में महज एक विकेट शेष रहते 49 रन पीछे है।

दिन का शुरुआती सत्र पूरी तरह से मिचेल स्टार्क के नाम रहा। उन्होंने नियमित कप्तान पैट कमिंस और दिग्गज जोश हेजलवुड की गैरमौजूदगी में अपने करियर का सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन करते हुए 58 रन देकर सात विकेट लिए, जिससे ऑस्ट्रेलिया ने दूसरे सत्र तक इंग्लैंड को ऑल आउट कर दिया। जोफ़ा आर्चर ने ऑस्ट्रेलिया की पहली पारी के पहले ही ओवर में विकेट लेकर दिखा दिया कि पांच तेज गेंदबाजों की मौजूदगी वाली इंग्लैंड की टीम भी इस मामले में कमजोर नहीं है। मैच में अभी चार दिन शेष और दोनों टीमों की पहली पारी लगभग खत्म हो चुकी है। इंग्लैंड ने नियमित अंतराल पर विकेट गंवाने के बावजूद आक्रामक बल्लेबाजी जारी रखते हुए 5.23 रन प्रति ओवर की दर से रन बनाए। ऑस्ट्रेलिया के लिए रक्षात्मक रुख अपनाना भारी पड़ गया क्योंकि टीम उस तेजी से रन नहीं बना सकी लेकिन नियमित अंतराल पर विकेट गंवाते रही। दोनों टीमों के बल्लेबाजों को तेजी से उठती शॉर्ट-पिच गेंदों का सामना करना पड़ा ऑस्ट्रेलिया की पारी के 24वें ओवर में कैमरून ग्रीन को मार्क वुड की 147 किलोमीटर प्रति घंटे की रफ्तार वाली बाउंसर ने चोटिल किया जिससे उनका संतुलन बिगड़ गया और वे स्टंप पर गिरते-गिरते बचे।

इंग्लैंड का आक्रमण उस तरह की खतरनाक गेंदबाजी कर रहा था जैसा ऑस्ट्रेलिया के तेज गेंदबाज आमतौर पर मेहमान टीमों के खिलाफ करते हैं। इंग्लैंड ने पुछल्ले बल्लेबाजों ने पारी के आखिर में तेजी से विकेट गंवाये जिसका खामियाजा ऑस्ट्रेलिया के सलामी बल्लेबाज उस्मान ख्वाजा को भी उठाना पड़ा। ख्वाजा उस समय ड्रेसिंग रूम में मौजूद थे और चूंकि वह आठ मिनट से अधिक समय तक मैदान से बाहर रहे थे ऐसे में उन्हें ऑस्ट्रेलियाई पारी की शुरुआत करने की अनुमति नहीं दी गई। उनकी जगह लेने के लिए मार्नस लाबुशेन को ऊपरी क्रम में आना पड़ा। ख्वाजा को तीसरे नंबर पर भी बल्लेबाजी के नहीं आ पाये क्योंकि पदार्पण कर रहे जेक वेदरोल्ड को आर्चर ने पारी की दूसरी गेंद पर ही पगबाधा कर दिया।

स्पिन पहेली को सुलझाकर शृंखला में बराबरी करने उतरेगी टीम इंडिया

दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ दूसरा टेस्ट मैच आज से, गिल की अनुपस्थिति में पंत करेंगे कप्तानी

गुवाहाटी, एजेंसी

पहले टेस्ट मैच में स्पिनरों के सामने नतमस्तक होने वाली भारतीय टीम दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ शनिवार से यहां शुरू होने वाले दूसरे और अंतिम टेस्ट क्रिकेट मैच में स्पिन पहेली को सुलझाकर शृंखला बराबर करने के उद्देश्य से मैदान पर उतरेगी। शुभमन गिल की अनुपस्थिति में ऋषभ पंत के लिए नेतृत्व की चुनौती बेहद चुनौतीपूर्ण होगी। मुख्य कोच गौतम गंभीर के लिए तो और भी कठिन परीक्षा आने वाली है, जिनके अक्सर उलझाने वाले फैसलों ने ड्रेसिंग रूम और थिंक टैंक को स्पष्टता के लिए जूझने पर मजबूर कर दिया है।

पिछले तीन दशकों से घरेलू मैदान पर खेलते हुए भारतीय टीमों की अजेय रहने की जो चमक रही है, वह वर्तमान टीम के सामने गायब हो गई है। यह पिछले कुछ वर्षों में पहला अवसर होगा जबकि भारतीय टीम घरेलू मैदान पर जीत के प्रबल दावेदार के रूप में शुरुआत नहीं करेगी। उसकी टीम कमजोर नजर आ रही है और क्रिकेट विशेषज्ञों के अनुसार यह अच्छी स्थिति नहीं है। अगर न्यूजीलैंड की स्पिन जोड़ी एजाज पटेल और मिशेल सैंटनर ने 2024 में भारत के घरेलू धरती पर अजेय रहने की धारणा को तार-तार कर दिया था तो साइमन हार्मर और उनके अन्य साथी युवा भारतीय टीम को और भी कमज़ोर बना रहे हैं।

स्पिनरों से निपटने की उचित तकनीक का अभाव स्पष्ट तौर पर नजर आ रहा है। इसका भारतीय खिलाड़ियों की मानसिकता पर काफी प्रभाव पड़ा है जिसने स्थिति को और बदतर बना दिया है। इन मुश्किल हालात में गिल की अनुपस्थिति में पंत कप्तानी संभालेंगे। उन्हें अच्छी तरह पता होगा कि लाल मिट्टी वाली बारसापारा की पिच पर उनकी बल्लेबाजी भी उनके फैसलों की तरह ही महत्वपूर्ण होगी। यह शुरू से ही स्पष्ट था कि गर्दन में अकड़न के कारण गिल दूसरे टेस्ट मैच में खेलने की दौड़ में नहीं थे, लेकिन भारतीय टीम प्रबंधन और बीसीसीआई ने आखिर तक संशय बनाए रखा। विश्वसनीय सूत्रों के अनुसार, 26 वर्षीय गिल आराम करने और स्वास्थ्य लाभ के लिए शहर से बाहर चले गए हैं। गिल की जगह लेने के लिए साई सुदर्शन सबसे संभावित उम्मीदवार लग रहे हैं, हालांकि वह तीसरे नंबर पर बल्लेबाजी करेंगे या पिछले मैच की तरह ही वाशिंगटन सुंदर को इस नंबर पर उतारा जाएगा, यह देखना अभी बाकी है।

एकमात्र मैच में कप्तानी करना सर्वश्रेष्ठ स्थिति नहीं : ऋषभ पंत

गुवाहाटी : आक्रामक विकेटकीपर बल्लेबाज ऋषभ पंत ने शुक्रवार को स्वीकार किया कि एकमात्र टेस्ट में कप्तानी करना सर्वश्रेष्ठ स्थिति नहीं है लेकिन वह दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ शनिवार से यहां शुरू होने वाले दूसरे टेस्ट मैच की कड़ी चुनौतियों के के बारे में ज्यादा नहीं सोच रहे हैं। इस मैच से पहले नियमित कप्तान शुभमन गिल को चोटिल होने के कारण टीम से रिलीज कर दिया गया था, जिसके बाद पंत को कप्तानी सौंपी गई। वह भारत के 38वें टेस्ट कप्तान होंगे। पंत ने मैच से पहले प्रेस कॉन्फ्रेंस में कहा एक कप्तान के लिए एकमात्र मैच सबसे अच्छा विकल्प नहीं होता, लेकिन मैं बीसीसीआई (भारतीय क्रिकेट बोर्ड) का मुझे यह सम्मान देने के लिए आभार व्यक्त करता हूं। जब भी आप अपने देश का नेतृत्व कर रहे होते हैं, तो यह सबसे गर्व का क्षण होता है। पंत से जब उनकी कप्तानी शैली के बारे में पूछा गया तो उन्होंने कहा कि यह नए और पुराने का मिश्रण होगी।

गिल को टीम से रिलीज किया गया, जाएंगे मुंबई

भारतीय कप्तान शुभमन गिल को दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ शनिवार से यहां शुरू हो रहे दूसरे टेस्ट मैच से पहले शुक्रवार को टेस्ट टीम से रिलीज कर दिया गया। गिल की अनुपस्थिति में ऋषभ पंत दूसरे टेस्ट में टीम की अगुवाई करेंगे। बीसीसीआई के सचिव देवजीत सैकिया ने कहा शुभमन गिल को चोट की जांच के लिए मुंबई जाना होगा।

अभ्यास सत्र के दौरान ऋषभ पंत।

समय
पूर्वाह्न 9:00 बजे से

टीम

भारत : ऋषभ पंत (कप्तान और विकेटकीपर), केएल राहुल, यशस्वी जयसवाल, बी साई सुदर्शन, ध्रुव जुरेल, रवींद्र जड़ेजा, वाशिंगटन सुंदर, नीतीश कुमार रेड्डी, कुलदीप यादव, अक्षर पटेल, जसप्रीत बुमराह, मोहम्मद सिराज, देवदत्त पडिक्कल, आकाश दीप।

दक्षिण अफ्रीका : तेम्बा बावुमा (कप्तान), कॉर्बिन बॉश, डेवाल्ड ब्रेविस, टोनी डी जोरजी, जुबैर हमजा, साइमन हार्मर, मार्को जानसन, केशव महाराज, एडेन मार्करम, वियान मुल्डर, सेनुरान मुथुसामी, लुंगी एनगिडी, रयान रिकेल्टन, ट्रिस्टन स्टब्स और काइल वेरिन।

सगाई की अंगूठी दिखाते हुए डांस करतीं स्मृति मंधाना, साथ में राधा यादव, अरुंधति रेड्डी, जेमिमा रोड्रिग्स और श्रेयंका पाटिल। एजेंसी

मंधाना ने संगीतकार मुच्छल के साथ सगाई की पुष्टि की

नई दिल्ली, एजेंसी

विश्व कप विजेता भारतीय महिला क्रिकेट टीम की स्टार खिलाड़ी स्मृति मंधाना ने संगीतकार पलाश मुच्छाल के साथ अपनी सगाई की घोषणा कर दी है जिसके बाद प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी सहित कई लोगों ने उन्हें बधाई और शुभकामनाएं दी।

इस आक्रामक बल्लेबाज का एक वीडियो सामने आया है जिसमें वह भारतीय टीम की अपनी साथी खिलाड़ियों राधा यादव, जेमिमा रोड्रिग्स, श्रेयांका पाटिल और अरुंधति रेड्डी के साथ बॉलीवुड की फिल्म लगे रहो मुन्ना भाई के गीत 'समझो हो ही गया' पर नृत्य कर रही हैं। इस दौरान वह मुस्कुराते हुए अपनी सगाई की अंगूठी को भी दिखा रही हैं। जेमिमा ने यह क्लिप इंस्टाग्राम पर साझा की है जिसे अभी तक 19 लाख से ज़्यादा लाइक्स और 12,000 से ज़्यादा कमेंट्स मिल चुके हैं।

मंधाना और मुच्छाल 23 नवंबर को शादी के बंधन में बंधेंगे। प्रधानमंत्री ने दम्पति को बधाई देते हुए कहा कि उन्हें उम्मीद है कि मंधाना की कवर ड्राइव की सुंदरता मुच्छाल की मधुर संगीतमय सिम्फनी के साथ एक अद्भुत साझेदारी बनाएगी। उन्होंने लिखा जीवन के हर मोड़ पर हाथ में हाथ डालकर चलते हुए, इस जोड़े को एक-दूसरे की मौजूदगी में शक्ति मिले और उनके दिल, दिमाग और आत्मा में सामंजस्य हो। उनके सपने आपस में गुंथें और साथ-साथ बढ़ें तथा उन्हें खुशी और गहरी समझ से भरे भविष्य की की तरफ ले जाएं।

मोदी ने कहा मैं कामना करता हूं कि स्मृति और पलाश विश्वास पर आधारित एक साझा जीवन का निर्माण करें, हमेशा एक-दूसरे के साथ खड़े रहें, प्यार के साथ जिम्मेदारियों को स्वीकार करें तथा एक दूसरे के मजबूत और कमजोर पक्षों के साथ आगे बढ़ें। उन्होंने कहा जब वे एक साथ एक नया, सुंदर जीवन शुरू करते हैं, तो स्मृति के कवर ड्राइव की सुंदरता पलाश की मधुर संगीतमय सिम्फनी से मिलकर एक अद्भुत साझेदारी बनाती है।

एशेज शृंखला देखकर ईर्ष्या हुई : तेम्बा बावुमा

गुवाहाटी। तेम्बा बावुमा को इंग्लैंड और ऑस्ट्रेलिया के बीच एशेज सीरीज के शुक्रवार सुबह पर्थ में शुरू हुए मैच को देखकर ईर्ष्या हुई और उन्होंने हैरानी जताई कि पारंपरिक प्रारूप में मौजूदा विश्व चैंपियन होने के बावजूद दक्षिण अफ्रीका को भारत के खिलाफ सिर्फ दो टेस्ट मैचों की श्रृंखला खेलने का मौका क्यों मिला। इस साल की शुरुआत में दक्षिण अफ्रीका को विश्व टेस्ट चैंपियनशिप का खिताब दिलाने वाले बावुमा ने कहा कि दो मैच की वर्तमान शृंखला टेस्ट क्रिकेट की दो मजबूत टीमों के साथ सही

न्याय नहीं करती। बावुमा ने दूसरे और अंतिम टेस्ट मैच की पूर्व संध्या पर पत्रकारों से कहा हम आज सुबह एशेज देखने के लिए उठे। हमने उसे थोड़ी ईर्ष्या के साथ देखा, क्योंकि हम जानते थे कि वे पांच टेस्ट मैच खेल रहे हैं। वे एक दूसरे के सामने कड़ी चुनौती पेश करेंगे। उन्होंने कहा कि वह इस बात से खुश नहीं हैं कि विश्व चैंपियन होने के बावजूद उन्हें भारत के खिलाफ केवल दो टेस्ट मैच की श्रृंखला खेलने के लिए मिल रही है। दक्षिण अफ्रीका के कप्तान ने कहा उम्मीद है कि निकट भविष्य में हमें भारत के खिलाफ चार टेस्ट मैच की सीरीज खेलने के लिए मिलेगी। भारत की टीम इंग्लैंड और ऑस्ट्रेलिया के खिलाफ चार या पांच टेस्ट मैच की श्रृंखला खेलती रही है लेकिन अन्य टीमों के खिलाफ वह अक्सर दो मैच की श्रृंखला ही खेलती है।

अभ्यास सत्र के दौरान जुबैर हमजा (बाएं) और टोनी डी जोरजी।

सुपर ओवर में भारत ए की उम्मीदें तोड़कर बंगलादेश ए फाइनल में

राइजिंग स्टार्स 2025

दोहा, एजेंसी

भारत ए को बल्ले और गेंद से निराशाजनक प्रदर्शन का खामियाजा भुगतना पड़ा और राइजिंग स्टार्स एशिया कप के सेमीफाइनल में शुक्रवार को बांग्लादेश ए ने उसे सुपर ओवर में हरा दिया। बांग्लादेश ए का सामना अब पाकिस्तान शाहीस और श्रीलंका ए के बीच होने वाले दूसरे सेमीफाइनल के विजेता से होगा। फाइनल रविवार को खेला जाएगा। बांग्लादेश ए ने 20 ओवर में छह विकेट पर 194 रन बनाए। जवाब में भारतीय टीम का स्कोर भी बराबर रहा जिससे मैच सुपर ओवर तक खिंच गया। भारत ए ने सुपर ओवर में कप्तान जितेश शर्मा, आशुतोष शर्मा और रमनदीप

मैच के दौरान भारत ए टीम के खिलाड़ी। एजेंसी

सिंह को उतारने का अजीब फैसला लिया जबकि वैभव सूर्यवंशी और प्रियांश आर्य फॉर्म में थे। जितेश और आशुतोष को तेज गेंदबाज रिपोन मंडल ने सुपर ओवर में खाता खोलने का मौका दिए बिना आउट कर दिया। बांग्लादेश ने पहली गेंद पर यासिर अली का विकेट गंवाया लेकिन लेग स्पिनर सुयश शर्मा ने अगली गेंद वाइड डाल दी जिससे बांग्लादेश को जीत मिली। इससे पहले भारत के लिये सूर्यवंशी ने 15 गेंद में 38 और आर्य ने 23 गेंद में 44 रन बनाए। भारत के 50 रन 19 गेंद में ही बन गए थे। सूर्यवंशी ने मंडल के पहले ओवर में 19 रन बनाये जिसमे दो छक्के और एक चौका शामिल था। इसके बाद आफ स्पिनर मेहराब हसन को लगातार दो छक्के जड़े।

गर्व की बात बोलीं- भारत सपने देखने वाले युवाओं से भरा है और यह हमारी जिम्मेदारी है कि हम पक्का करें कि उनके सपने पूरे हों

पीटी उषा फिक्की लाइफटाइम अचीवमेंट अवॉर्ड से सम्मानित

नई दिल्ली, एजेंसी

पूर्व स्प्रिंट क्वीन और भारतीय ओलंपिक संघ (आईओए) की मौजूदा अध्यक्ष पीटी उषा को भारतीय खेलों में उनके असाधारण योगदान और एथलीटों की पीढ़ियों को प्रेरित करने के लिए शुक्रवार को फिक्की लाइफटाइम अचीवमेंट अवॉर्ड से सम्मानित किया गया।

उषा, जिन्हें 'पय्योली एक्सप्रेस' के नाम से भी जाना जाता है, को यह सम्मान फिक्की टर्फ 2025 -15वें ग्लोबल स्पोर्ट्स समिट में दिया गया। उन्होंने कहा भारत सपने देखने वाले युवाओं से भरा है, और यह हमारी ज़िम्मेदारी है कि हम पक्का करें कि उनके सपने मायने रखें। ग्लोबल पार्टनरशिप, खासकर ऑस्ट्रेलिया जैसे देशों के साथ, और हर लेवल पर डिसिप्लिन्ड गवर्नेंस के साथ, हम चैंपियंस की एक नई पीढ़ी बना सकते हैं। इसी तरह एथलीट आगे बढ़ते हैं, और इसी तरह एक देश खेल के जरिए आगे बढ़ता है। यह समिट आज सुबह फेडरेशन हाउस, नई दिल्ली में शुरू हुई, जिसमें सरकार, खेल, इंडस्ट्री और डिप्लोमेसी के लीडर्स एक साथ आए ताकि भारत की खेल में अगले दशक की तरक्की का खाका तैयार किया जा सके।

भारतीय खेल तभी आगे बढ़ता है जब हम सब मिलकर आगे बढ़ते हैं। टैलेंट देश के हर कोने में मौजूद है, लेकिन मौका हर बच्चे तक पहुंचना चाहिए। हमारा फोकस एथलीट पर होना चाहिए : साफ रास्ते, मजबूत सिस्टम, सही चुनाव और साइंस, न्यूट्रिशन और मेंटल स्ट्रेंथ पर आधारित सपोर्ट।

-पीटी उषा

शुरुआती सेशन की शुरुआत फिक्की स्पोर्ट्स कमेटी के चेयरमैन और जीएमआर स्पोर्ट्स के प्रेसिडेंट पी. के. एसवी सागर के वेलकम एड्रेस से हुई, जिन्होंने पूरे स्पोर्टिंग इकोसिस्टम में कोलेबोरेशन की बढ़ती ज़रूरत पर ज़ोर दिया। इस साल की थीम, इंडियन स्पोर्ट्स - ग्लोबल एक्सीलेंस का रास्ता बनाना, ने ग्लोबल एम्बिशन, इनोवेशन और कलेक्टिव एक्शन पर फोकस करने वाले एक दिन की दिशा तय की। पहले सेशन की एक खास बात फिक्की नॉलेज रिपोर्ट स्पोर्टिंग इंडिया राइजिंग' और स्पोर्ट्स कोलैबोरेशन के लिए इंडिया-ऑस्ट्रेलिया स्ट्रैटेजी का रिलीज होना था, जो समिट में ग्लोबल पार्टनरशिप को मजबूत करने पर ज़ोर देने को दिखाता है। ऑस्ट्रेलिया को पार्टनर कंट्री के तौर पर देखते हुए, समिट ने हाई-परफॉर्मेंस सिस्टम, कोचिंग, स्पोर्ट्स साइंस, इनोवेशन और लॉन्ग-टर्म टैलेंट पाथवे में बढ़ते मौकों को और मजबूत किया। भारत सरकार के स्पोर्ट्स डिपार्टमेंट के सेक्रेटरी, हरि रंजन राव ने अपने भाषण में कहा भारत की स्पोर्ट्स प्रोग्रेस एक प्रिंसिपल पर निर्भर करती है: एक एथलीट-फोकस्ड, कोच-लेड इकोसिस्टम जिसे हर स्टेकहोल्डर का सपोर्ट हो। सेंटर, स्टेट्स, इंडस्ट्री और फेडरेशन के बीच कोलैबोरेशन ज़रूरी है, और फिक्की टर्फ जैसे प्लेटफॉर्म उस अलाइनमेंट को आगे बढ़ाने में मदद करते हैं।

2030 राष्ट्रमंडल खेलों की मेजबानी मिलने का यकीन

पीटी उषा को पूरा यकीन है कि भारत को 26 नवंबर को ग्लास्गो में राष्ट्रमंडल खेल आमसभा की बैठक के दौरान 2030 राष्ट्रमंडल खेलों की मेजबानी मिल जाएगी। उन्होंने शुक्रवार को कहा हम कल ग्लास्गो रवाना हो रहे हैं। मुझे पूरा यकीन है कि लोगों की उम्मीदें पूरी होंगी। दो तीन दिन इंतजर कर लें। पिछले महीने राष्ट्रमंडल खेल कार्यकारी बोर्ड ने अहमदाबाद में इन खेलों के आयोजन की सिफारिश की थी। ग्लास्गो में होने वाली बैठक में अंतिम मंजूरी मिलेगी। नाइजीरिया का अबुजा भी मेजबानी की दौड़ में है। राष्ट्रमंडल खेल को 2030 में सौ साल भी पूरे होने जा रहे हैं।